मंत्री री बेटी

बारहठ प्रकाशन
फेफाना (राजस्थान)

मंत्री री बेटी

करणीदान बारहठ

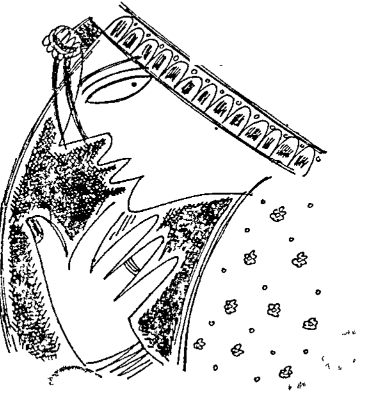

© करणीदान धारहठ

फेफाना (श्री गंगानगर), राजस्थान
/ मूल्य : तीस रुपये, / आवरण : हरिप्रकाश
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

मायड़भाषा राजस्थानी रा
घणा हेतूला
ओ० मेजर श्री रामप्रसाद जी पोदार नैं
घणै मान स्यूं
भेंट

फागण रो म्हीनो, होळी रा दिन, दही सी चादणी धरती पर पसरेडी, मीठो-मीठो शीतळ वायरो डील स्यू रम्मँ तो सुहावँ, मनभावँ, जी सोरो हुवँ, बारँ चूतरी पर छोरया होळी रा गीत गावँ—'चाद चढ्यो गिगनार, किरत्या ढ़ळ रयी जी ढळ रयी'—'ओ कुण खेलँ छवाक, ओ कुण फूल दड़ी'—

फेर छोरया मोडँ ताईं दही धपोळियो रमतो । म्हू म्हारी मा री गोदी मे ही रँवती, स्यात् ही टाबरा रँ नेडँ जावती । म्हारी मा वा टाबरा, छोरया कानी टुकटक देखती रँवती, देखती रँवती, न तो बा ज्यू-त्यू हसती, न बानँ की कँवती । इया लागँ जाणँ मौसम रँ बदलाव रो मा पर असर ही कोनी हुयो । कदे-कदे मा मनँ फॅकती-सी बोलती—'छोरया रम्मँ है, तू ही रम, आखँ दिन, आधी रात म्हारँ ही चीपेडी रवँ है, छोरया म्हारँ नेडँ आवती, मनँ मा स्यू कोसणँ री चेस्टा करती तो म्हू मा रँ घणी चिप ज्या-यती । जद् मा और चिडती—'राड, चमचेड सी चिपी ही रवँ, म्हारली तरिया चिडोकली होंयगी, इनँ भी की आछो कोनी लागँ ।'

मा नँ भी आछो कोनी लागतो । म्हारी मा कँवती—'बेटा, तेरा पापा बेगा ही आवण आळा है कोई समझौतो होसी ही ।'

काई समझौतो होसी, क्या रो समझौतो होसी, म्हानँ काई पतो हो । म्हानँ तो इत्ता ही बेरा हो कै म्हारा पापा जेळ मे है, क्यू जेळ मे है, काई अपराध करयो बा, म्हू टाबर नै काईं ठा । ओ तो ठा हो कै—पापा कोई चोरी कोनी करी, डाको कोनी गेरयो । कींरो सिर कोनी फोड़्यो—फकत राजाजी नाराज हा, बानँ म्हारा पापा माठो, भूडो कहदो । मा

मां कनै जका लोग मिलण आवता वै कैवता—मिनख खद्दरधारी, धोळा-धप्प दूध धोया-सा।

म्हारो घर काईं हो भूख रो डेरो हो। कोई कणरा नाज ल्यावतो तो कईं दिन रोटी वण ज्यावती, नीं अधभूखा मां ज्यावता, अडोसी-पडोसी टरता मा बोलता, साग-सब्जी तो स्यात् ही वणती, कदे-कदे तो मिरच रा बीज पीसन रोटी सार्थं लगान खा लेंवता। म्हूं एक घर स्यूं छाछ माग ल्यावतो, बीस्यूं की नाको लाग ज्यावतो। मा उदास रैवती, इसी लागती जाणै आ रोवैली, पण मा कदे रोई कोनी। म्हूं तो बीरा आमूं कदे कोनी देख्या, पण सूकन मलरो होगो हो। बीरो जुवानी पर बूढापो उतरण लागरयो हो—वेगो-वेगो, चटकै-चटकै। बीरै ओढण सारू एक ओढणियो बच्यो हो, *धोल्यां तो सगळी लीर-लीर होयी ही, बा बारै निकळती तो पेटीकोट पर* ओढणियो नाखन काम काड लेंवती।

म्हूं मा नै पूछती—'मा, पापा कद आसी ?'

—वेगा ही आसी, बेटा, सोच मत कर।

मा, मनै थपथपाती, म्हारै छोटै भइयै नै थपथपाती, भइयो भी सूकण लागग्यो।

एक दिन म्हारी दादी आगी। दादी दो दिन ठैरी। दादी दो दिन रोळा ही करती रयी, बकती रयी – 'मर ज्याणै री उत गई, इसी आछी नौकरी ही, मौज करतो, काम करण नै चपरासी हा, दूजणनै गऊ ही, बरतन नै पीसा हा, हाथ में हकूमत ही। रोवण जोगै नै काईं सूजी, अबै आ टाबरा रो कुण धणी। काईं चावै है बो ? राज बदळै है, राज। बीरो बाप ही राज कोनी बदळ सकै। कठै अडयो है, राजाजी स्यूं अडणो सोरो काम तो कोनी। मोटै मिनख स्यूं तो मोटो मिनख ही अड सकै। आपा गरीब गुजारो करा, आपा कठै मवा। आ टाबरा रो भाग माडो। पण औ टावर ही बीरा सिर खाणा है। म्हारै सार्थं कोनी चालै।'

पण म्हारा मा सिद्धार्थ री लुगाई यसोधरा स्यूं भी घणी वीरागणा ही, सूरा री धरती री जायी जामी ही जकी कदे ही त्याग सारू पाछी कानी मुडी।

दादी तो चली गई दो दिन तुरळ मचा'र, पण बा म्हानै ले कोनी गई,

ले ज्यावणँ री कँवती। दादी कनै भी हो काई, चार बीघा खूड हा जकै स्यू वो मसा गुजारो करती।

म्हारे तो बोही राडो रोवणो। कदेई लूण कोनी तो कदे मिर्चं। कदे दाणा नीवड ज्यावता तो कदे तेल। पण मा कदे-कदे कँवती —'बेटा, तेरा पापा देस सारू जेळ गया है।' फेर पतो नी बीरै डील मे कठैस्यू सरणाटो वापरतो के वा एकदम झासी री राणी सी लागती। मा नै कठैस्यू ही घी, दूध कोनी मिलतो, पण बी 'देस' सबद म ही कठै ही भेळा होयेडा विटामिन हा जका बीनै एकर तो जोधजुवान कर देवता अर फेर बी सारै स्यू आप भी जीवती रँवती अर म्हानै भी पाळती। हसती पतो भी बीरी नकली ही या असली ही, पण बी हसी स्यू ही म्हा दोना नै दिन-भर चित्त-मावती रँवती।

2

पण एक दिन एहडो आयो के मा हुड-हुड हसी, इत्ती हसी के आसै-पासै री भीता हसण लागगी, आखो घर हसी स्यू गूजण लागग्यो, पापा आग्या हा जेळ स्यू छूटन। म्हू भी हसी अर पापा रै चिपटगी कस'र। म्हारा पापा भोत फूटरा हा। गोरो सरीर, गोळ मूडो, ना लांबा ना ओछा। मोटी-मोटी आख्या, तीखो-तीखो नाक। भार्‍यू, भर्‍योडो डील, तकडा-तकडा। पण अबार की माडा होर्‍या हा, काळूटर्‍या हा। जेळ रो तो नाम ही भूडो।

मा पापा नैं रोटी खुवावैं ही, इत्तैं मे एक गाडी आई जकी नैं कार कवैं, काळी स्याह, म्हारै घरै आयन खडी होयगी, लारै एक जीप आई, बीरै माय पुलिस वरदी लगाया। पुलिस नैं देखन म्हू कूकी।

मा खडी होयन बारै देखी, मनैं गोदी मे लेयन बोली—'रोअै क्य बेटा ?'

—मा, पुलिस।

एक दिन पापा नैं लेवण इयां ही पुलिस आई। पण कार साथै कोनी ही।

मा बोली—बेटा, आज पुलिस तेरै पापा नैं पकड़न कोनी आई। तेरा पापा मनीस्टर बणग्या।

—औ काई हुवै, मा ?

मा भी बात बता नी सकी। बण बताई होगी पण म्हू समझ नी सकी, पण जकै दिन म्हे बो घर नैं छोड़न एक मोटै मकान मे आग्या जकै नैं लोग बगलो या कोठी कवै। मोटा-छोटा करत दस कमरा। कोठी री काई बखाण करू, म्हानैं तो एहड़ो मकान आछ्या कांई सपनै मे ही कोनी देख्यो। रुक स्यू राजा बण्या करै है बै म्हे बणग्या। स्यो महाराज पारवती री कांण्या आया करै है—कीडी ही, बीनैं मिनख बणा दियो फेर राज बणा दियो, बा बात म्हारै साथै हुई। फेर तो मिनखां री भीड़ हावण लागगी, एक ही आदमी आछ्या कानी दीखतो, म्हारै घर वानी लोग कैरी-कैरी आछ्या करन टिप ज्यावता रात बिरात कोई कदास दुख सुख री पूछ लेंवतो, म्हारै घर रै पगोथियो चढता नैं लाज आवती, बठै भीड़ रो तातो लागग्यो। दो चार कार घर रै आगै खडी ही रैंवती। फोन जकै री म्हे सक्ल ही कोनी देखी। बो कान रै आगै लाग्यो ही रैंवतो—'हलो, मनीस्टर सा'ब है क्या ?' म्हानैं जवाब देणो पडतो। खद्दरधारी टोपी आळा मिनखा री तो लगस ही लाग्यी रैंवती। नौकरी री भरमार ही, आगै पुलिस रो पैरो। म्हारा पापा कदेई बारै दौरै जावता तो की भीड कम होवती। पण बारै आवता ही पापा नैं बेल ही कोनी मिलती। लोग काई बात करता, क्यू आवता, काई काम हो बारो, पण नया नया, बूढा, जुवान, नूवा नकोर कपड़ा मे च्यारूमेर मडरावती रैंवतो सैंद रै छातै रै आगै मोमाक्खा रो किरणियो सो। मा कै अर मेरै, म्हारै भाइयै रै कपडा रा कई जोड़ा त्यार होग्या। पलगा पर कई डिजाइना री चादरा सोफा स्यट् अर दरया हर कमरै मे लाग्योडा। मनै तो इयां लाग्यो जाणै म्हे नरक स्यू सुरग म आग्या।

म्हू स्कूल जावण लागगी। स्कूल म्हू जावती कार म, आवती भी म्हू कार म। सरू-सरू म सगळी चीज म्हानैं अजीब लागी। सोफास्यट् पर

बैठती तो उछळती, कार मे बैठती तो उछळती, म्हारै ओ खेल सो होग्यो कई दिन तो ओ खेल करती, फेर तो सै गै होगी, बो म्हारी जिन्दगी रो हिस्सो हाग्यो।

स्कूल म सगळा मास्टर लाडगोड करता, भोत सोहणी अर सुथरो स्कूल हो, मास्टर भोत आछा हा, लोग क्वै— मास्टर मारै' पण बा तो म्हानै कदे 'अलफ हू बे' कोनी कई, छोटी तो ही, फेर म्हू बचपनै मे फूटरी ही, फेर मत्री री बेटी, आछा कपडा पहरती, डील ऊ की और सातरी होगी म्हारै पढणै अर खेलणो साथै हावतो, म्हारी घणी भायल्या बणगी, बै भी मोटै घरा री, कोई मत्री री छोरी, कोई की अफसरां री छोरी, बठै छोटै घर रो टाबर तो आवतो ही कोनी, म्हारा नाम भी सोवणा, म्हारा गाल भी सोवणा, म्हारी बोली भी मीठी, म्हानै लैरला दिन कदे कदे याद आ ज्यावता, म्हारी पुराणी भायल्या भी याद आवती— एक ही सुमिना, पण म्हे कैवता—सुमतरडी, एक ही निर्मला, पण म्हे कैवता—नीमली, एक ही इन्दिरा, पण म्हे कैवता—ईंदगी, फेर कई तो सस्स्यू ही ओछा नाम हा—टीडकी, डोडरडी, धापली, वादूडी। म्हारो नाम तो है—स्वराज, पण म्हानै छोर्यां कैवती—सोराजडी, पण बै छोर्या अबार म्हानै याद तो आवै, पण न तो वै म्हारै कनै आवै, न म्हू जाऊ, अबै तो नई भायल्या होगी—निशा म्हारी सगल्या स्यू आछी भायली है, म्हारै बरगी गोरी चिट्टी, कदे कदे म्हे दोनू, म्हारी कोठी मे लॉन मे गुलाब रै फूल रै साथै खडी हो ज्यावा, एक-दूजी नै पूछा—बोल, गुलाब फूटरो के म्हू, म्हे एक दूसरै री बडाई करता, फेर गुलाब नै सूगता, फेर बी फूल नै तोड लेवता, फेर एक फूल और तोडता, कदे काना रै लगावता, बाळा रै लगावता, फेर म्हारी चोटया मे टाग लेवता। एक भायली और ही म्हारी—नीरा, बा की सावळी ही, पण बीरा नाक नक्सो म्हास्यू भी सोवणो ही। बीरो लीलाड मोटो, आख्या मोटी, नाक तीखो, बीरी राग जाणै लता मगेसकर गावै है। म्हे तीनू एक तमासो और करता —म्हे फोन पर नीरा रा गीत सुणता। कदे नीरा आपरो रेडियो लगा लेवती अर म्हानै गीत सुणावती। बा दिना रेडियो भोत बडी बात ही, आजकलै तो रेडियो होग्यो दाळ-रोटी। म्हारा पापा रेडियो रै बडा खिलाफ हा—थै गाणा म्हू डरती-डरती सुणती। फेर

मां मनै बतळाई—'स्वराज, थास त्यार होग्या, आपां नै चालणो है।'

मा मनै कपड़ा पराया, मूंडो, हाथ पग धोया, बाळ बाया अर त्यार कर ली। फेर विजय नै त्यार करयो अर म्हे तीनू कार में बैठग्या।

गाडी सेठ रो छोरो चलावै हो। पन्दरा-बीस मिनट मे म्हानै सेठ रै छोरै आपरी हवेली में जा थाटी। हवेली भोत मोटी ही, दू मजली, म्हारी कोठी बीसी तीन कण ज्यावै। सेठ, सेठाणी थारी मोटी छोटी मडकसी, छोटा मोटा छोरा म्हारी थडीक म खड़या हा—हाथ जोड़यो, सगळा 'नमस्ते जी, नमस्ते जी' करन म्हारो स्वागत करयो। कोई म्हारी आंगळी पकडै तो कोई विजय री। एक कमरै मे म्हारै खाय-पान को बन्दोबस्त हो। म्हू तो म्हारली कोठी पर ही धीजरो ही, पण ओ कमरो देखन म्हारी आंख्यां चका-चौंध होगी, इसी सजावट ही के वीरो वरणन ही नीं कर सकू। म्हारला कमरा तो ईरै आगै ऐन ओछा लागै हा। मेज पर पैली स्यू स्टील रा बरतन सजेड़ा हा, यां पर भांत-भांत रा पकवान। म्हू मन मे करो, आ राम्झी कुरसी री माया है, नी तो ई बिरमानद री बहू नै कुण भूल बुलावै हो, पड़ोसी मनै उधारै आटै खातर मा जोवती तो उधारो आटो कोनी मिलतो।

मा गोफास्यट् पर जयन बैठगी, म्हू भी बैठगी, विजय भी। सामै सेठ अर सेठाणी बैठग्या। मा इत्ता दिनां मे इत्ती अभ्यस्त होगी कै थोरै लुगाई आळो सो सको सरम कोनी रयो।

भांत-भांत रा पकवान सामै पड़या हा। एक-एक नै चाख्यां तो भी पेट भर ज्यावै। फेर जगा-जगा जावणै आवणै खावणै स्यू मन भर्‌योड़ो हो, मा अर म्हे थोड़ो भोत ही खायो, पियो। फेर तो सेठ, सेठाणी म्हारै पापा अर मां री बड़ाई रा बखाण सरू कर दिया तो कान ऊबासी लेवण लागग्या। छोरा अर छोर्‌या इत्ता सोवणा कपड़ा पैर राख्या हा कै म्हारै मन में ईरखो होवै, म्हू मन मे करी, 'लोग देस नै गरीब बतावै, अठै तो धन री दरिया चालै है।'

म्हू एक बात मा नै कैय दी—'मा, इसा बरतन आपां ही ल्यावां।'

साची बात आ ही कै म्हारै तो पीतळ रा फोजा बरतन। मझी वच्चा पाछै कीं चीणी रा बरतन पापा मगाया हा, जका आयै दिन फूट ज्यावता, आयै गयै खातर कीं कासी री थाळ्या ही, स्टील रो तो एक गिलासियो हो

कोनी ।

एक कानां खड्यो सेठ रै छोरै पूछ्यो, 'काई कवै है, बेटी' वण फट बात चिल्ली ।

—इया ही करै है, मा बोली, टावर है ।

—बोल, बेटा, बोल, सेठाणी पूछ्यो ।

फेर तो वै बात रै लैरै हीं पड्ग्या, मा नै बतावणो पड्यो—'आ आपरा स्टील रा बरतन सरावै है ।'

—ओ हो, बस, सेठ बोल्यो ।

—आपणै, माताजी नै स्टील रै बरतना री दुकान माथै ले ज्यायो, जद् छोडन आवै, सेठ फेर कह्यो ।

मा सेठाणी नै भी नूतो दे दियो ।

पाछा आया जद् कार स्टील रै बरतना स्यू भरेडी ही । मा तो बानै एक टक्को दियो कोनी ।

फेर एक दिन सेठ अर सेठाणी भी घरे आया, मा भी वारी आछी आव-भगत करी । मा रा ल्यायेडा स्टील रा बरतन अबार काम आया ।

एक दिन मा सेठ नै पापा स्यू मिलायो पापा सेठ रै जावणै रै बाद मा नै इत्ता ही हँस्या—'अबै काई फिकर है । तू घर चलाणो सीखगी ।' म्हू तो वा दिना ई रो अरथ कोनी समझी ।'

पापा भोत काम कर्‌या करता, पापा नै कदे वेल मिली ही कोनी । दिन उगे को मोडा उठता, उठता ही इसनान कर लेंवता, नास्तो ले लेंवता, फेर तो बस दिन भर मिलणो जुलणो, लोगा रो तातो लाग्यो ही रैंवतो, रोटी खावता ही दफ्तर चल्या ज्यावता, दफ्तर स्यू पाछा आवता ही बा ही लगस, लैंण लाग ज्यावती । रात नै बारा वज्या ताई, बानै तो वेल कोनी मिलती । म्हे तो सो ज्यावता, पापा कद सोवता, म्हानै पतो कोनी ।

दो दिन घरे ठहरता तो च्यार दिन बारै । च्यार दिन घरे ठहरता तो पाच दिन बारै । म्हारै घरे छोटै स्यू छोटो अर मोटै स्यू मोटो आदमी आवतो ।

म्हे सुणता—आज केन्द्र रो मन्त्री आर्‌यो है । वीरी खातरी मे कोई कसर कोनी रैवती । राज रा मन्त्रीगण तो रोज ही आउता रैंवता, एक-दो

कार तो हरदम कोठी में खड़ी ही रैंवती। फोन इत्ता आवता रे फोन स्यूं फोन जुड़यो रैंवतो। एक फोन रै बार दूजो फोन। एक फोन पापा रै कमरै में रैंवतो, दूजो बारै।

गांव रै लोगा रो तो झुंड रो झुंड आवतो, न्यारा न्यारा रूंटा रा, न्यारी-न्यारी पोसाका रा, न्यारी-न्यारी बोलियां रा। पापा राजनीति रा चातर खिलाड़ी हा। जद गांव आळा आवता तो पापा बारै सागै वारै ही घाम रै मैदान में बैठ ज्यावता, नीचै ही घास पर, जमीन पर जठै वै बैठता, वांस्यूं हंस-हंस, मुळक-मुळक, मीठी मीठी वाता करता, बठै ही बारै सागै चाय पी लेवता, बारै सागै बैठन रोटी खावता, बारो काम सारता या नी सारता, पण वै हसता ही आवता, हसता ही जावता म्हारा पापा गिण्या दिना में जनता रा प्यारा नेता होग्या, जनता रो ओ प्यार रो श्रेय मा नैं भी हो, बारै सोणै उठणै रो, ठहरणै रो, खाणै पीणै रो, चाय पीणै रो, कपड़ै लत्तै रो बन्दोबस्त मा हाथा करती, हर बटाऊ नैं जायन पूछणो—'क्यूं भाई, रोटी खाई के नीं।' म्हारै घरे मा किनैई भूखो कोनी सोवण दियो, पाळै कोनी मरण दियो। अगलो आस लेलीया आवै, बीरो काम सरणो चइजो, चेस्टा म्हारी है, भाग तेरो है, आ भावना ही मा राखती अर गिण्या दिना में मा नैं लोग माताजी कैवण लागग्या, छोटा लोगा रो मा ही आसरो होग्यो, वै काम मारू मा नैं ही कैंवता।

दीया तो दिन भी एकसा कोनी रवै, एक दिन ही बीस करवट लेवै, दिन उगे रूप और, दोपारै रो रूप और, सझ्या रो रूप और अर रात नै और। हर पल पलटा खावै। दिना रा रूप भी एकसा कोनी, सरदी, गरमी, विरखा, ओ ही हाल मिनखा रै दिना रो हो, वै भी एकसा कोनी रवै पण राजनीति रा रग तो किरड़ै री काया रै रग-सा है। अठै रक नै राजा बणता देर कोनी लागै तो राजा नै रक बणता भी देर कोनी लागै। एक दिन चाणचकै समाचार आयो के मन्त्रीमंडल अस्तीफो दे दियो, पापा भी मनीस्टर कोनी रया, भीड एकदम साफ, सिपाही सरड़ा सगळा पार, कोठी में कुत्ता बोलै, रात नैं दिना नैं एकदम सुनसान, कठैई मिनख रो भोरो ही कोनी, चपड़ासी पतो नी कठै गया, कार तो काई कठैई कोई साइकल ही कोनी, पापा एकदम गंभीर, एक रात बारै गया, पतो नी कठै, दूजै दिन सुबह पापा

स्यात् कोनी आया, पण पापा को एक पुराणो बेली आयो, आवता ही बोल्यो—'समान सामल्या, मकान लें लियो है किराये पर, थानै बठै ही चालणो है।' म्हे बोरिया बिस्तर बाध लिया। म्हारै वनै काई हो, सगळो कोठी रो ही हो, म्हे एक छोटै सै मकान मे आग्या, म्हारली सागी माच्या, सागी बिस्तर, को बरतन भाडा जरूर बधग्या हा। पापा ओजू सडक पर आग्या, कोई कार नी, पगा ही फिरै। म्हारली सगळी भायल्या छूटगी, निशा, नीरा पतो नी कठै गई। वै नेता, बै अफसर, बा भीड, चपरासी सिपाही देखण नै कोनी मिल्या। पापा दो-तीन दिन सारू फेर बारै गया, फेर चाणचकै कण ही समचार दियो—'पापा ओजू पकडीजेला,' म्हू तो जोर-जोर स्यू रोवण लागगी, बोकरडो पाड दियो।

मा बडी स्याणी, वण ओजू धीर बधायो, पण पापा दिन उगे ही आग्या।

पापा दफ्तर आवता, पण ओ तो पार्टी रो दफ्तर हो, पगा ही जावता, पगा ही आवता, पापा रै सरीर मे कोई फरक कोनी आयो, वारै व्यवहार मे कोई फरक कोनी आयो, विया ही हसणो, बोलणो, सोवणो, उठणो, भीतर कोई पीड ही तो पतो नी, पण कठैई कोई उदासी कोनी दिखी, मा जरूर फीकी पडगी, मूडै पर उदासी आगी, जकी लाली आई ही, वा ओजू काळस मे बदळन लागगी। वै दिन तो याद आवता, पण पापा री मस्ती देखन म्हे लोग भी मस्त रैवण लागग्या।

वक्त जद करवट लेवै, बो छानो कोनी रवै। अब वक्त तो मोत बडो हाथी है, मिनखा वीरै सामै कीडा-मकोडा है। ओ पसवाडो फोरै तो मिनखा मे काई माजनो। अबार वक्त पसवाडो फोरै हो। बो फुकारा मारै हो। बीनै इतिहास बदळणा हो, अण बदळ्यो। बडा-बडा महल माणिया ढैवण लागग्या। वीरो फुकार साथै बडा-बडा राजा महाराजा उडग्या। न तलवार चाली, न बदूक। न तोप रो गोळो सुणीज्यो, न बम फाट्यो, पण फक्त इतिहास पलट्यो। देर भी कोनी लागी, रोज नई बात सुणण म आवती, करतां-करता वक्त जी टिका लियो, पण जितो बदळाव आवणो हो वितो आयग्यो। हजारा बरसा रा जमडा राज कोनी रया, तलवारा रै नोक स्यू लियेडी जागारा कोनी रयी, फक्त इतिहास रैग्यो। अब वक्त दिखा दियो

के राजा रन अर रण राजा क्या बण्या करै है, एक दिन ओजू आग्यो वे म्हे पूठा बीसी कोठी मे चल्या गया।

अबै राज री सीव लांबी चौडी होगी, भांत-भांत री संस्कृतियां रो सिणगार हो अबै राज। भाषा री अळगाव री भीता ढैहगी, सगळा दसा लागै जाणै हाथ घालन मिल्या।

आ संस्कृतियां री खुलो चितराम म्हारी कोठी मे निजर आवण लागग्यो। म्हारी कोठी रै लॉन मे जद बै आप आपरो झूमरो लगान एक ठौड बैठता तो जाणै एक बगीचै मे भांत-भांत रा फूल होवै। कीरै गोळ साफो अर अगरखी तो कीरै छुरंगे आळो साफो अर अचकन तो कीरै पागडी अर धोती, भांत-भांत रा बधेज अर भांत-भांत रा रंग रूप, आ है आपणी धरती जकै रै पीठ पर धरती रो सोवणो अर गरबीलो इतिहास है जकै रा आक सोने रा लिखेडा है।

मा बी चरकचूडी पर ओजू चढगी पापा री वो ही कार्यक्रम, बै ही दोरा, बींया ही मिलणो-जुलणो बै ही धधा।

एक दिन दादी आगी—हाथ मे एक बोरडी री काटेडी लाठी, आम्या रै चसमो, बोदो घाघरियो ओढणो, कुडती, काचळी गे जगा कुडतियो। बूढी लुगाई ही, साज सिणगार रो तो कोई अरथ ही कोनी हो। पण जकी हालात मे आई बा ओपती कोनी ही। पण म्हे सगळा राजी हुया—'दादी आई'' दादी आई। दादी कोठी रै बीच रै आगणै मे माची घालर बैठगी। पापा आया, आपरी मा रै पगा लाग्या। दादी ओळमो दियो— 'बेटा, तू तो कागज दे कोनी, म्हू तेरै कागज नै तरसती रऊ, लोगा ही मनै ओ समचार दियो के तू ओजू मनिस्टर बणग्यो। भला आदमी, कागज तो दे दिया कर।'

पापा दादी रै पगाणै माची रै दावण पर बैठग्या, अर बोल्या—'मा, वेल ही कोनी मिलै, कागज काई द्यू, अबै आ तेरी पोती पढगी इनै ओ काम समळा।'

—तू कुणसी मे पढै है ए, गुराजडी, दादी नाम बिगाड'र बोलती।

—पाचवीं मे, मैं कयो।

—तो भीत पढगी, दादी पाच-सात नै घणी पढेडी मानती, दादी कै

दिना मे आठ स्यू ऊपर कलास कोनी हावती।

—बठै पडगी भोत, मैं क्यो।

—औ तेरै बाप स्यू तीन ही क्लास लैरै रयी।

—पापा आठ पडेडा हा, ज्ञान तो सम्पर्क, अध्ययन स्यू बद्‌यो।

—पापा नै भोत ज्ञान है। दादी···

—क्यारो ज्ञान है, म्हू मसा मास्टर नै क्यन पास करायो हो, फिरतो जोडिया पर कुरा डडो खेलतो।

—पापा हसण लागग्या, मा इत्तै मे चाय ले आई। दादी मा कानी देखन बोली—'टावर तो सगळा ही हुसियार होर्‌या है। बीनणी भी ठीक होरी है। तनखडी, तानखडी ठीक मिल ज्यावती होसी, इत्तो मोटो पद है तो तनखा तो है ही।

पापा की कोनी बोल्या। फोन री घटी बाजगी, पापा खुद ही उठन फोन कानी चाल पडया, फेर फोन नै लेयन आपरै कमरै मे गया।

—दादी सगळा कमरा नै घूम-घूम न देख्या, फेर कोठी रो लॉन देख्यो, फूला रा पौधा देख्या, फेर गाया री गौर कानी चली गई, जकी अबार ही ल्याया हा।

दादी नै एक न्यारो ही कमरो दे दियो, मा कैय दियो—'थानै अठै ही रैवणो है, या सारू ओ कमरो है, टेम सिर रोटी चाय आपी मिल ज्यासी, बैठ्या मोज करो, माळा फेरो।'

दादी नै एकळी नै कया आवडै। दादी मूडै री भार्ष क्या काडै ही।

पापा तो मा रै सुभाव नै जाणै ही हा, बै म्हानै तो कोनी सभाळता, पण दादी नै जरूर सभळाता, बै जाणता, मा बूढी लुगाई है, इनै जे न सभाळाग्या तो आ गाव जायन विगोवैगी। दादी दो दिन सगळै घर नै सभाळ लियो, सगळी बात रो बीनै पता लागग्यो।

म्हे सगळा रात नै रोटी खायन आडा होवळ आळा हा, सगळा नै वेल मिलगी ही, काम कोनी हो। गरमी रा दिन हा, सगळा डागळै मे जायन एक दरी पर लेटग्या। दादी भी बठै ही, बा गाव री बाता सुणावण लागगी, इत्तै मे बठै ही पापा आग्या।

दादी पापा नै आवता ही बोली—'बीरमा, थनै तो बेटा टेम ही कोनी

मिलै, ओ क्यारो नौकरो ।'

—मा ओ काम ही इसो ही है ।

—काम तो तेरो चोखो, पण इण काम री कितीक तनखा मिलज्या है ।

पापा आपरी तनखा बताई ।

—की ऊपर-सूपर तो आ ज्यावै या सूकी पाकी तनखा ही है ।

—सूकी पाकी तनखा ही है, बारै जावा तो राज भाडो-भट्टो दे देवै, बीरै माय की ऊवर ज्यावै ।

—चलो, बो तो ठीक है, दादी कयो, पण म्हे तो आ दिनां में देख्यो तेरो खरचो भोत अबडो है दिनगै स्यू लेयन रात ताई लोग आवै, अठै ही मिटै अर अठै ही चाय पीवै, तू तो रोज बरात री बरात जिमावै, ओ कठै ऊं आसी ।

—आ रै ही भाग रो है, मा, आपा कठै ऊ ल्याय हा । पापा जाणै हा मा नै आया गया सुहावै कोनी ।

—तो तू आ बता, तेरली टाबरी काई खावैली, तनै काल नै कांई कोनी चाहीजै, सुराजडी चार साल मैं हुयी ब्यावण आळी, फेर आज ही के तू बूढो होग्यो, फेर मै एक बात इण नौकरी में और देखी, ईंरो तो एक पल रो ही भरोसो कोनी, लैरै आपणै कनै खूड तो बीघा दस है ।

दादी धोळा धूप में तो कोनी करया हा । दादी थोडी ऊमर में विधवा होगी ही । पापा नै पाळ्यो, मोटो करयो, ब्यायो थ्यायो, फेर नौकरी भी दादी ही लगायो, जगा-जगा लोगा कनै हाथ जोडती फिरी, दादी ओजू ताई बेफिकर कोनी हुई ही, चाहे दादी पापा रै व्यक्तित्व रै सामैं बिना तेल बाती रो दीयो हो, पण माईत रो मन औलाद मे होवै है, बीरै दुख-सुख नै जद ताई बीरा साम रवै जद ताई बीरो फिकर मिटै कोनी ।

पापा आप री मा रो ओजू जी थमायो—मा, तू क्यू फिकर करया करै है, जद औलाद स्याणी हो ज्यावै तो माईता नैं फिकर छोड देवणो चाहिजै ।

दादी फेर बीं भाव मे ओजू बोली—औलाद स्याणी हो ज्यावै तो फिकर छोडणो चाहिजै, पण तेरी स्याणप में तो भोरो ही कोनी, बावळा, म्हू दो दिना हू देखण लागरी हू, दिनगै ऊ लेयन दिन छिपे ताई तेरै चलै रै

चैन कोनी, म्हू बीनणी नैं क्यो, बीनणी, ओ माई, ओ तो होटल बणग्यो, विना पीसा रो, मरज्याणा अरण-वरण रा कठै ऊ आवै है, तेरै कोई मीला चालै है, ऊपर स्यू कोई आभो बरसै है, कदे चाय, कदे रोटी बिस्कुट, भूजिया, तू तो रोज गाम जिमावै, तरो घर क्या चालसी, बीनणी पण बीनणी चुप, तू ही चुप। तनखा तो तेरी तीन दिन कोनी चालै, तरो कोई गोज म घाल ज्यावै, तो केरो कोनी, आवै तो अठै मोटा-मोटा है।

—तू क्यू फिकर करै, मा, पापा फेर हसन बोल्या, आपा भी आरै ही भाग रो खावा हा।

—तू बात बतावै कोनी, दादी बोली, म्हू सौ क्यू देख लियो, तेरो अठै की कोनी, आ कोठी राज री, माचाढेला राज रा, दरी दरकली राज री, अै कांई बतावै, सफासट राज रा, धोळा धोळा बरतनिया तो तेरा है, हैं रैं, अै गाया उधारी आई के आरा पीसा दिया।

पापा नैं, म्हानै सगळा नै दादी री वाता पर हसी आवै, दादी स्यात् समझगी के ई माया नगरी रो कोई पतो नी, फेर वा बोली—भई, सगळा हसो हो, तो म्हू बोलू ही कोनी, बात तू म्हानै बतावै कोनी, बात कठैई तेरी गोजी माय है, तू जाणै है, मा रो काई, आ बात छिडकती बार कोनी लगावै ओ रमो राज रो काम, नौकरी रो काम, म्हू काई बावळी हू। बात आगै आज्यावै तो राज फास लेवै, खैर ई बात नैं तो छोड, पण लोगा नैं मत खुवाया कर, तू पीसो भेळो कर, आपा गाव मे चोखो मकान बणावा, जमीन लेल्या, लोग आ तो कवै—खसम तो जुवानी मे छोडन चल्यो गयो हो, पण राड री जात कठै ताई आपरी औलाद नैं लेगी।

दादी गाव री सीव स्यू बारै कोनी निकळ सकै ही, फेर वा गाव री बाता पर उतर आयी, आजकलै घड़सियै रो छोरो घणी दारू पीवण लागग्यो, भूरियै आपरै छोरै रो ब्याह कर दियो, रिपिया तो पाच हजार लगा दिया, पण करजदार होग्यो। लूमियै रा टीगर ओजू कुवारा फिरै है। मलियै री बात पर दादी जोर दियो—'बीरमा, तू मल्लू नैं जाणै है न, वो सुथार, आपणै पिछवाडै घर है, बीरी छोरी कुवारी है, ब्यावण सावै है। मलियै मरै कनैं स्यू हजार रिपिया उधार माग्या, आछो ब्याज देसी, जमीन अडाणै मेलै है. मनैं वण कयो के बीरमैं कनै स्यू ल्यादे, ओ तो ` नोव ^ ^ .

पण तेरै करै ऊ काई मागू, मनै तो तेरली पार पडनी कोनी दीसै ।

पापा आपरी मा री वाता नै सगळी समझै । पापा बोल्या—तनै हजार रिपिया चाहिजै ।

—हा, हजार रिपिया, दादी खुस होयन बोली ।

—तो ले ज्याई, पापा क्यो ।

—तेरी तनखा कद आसी ?

—तनै मेरी तनखा रो काई फिकर, तू अभी तो ठैर, तू जावै जद ले ज्याई ।

—तो ठीक ।

दादी बाग-बाग होगी, स्यात् दादी इण काम सारू आई ही । दादी आज आपरै मूडै री काई काळजै री भाप काडली ।

दो दिना पाछै दिन उगता ही दादी घर स्यू बारै चली गई । म्हे लोग क्यू गौर करै हा, दादी कोई टाबर तो ही कोनी, चाय तो पी ली ही, पण रोटी आळै सभाळो तो दादी कोनी, फेर आसै पासै ढूढी तो दादी कोनी, चाय आळै बखत दादी कोनी आई, आसै-पासै सडका पर गाडी भेजी, दादी कोनी, अरे दादी गई कठै ? दादी री पोटळी भी पडी, बा तो आपरी लाठी रै ठेगै कठई निकळगी, सहर इत्तो मोटो लूटो कठै ढूढवावां, फिकर पडग्यो, पण दिन छिपता ही दादी आगी म्हे सगळा फेर तो दादी नै घेरली—दादी, तू कठै चली गई । म्हे तो ढूढ-ढढन धाप लिया ।

—अरै बेटा दादी आपरी लाठी गेरती माची पर बैठन बोली, 'म्हूं कठै जावै ही, मनै राड नै कठै ढोही है, म्हू तो बैठी-बैठी ऊकगी तो सोची, चालो, धरा मे फिर आवा । पण अठै घर कठै, कोस-कोस मे एक-एक घर । म्हू पडौस रै घर मे गई, एक और कोठी है ।

—बा तो चीफ इजीनियर री कोठी है, दादी ओ तो मदरासी है ।

—बळो, मनै काई बेरो, म्हू तो सोच्यो ज्यू आपणै सारै तिखमै रो घर है, ज्यू होमी, म्हू गई तो पैली तो बण चपरासी मायनै कोनी बडण दी, बोल्यो—बारै जाओ थारै, पण बो हो देसी आदमी, म्हू क्यो—'रै म्हू तो ओ थारो मनीस्टर है न, बीरमो, बींरी मा हू ।' जद बो चपडासी मनै कोठी मे लेग्यो, बठै टाबर और तरिया रा, लुगाया और तरा री, पैली तो बै भी

कोनी समझ्या, मनैं दुतकारी, पण बिचारैं चपडासी सारो लगायो, म्हानैं चाय प्याई, बिस्कुट खुवाया, घणी खातरी करी, एक कुरसी पर बैठा दी, म्हू बोलू, वै कानी समझैं, वै बोलै, म्हू कोनी समझू, रासो होग्यो, बा कयो—थानैं घरे छोड आवा, म्हू कोनी आई, म्हू तो फेर बारैं दूजी कोठी में चली गई।

म्हू कयो— दादी, बा तो राज्यपाल री कोठी है।

— म्हू की राजपाल नैं जाणू कोनी, राजपाल नाम है काईं बीरो।

म्हानैं भोत हसी आई, फेर म्हे दादी नैं समझाई।

दादी पेर बोली—ओ बो आपणो अफसर है, हा भाई, बठै एक सिपाही खड्यो, पैंलो म्हू समझी, ओ थाणो है, मोटै सहर रो मोटो ही थाणो, पण बठै की भला मिनख फिरता दीसैं हा, तो म्हू सिपाही रैं सारैं कर निकळगी। पण बठै तो काग बोलैं, कुत्ता भूसैं, सूनो सो अडगो हो, म्हू पूठी आगी। फेर आगै एक कोठी ओर है बठै भी सिपाही।

—ओ, म्हू कयो, बैं आपणा मत्री ही है।

—हा बो कोई मत्री सतरी है, बा लुगाई भोत आछी है, देसी लुगाई, आपणी बोली, थोडो फरक तो है, बताई तो म्हारी बडी खातरी करी, हलवो बणायो देसी घी रो, सब्जी, रायतो करयो, बीरैं राबडी ही रैं, रोटी बाजरी री बणवाई, म्हू तो चूलैं रैं सारैं चली गई। म्हू धापन धू होगी। फिर बठै ही सोगी। फेर चाय वेळै चाय मिलगी। बारैं एक छोटी आछी है, म्हानैं बडी दाय आई। म्हू पूछयो— बेचो हो काईं, पण बैं क्यू बेचै।'

दिन छिपे बा मनैं गाडी में अठै भिजवादी, म्हू आगी।

दादी दूजैं दिन कठैई कोनी गई, पण इण बा माहौल स्यू आखती होगी ही। बीनैं तीजैं दिन कैवणो पडयो—'बीरमा, मनैं अठै कोनी आवडै। म्हासू कुण बतळावै, कीनैं वेल है। बठै ही घणकरा बेला पडया है, घडसियै री मा, फूसियै री दादी कुरडियै री भुवा, मनैं टैम ही कोनी मिलै, सगळा अडीकता रवै, बडा कोड करै, चाय, छा बिना रैवण ही कोनी दे, चाय छा री तो अठै ही कमी कोनी, मौज भी घणी है, पाणी, बिजली, पखा, आछो मकान, आछी सेवा, पण भाई, मेरो तो जी कोनी लागै। दिन उगज्या तो छिपैं कोनी, छिपज्या तो उगै कोनी।

दादी नैं म्हे एक दिन और ठहराली, आपणै दादी वागै लान पर बैंठी ही, म्हू भी कनै चली गई। दादी मनैं बोली, 'मुराज, एक बात पूछू तनै, ओ आदमी कुण है ?' वण दूब पर बैठ्यै आदमी कानी आगळी करन कयो। म्हू कयो— दादी मनैं तो बेरो कोनी।

—ओ दस दिना ऊ अठै ही मरै है, दोनू वक्त रोट पाडै है।

दादी नैं ध्यावस कठै ही, वण जोर स्यू हेलो मारयो।

आदमी कनै आयन हाथ जोडया अर सामी बैठग्यो।

—कुण है रै तू, क्यू आयो है—दादी पूछ्यो।

वण आदमी आपरो नाम ठाम बता दियो। और कह्यो—म्हारै छोरै सारू नौकरी चाऊ। दादी बोली—'मरज्याणा, अठै नौकरी रो खेण गहरी है भाई, दिन दस होया तनै बैठया न, तेरो कोई ठौड़ ठिकाणो है क नी, बेटा, अठै आवैगा रोट पाडण नै, देखी, आज गाडी चढ ज्याई, या तेरै ओर एडै लागी, जे रसोई कानी चल्यो गयो तो मेरै बरगो बुरो मत जाणी, ईं खल्लै रो काई नाम है, जट पाड लेस्यू।

दादी बीरो जवान माजनो ले लियो, दिन छिपे बडो अटकळ स्यू बीन रोटी खुवाई, दादी नैं पतो कोनी लाग्यो, दादी नैं खरचो कोनी सुहावतो, दादी रो जावणो ही ठीक हो, दादी नैं दूजै दिन बीदाई दे दी, बा जावती बखत हजार रिपिया कोनी भूली।

5

चुनाव रा सिलसिलो सरू, नेतावा रा भाषण तेज अर तीखा होग्या, जन-सम्पर्क वधण लागग्यो, देस रो पैलो चुनाव, सविधान रै मुजब हर बालिग रो वोट, जनता मे नयो उत्साह, नयो जोश, आपणी सरकार, आपणो देस, आपणो राज। सत्ताधारी दल रै साथै विरोधी दल, देस रा कई मोटा नेता विरोधीदल बणा लिया, अ दल सत्ताधारी दल री जरूर

वाट करै।

पापा रो काम भी वधग्यो, अे सरकार रै काम रै सागै पार्टी रो काम भी करै, दोरावा री तादाद वधगी, घरे कम रवै, बारै घणा। कदेकदास म्हू भी पापा रै सागै जावती। पापा मनै कदे कदे राजनीति री वात वतावता, वा कदे समझ म आवती, कदे नी आवती, पापा रो चिन्तन ऊचो, बिचार ऊचा, सोच समझ ऊचो, बारी विचारधारा एक दर्शन जको ऊडो अर गहरो।

कोठी मे पार्टी रै कार्यकर्तावा री भीड वधण लागगी, नया नया लोग, नया नया चेहरा, बूढा, जुवान, आदमी, लुगाई सगळा ही।

एक दिन पापा रै कार्यकर्त्तावा मे बोलै कार्यकर्त्तावां री गुपताऊ मीटींग पापा चुनाव-समिति रा सदस्य, पापा नै आपरै छेत्र रै उमीदवारा रो चयन करणै रो पूरो अधिकार। राज री चुनाव-समिति रा लूठा सदस्या म स्यू म्हारा पापा एक लूठा सदस्य। कार्यकर्त्ता पापा री घणी चापलूसी मे लाग्येडा। बीया तो सगळा सदस्या ही आपणी वात कयी, पण पापा री वात घणी व्यावहारिक। पापा कयो—पार्टी रो सगठन भोत जरूरी, चुनाव मारू हर कार्यकर्त्ता रो पूरो समर्पण, जो ध्यान स्यू आपरै उम्मीदवार नै जीतावणा री पूरी चेस्टा। टिकट तो एक ही आदमी नै मिलसी पण दूजा इसै मनोयोग स्यू जुडै कै उम्मीदवार री हार वीरी हार मान'र चालै। टिकटा देवण म जको बात रैवसी—बो कार्यकर्त्ता रो वी जात रो होवै जकी जात रो वठै वहुमत, उम्मीदवार रै धन री जरूरत, पार्टी की पीसा देसी, पार्टी कनै पीसा आसी कठैऊ, चदै स्यू, इसा आदमी भी सागै मिलाणा पडसी जका पीसा आळा है, नी तो पार्टी पीसा रै टोटै म कमजोर पडसी, चुनाव पीसा रो खेल है, उम्मीदवार एहडो होवणो चाहिजै जकै री इमेज वी छेत्र मे आछै आदमी रै रूप मे होवै ईं रै सागै वो पार्टी रो कार्यकर्त्ता भी होवै जे जेळ गयोडो होवै तो बीरी होड कोनी।

पापा नै भाषण रै पाछै शिवमगल जी जका पार्टी रा मोटा कार्यकर्त्ता हा, कई वार जेळ मे भी गयेडा हा पापा रै भाषण रो प्रतिरोध करयो। वा कयो—'बिरमानंदजी री वातां और तो आछी पण जकी बात जात रै बावत कयी है, म्हानै भोत अखरी है, म्हारै सागै दूजा लोगा नै भी आ बात

अधरमी, आपणो ओ चुनाव देस रो पैलो चुनाव है अर आपां जे उम्मीद-वारा रै चुनाव सारू जातवाद रो मापदड लेस्यां तो नेचय ही जातवाद नै बढावो मिलसी। आपां अगरेजा रो विरोध करयो, बां जाणबूझन हिंदू मुसलमान रो सवाल पैदा करयो, अर देस रा दो टुकडा हुया, आपणा नेतावा पणो ही ताण मारयो, पण देस रा दो टुकडा हुया। जे आपां ही इण बात नै बढावो देस्या तो दस रा और टुकडा होज्यासी, जातियां म बैर बध ज्यासी, गाव गाव अर गळी गळी मे फोजदारया हो ज्यासी, आ नई परम्परा देस सारू घणी घातक होसी।'

शिवमगलजी री इण बात रो असर तो होयो, पण अबार राजनीति रो मोह त्याग बानी कोनी हो, स्वारथ बानी हा, शिवमगलजी स्वारथ स्यू ऊपर उठेडा हा, इण बात तो असर स्वारथ रै चस्मै स्यू देखीजै हीं।

पापा राजनीति रा स्याणा मिनख हा, कोरा सिद्धान्ता अर आदर्शां स्यू माडेडा कोनी हा, बा आवती बक्त शिवमगलजी नै आपरी कार मे साथै बिठा लिया। पण शिवमगलजी कोठी स्यू निकळ्या जद भी रिगाणा हा, पापा बानै आपरी कार मे ही पाछा भिजवाया, पण दूजै दिन अखबारा मे खबर छपगी कै शिवमगलजी पार्टी छोडदी अर विरोधिया रै साथै गठबधन कर लियो।

चुनावा रो रग चढग्यो। ब्यारू कूटा भाषणा रो जोर, गळी गळी मे पोस्टर लागग्या, जीपा पर जीपां बगण लागगी। पार्टया रा झडा सिखर चढग्या। पण म्हारा पापा तो सकट लियार त्याया हा, एक सकट और आयो। पार्टी रा कई नेता म्हारै पापा स्यू नाराज होग्या, नाराज तो होवणा ही हा, कया नै टिकट कोनी मिली, कया नै टिकट तो मिली पण जको ठौड बै चावा हा—वठै कोनी मिली, कई बारै साथै हो लिया, कै सगळा भेळा हाया दिल्ली गया, दिल्ली हाई कमाड स्यू मिल्या, पण बारी एकर तो पार पडी कोनी, पण लैर पडेडा बुरा होवै, बा लैरयो छोडयो कोनी, प्रधानमत्री राज री राजधानी रै दौरै पर आया, अठै वै ओजू मिल्या—बा पापा पर लाछण लगाया—ओ जातिवादी आदमी है, मुसलमाना रो विरोधी है, मुसलमाना नै हिन्दू बणवावै है, थारै साथै झूठी फोटू छपवा मेली है, ई रा अण पोस्टर निकाळ राख्या है, एहडा झूठा साचा मनघडन्त लाछण एक

साथै लेवन गया। प्रधानमंत्री पापा नैं बुलायो, साफ साफ कह दियो---आप पार्टी रै निसान माथै चुनाव नी लड सकोला।

पण नाम पाछा लेवण री तिथ निकळ चुकी, पापा रो नाम तो रह्यो, निसान भी रह्यो, पण पापा आप रै छेत्र मे कोनी गया। पापा रै नाम रो इत्तो प्रचार हो, पापा इत्ता लोकप्रिय हा, पापा री प्रतिष्ठा इत्ती बढी चढी ही के आरा पुजारी घर घर हा।

इन्नै राज रा राजामहा राजा चुनाव मे कूदोडा हा, कई राजा महाराजा पापा री पार्टी रै साथै हा, पण घणकरा विरोधी हा। कई सेठ साहूकार सत्ताधारी पार्टी रै साथै हा तो कई विरोधी हा। पापा रा होठ सूकडो रैवता। मूडो काळो टैंरो-सो रैवतो। घरे तो कदेई भूल्या भटक्या रात बिरात ही आवता तो घटा आध घटा ही रैवता।

चुनाव काई हो, पीसा रो खेल हो। पतो नी कठैऊ ओ पीसो आवतो, गरीब गुरबै वनै तो देवण हो ही काई, इसो लागै हो जाणै सेठ-साहूकारा, राजा-महाराजावा री तिजूरया चौबीस घटा खुली रैवती। साची बात आ है के ओ गरीब ही पीसै री रट लगाया राखै, पीसै आळै रै पीसो याद ही कोनी, ओ तो पीसै रो खेल करै, बी खेल नै ही बो ढूढतो रवै। जदै करोड री माया बेली पडी रवै, बो पीसै रो फिकर क्यू करै। पीसै रो फिकर तो बो करै जठै आथणनै दाणा री बिध कोनी।

एक दिन पापा आपरै खास आदमिया री मीटीग ओजू बुलाई, बानै एक ही बात कयी---'आपा नै हर हालत स्यू बोट बटोरणा है, जाति रै नाम पर, धरम रै नाम पर, गाधी रै नाम पर, नेहरू रै नाम पर, जठै पीसो चालै पीसो फेंको, जठै दारू चालै, दारू री बोतल फेंको। देस रै लोगा में धरम री, मिन्दर री, मस्जिद री घणी कमजोरचा है, कीनै खुदा री तो कीनै भगवान् री, कीनै गुरु ग्रन्थसाहब री सौगन्धा खुवावो, कोरै सिद्धान्त पर चाल्या तो पिट ज्यावोला। विरोधी आपरा हर हथकडा काम मे लैरचा है, चूक्या तो मारया जावोला, राज हाथ स्यू निकळ जासी। राजा महाराजा रो भोत असर है, राज हाथ स्यू मत जावण द्यो।'

चुनाव आपरै पूरे रग मे आग्यो। नेतावा रा पग धरती पर कोनी टिकै हा, जीबा टीबा रा टीबा चीर नाख्या, सडका नै न दिन मैं न रात मैं--

चैन हो। नेता लोग अबै हवा मे घूमण लागग्या आभो गरणा वैं हो, धरती धूजै ही।

आखर एक दिन चैन आयो। वोट पडण लागग्या। पापा घरे आया सोग्या। पूरै दिन नीद मे पडया रहया। म्हारो सगळा रो जी आवळ बावळ होरयो ही। पतो नी काई होसी, पार्टी जीतै जद पार्टी रो राज होवै, पापा जीतै तो पापा राज म आवै, जद ओजू आ कोठी, कार, आ आराम आ इज्जत रवै, बणी रवै। पापा री तो हालत ही अजीव, पापा तो राज री पार्टी मे ही कोनी, पापा जीत भी जावै ता पतो नी, राज आवै क नी। जित्ता लोग जित्ती बाता। कई लोग ता कवै—बिरमानद रो पत्ता कटग्यो, म्हारो जी भाल ही खराब होवै। कई कवै—जी मत हिलावो, प्रधानमत्री बावळा कोनी, वानै लोगा बहका दिया, थारै पापा रै काम नै देखन भोत खुस है, थारा पापा कठैइ कोनी जावै। म्हे रोज अखबार दखा, काई की बकै कोई की। इया लागरयो हो जाणै म्हे फासी रै तख्तै पर चढरया हा, पता नी कद बटण दब ज्यावै।

दूजै दिन गिणती सरू मसा छ बजाया फेर रेडियै पर नतीजा सरू हुया, पापा जकै दिन कठैइ कोनी गया। पापा अर म्हे सगळा फोन कनै बैठ्या रहया। रात नै दस बजता ही, एक समचार फोन स्यू आयो— मुख्यमत्री हारग्या फेर समचार आयो बी हलकै मे पार्टी रो ही सफायो होग्यो, सगळै महाराजा रा आदमी आग्या, अबै तो म्हा सगळा रो जी हालग्यो, अबै ठौड कठै, पापा भी निरास हाग्या, मुख्यमत्री पापा रा खास आदमी हा, बारै हारणै स्यू पापा दुखी भोत होग्या। म्हानै नीद कठै ही।

फेर रात नै दो बजे पापा रै जीत री खबर आयी, म्हे सगळा ताळी बजाई, पापा री पार्टी रा घणकरा आदमी जीतग्या, फेर तो मा स्पेशल चाय बणान ल्यायी। दिन उगे ताई स्थिति साफ होगी। पार्टी मसा सरकार बणा सकैली। रात नै ही लोग बधाई देवण पापा कनै आयग्या। दिन उगे तो भारी भीड होगी। पापा रा गळो माळावा स्यू भरीजग्यो। करीब आठ बजे दिल्ली स्यू फोन आग्यो—पापा रै प्रति प्रधानमत्री रो भ्रम दूर होग्यो, अबै वै पार्टी सारू काम करैला। दूजै दिन तो अखबारा नै पापा रो नाम मोटै आखरा म छप्यो। साची बात आ हुई के पापा रा निर्जी आदमी जिता

जीत्या बै की नेता रा कोनी जीत्या। अबै राज रै नेता रो चुनाव आंरी मुट्ठी मे होग्यो, औ चावै जकै नै राज देवै, इया करन राज म पापा री स्थिति सगळा नेतावा स्यू मजबूत होगी, अबै लोग आरी हाजरी घणी भरै, राज मे अई पापा री चौधर रैसी, आ बात इण चुनाव स्यू साफ साफ होगी।

6

मत्रीमडळ बण्यो अर पापा जको चायो बै मुख्य-मत्री बण्या—गौड साहब। इया लागै हा जाणै गौड सा'ब आपरी कठपुतळी हुवै, दिन मे दो बार हाजरी भरै गौड सा'ब अर पावली चलै पापा री, पापा नै ऊचै हू ऊचो विभाग मिल्यो—पुलिस रा मत्री तो राज रै आई जी पी स्यू लेयर थाणेदार तक पापा री हाजरी भरै, कीं एम पी नै कठै लगाणो, की थाणेदार न कठै लगाणो, ओ पापा रै हाथ मे।

एक दिन स्वामी जी आग्या, स्वामीजी घणै दिना स्यू आया अर आवता ही बोळ्या—कठै है बो विरमानद ?

पापा दौरै पर गयेडा, म्हे लोगा स्वामी जी नै घरे ठैरा लियो। पापा दो दिना म आया जद ताई स्वामीजी पापा री काट ही काट करी, म्हे समझग्या, स्वामीजी पापा पर नाराज है।

पापा तो आवणा ही हा, पापा आया जद म्हे बतायो, स्वामी आयेडा है।

पापा स्वामीजी सागै ही खाणो खायो। स्वामीजी तो पापा सागै लडण लागग्या। बोल्या—तू आ बता, थानै राज करणो है या देस बणाणो है।

पापा बोल्या—देस बणाणै सारु ही तो म्हे राज करा हा।

—आ देम बणाणै रो तरीको है, स्वामीजी ओळमो सो दियो।

—गलती तो बताओ, स्वामीजी, पापा क्यो।

—तू आ बता, देस मे राज सही लोगा री होवैलो जद देस बणैलो या गलत आदमिया स्यू।

—सही आदमिया स्यू, पापा जवाब दियो।

दोनू सागै सागै भोजन अरोगा हा।

—तू सिवमगल नैं फैंक्यो अर बीं रामदास नैं सागै लियो जको एक नम्बर रो बदमाश, गुडो, तस्करी अर काई काई बताऊ, बीनैं तू एम एल ए री टिक्ट दी, बीनैं जितायो अर बैं अबार इलाकै मे गुडागरदी फैला राखी है, कीनैं मारै तो मारै अर बक्सैं तो बक्सैं, फेर तू होग्यो होम-मत्री, फेर बो कीरै मारै। जका बीनैं वोट नी दिया, भला आदमी है, बानैं मुकदमा मे फंसा दिया अर जेळ मे दिराव दिया। इसो माडो राज तो अगरेजा अर राजावा रो कोनी हो, आ बीमारी तू कठैऊ पैदा करली। सिवमगल जको भलो आदमी, ऊमर मे पार्टी सारू काम करघो, अपणो सारो घर लगा दियो, लगा के दियो होम दियो, बीनैं तू पार्टी स्यू काडघो, बण तनैं मान्यो कोनी, आ ही तो बात ही, बीनैं हरायो, अबै बो दर दर भीख मागण जोगो होरघो है। बीरो घर बिकग्यो, बीरी जमीन बिकगी, अर बो हारग्यो, अबै बो तेरो रामदास बीरै अर बीरै आदमिया रै लैरै पडरघो है। ओ राज है जकै सारू आपा कुरबानी दी।'

पण पापा इण खेल रा अनूठा खिलाडी हा बै अगलै रै मनोविज्ञान नैं भली भात समझता अर बीनैं छाटा देवणा भी बैं जाणता। दोना खाणो खा लियो। दोना चुळू करली ही, हाथ साफ कर लिया। पापा कैवणै स्यू पैली पूछ लियो—स्वामी जी, और कोई-ओळमो, थे पूरी हवडास काड लेइयो, फेर बात करूला।

—म्हू तो पूरी बात कैयदी, तू कह, स्वामी जी क्यो, पापा बोल्या—स्वामीजी, ओ राज रो काम है, आप जाणो हो, म्हानैं अबार ईं चुनाव मे कित्ती टक्कर लेवणी पडी, राजा महाराजा म्हारै सामैं आया, बा लोगा कनै कोई कमी कोनी ही, बारो राज हो, बा कनै पूरा आदमी हा, पूरो खजानो, इत्तो खजानो कई पीढ्या ताई खुला बरतै तो नीवडै कोनी। म्हे लोग सगळा ही गरीब घरा रा हा, जे आज आ जगा छूट ज्यावै तो आपणनैं ही रोटी रो सासो पड ज्यावै, चूलो कोनी सिलगै। म्हे गरीबा टक्कर ली बा लोगा

स्यू, फक्त गरीबा सारू राज ल्यावण नैं, गरीबा नैं ऊंचा उठावण नैं, आप जाणो हो, म्हे लोग आ गरीबा खातर कितरो काम करचो हा—जगा-जगा स्कूल, अस्पताल, सडक, बिजली, देस चमन बण ज्यासी, म्हारै सामैं स्कीम है मोटी मोटी नहरा री, नहरा आवता ही आपणो इलाको गुलजार हो ज्यासी, जठै आज पीवण नैं पाणी कोनी, लोग पाच पाच कोस स्यू मीठो पाणी ल्यावै है। बठै चप्पै चप्पै मे पाणी फैल ज्यासी, काळ पडया तो लोगा छोडा खाया, आज भी खावै है, बठै अगूरां री बेला ऊगसी, लोग खोखा री जगा अगूर खासी। राजा महाराजा तो राज कर्यो ही, काई कर्यो, गोला पाळचा, दारू पी, राडा नचाई, बो ही काम ओजू करता, कित्तो टकराव हो, बिना पीसा भो होनै कया, चुनाव में कित्तो खरचो लाग्यो। गरीबा कनै तो फक्त बोट हा, पैट्रोल पाणी री तरिया फूकी ज्यो, जे गज रो खजानो छेडां तो राज जेळ म घर देवैं, ऊमर मे कोनी निकळ सकां, की सेठा रो सारो लेवणो पडचो, की पीसा आळा नैं साथै लिया, बिना मतलब वै क्यू आवै बानै की मतलब दियो, की और मतलब री बात करणी पडी जद भो राज ओजू हाथ आयो, जद की काम करण जोगा होया हा, आप तो एक सिवमगल री बात करो हो, राज न रैवतो तो कित्ता सिवमगला रै सिर म पडती, राजा म्हा सगळा सिवमगला रो पीच'न पाणी काढ नाखतो, जे बारो राज आवतो। आप कनै बैठन कित्तो सुणावो हो। सुणा कोनी सकता थे मिल ही कोनी सकता, रयी बात रामदास री, म्हू बीनै बुलान समझा देस्यू, फीकर मत करो, आप तो आपणी सस्था रो ध्यान राखो, ईनै बेगो ही कॉलेज बणावणै री सोचा हा, आपणै गावा रा टाबर भणै, लायक बणै, ऊंचै ओहदा पर जावै।'

स्वामी जी पिघळ'र पाणी होग्या भोळा आदमी हा, भावुक हा, कण ही बहकायो, बोदा ही लगग्या। पापा तो स्वामीजी रै ओजू पगा लाग्या, फेर चल्या गया।

दिन छिपणै स्यू पैली ही पापा रामदास नैं बुला लियो। पापा बीनै एकलै नैं समझायो—बावलिया, तू काई करै है? स्वामीजी नैं नाराज कर राख्या है, बो सिवमगल स्वामीजी स्यू मिलै है, आनै बहकावै है. भो मोडो बिचरग्यो तो तेरो अर मेरो दोना रो तखियो तर कर देसी, इ रो **काई बिगडै**

है, इसै त्यागी आदमी रो प्रचार भोत मूंडो होवै है । फिर सिवमगल मामूली आदमी कोनी, बीरो त्याग है, बो मर्‌यो कोनी बो घणो जियो है, बीनै ह्लारणै स्यू ज्यान आई है, सेरै वनै तेरो पाणंदार इण सारू भेज्यो है के तेरो घणो कर, धन बटोर, आगै थारै म्हारै काम आसी, पण बीनै तग करणो, परेसान करणो । थापा खतम होस्या, राजनीति नै समझ, धक्को मत चला । स्वामी रै दो वक्त हाजरी भर, मस्या मे चढो दे, आरै पगा मे धोक लगा, तेरो बेडो पार । तरकीब स्यू काम ले ।'

पापा रामदास नै गुरुमत्र दे दियो । बो सीधो स्वामीजी कनै आयो, पगा धोक दी माफी मागी, कई देर बैठ्यो रयो बाता करी, स्वामीजी बाग-बाग होग्या, काळजो बरफ जैडो सीतळ होग्यो ।

नेता री अक्ल काळै साप री तरियां चिकणी चुपडी होवै । बी जिसी ही चाल हुवै, पण जे डक मारै तो अगलो पाणी कोनी मागै । स्वामी जिसै भोळै मिनख नै लोग काई याद देवै ।

स्वामीजी खूब राजी होयन पूठा चल्या गया ।

7

म्हारै ठाठ बाठ मे अबार काई कमी ही । पूरै पाच साल री पक्की मोहर लागगी । पापा री रुतबो घणो ऊचो होग्यो । अबार तो सारो मत्री-मडल मुट्ठी मे, पापा कनै देस रा मोटा मिनख आवै मोटा मोटा आदम्या रो काम सारै । बडी बडी हस्तिया पापा रै मूडै कानी जोवै, मरजी आवै जकै नै झिडक देवै । एक दिन तो एक सैक्रट्री पापा रै धक्कै चढग्यो, बण पापा रो काम कोनी कर्‌यो, फेर पापा बीरै माय एड्डी करी के खा न कुत्ता खीर । बो पापा रै सामै हाथ जोड्या खडयो, मनै बीरै पर बडी तरस आई । इत्तै मोटै आदमी नै ही पापा कोनी बक्सै, मनै पापा पर रीस आई । पापा नै अपणै पद रो गुमान होग्यो ।

एकर पापा एक एस पी स्यू मिलै ही कोनी। बो दो दिनां स्यू चक्कर काटै। मनै आ दिना पतो लागग्यो के एस० पी० कलक्टर, सैक्रेटरी किता मोटा हौवै। पण पापा सामैं तो वै माखी की तरिया लागै हा, कोडी मकोडी-सी दीखै ही। फेर पापा दोरै चल्या गया। वै एस पी मेरै कनै आया, बूढा आदमी, टाबर टीकरा आळा, म्हू तो सफा टाबर, मनै काई पतो। मनै कयो—थारी माताजी कठै ?

म्हू बानै माताजी कनै लेगी। वै मा नै कैवण लाग्या—म्हानै मा'व सस्पैंड कर राख्या है, म्हारी एक लडकी ब्यावण सावै है। एक टाबर अठै पढै है। म्हारा पिताजी सुरगवास होग्या, म्हू भोत दुखी हू। सा'ब नै कह म्हानै भाळ कराओ। म्हारो कोई कसूर कोनी। एक थाणैदार हो भोत नालायक, म्होनै वेरो कोनी हो। आरा आदमी है। म्हू बीरो तबादलो कर दियो। म्हारी एक सिकायत री फाइल चालै ही। नौकरी मे सिकायत कीरी कोनी हुवै। सिकायत भी काई। एक नेता रो म्हू अमल पकड लियो, काई करा, काई पतो लागै, कुण नेता है, कुण नी, आज तो घणा ही खद्दर पैरया फिरै है, वण आ सिकायत करवा दी के म्हू राजा रो आदमी हू, नेता पर झूठो अमल रो केस बणायो है, अमल एस० पी० खुद बीरी पेटी मे दाब दियो, बो बसणो क्या होसी, राजा के राज मे थारा नौकर आरै राज मे आरा नोकर।'

बो मा रै सामैं रोवण लागग्यो ज्यू टाबर मा रै सामैं रोवै, मनै बी पर भोत दया आई। म्हारै हाथ मे कलम होवै तो अबार इनै भाळ रो हुक्म देदयू।

मा बीनै पूरो आस्वासन दियो, आस्वासन ही कोनी दियो, पापा रै आवता ही बीरा काम करवा दियो।

पापा रो व्यक्तित्व विचित्र हो अर बारो काम करणै को तरीको भी विचित्र। एकर री बात, पापा आई० जी० पी० नै खाणै खातर बुलायो। आई० जी० पी० नै खाणो परोस्यो—काई ? बाजरी री रोटी अर गुवार फळी रो साग – बस। पापा तो इण खाणै नै चाव स्यू खावै, पण आई० जी० पी० मदरासी, काई खावै अर कया खावै। पापा खांवता जावै, अर बात करता जावै—'आई० जी० पी० सा'व, खाणो खावो, इण भोजन नैं खावै आज देस री नब्बै फीसदी जनता, म्हे इण जनता का प्रतिनिधि, म्हे भी ओ ही खाणो

खावा, आप भी खावो।'

पण बिचारो आई० जी० पी० बीरो एक कोर तोडै अर चबावै।

—हा, तो, पापा क्वै, म्हे गलती करा तो म्हानै विधान-सभा रा सदस्य खावण त्यार हो ज्यावै अर जनता म्हानै बक्सै कोनी, म्हारै ऊपर बारी जिम्मेवारी घोपेडी, पण आप लोगा नै फक्त म्हे लोग ही वै सवा, था पर जनता री कोई जिम्मेवारी कोनी। हा, खाणो खावें।

पण आई० जी० पी० बीयां ही टुकडो तोडै आ दोरो सोरो चबावै।

पापा फेर क्वै—म्हे लोग ही थारी गलती पकड सको हा, थानै ओळमो दे सका हां, था पर कार्यवाही कर सका हा, हा, भोजन करो, पापा फेर खाणै कैवता रवै।

पण आई० जी० पी० रै काटै तो खून कोनी, वो नीचै धूड घात्या, बो रोटी कानी देखतो रवै।

पापा क्वै—थानै म्हे हटा सका हा, फक्त एक आदमी, आपरो मंत्री यानी अबार फक्त विरमानद। पण म्हानै जनता दूर फेंक सकै है। म्हे जनता रो काम करा अर थे म्हारै कैवणै स्यू काम करो।

आई० जी० पी० आखर आई० जी० पी० हो, बोल्यो—म्हू तो सदा ही आप रो हुकम मानण त्यार हू, गलती हुवै तो लैरली माफी देओ, आगै मारू ध्यान राखस्या।

पापा हुकम दियो, आई० जी० पी० सारू असली थाळी लागी जकी आई० जी० पी० सारू त्यार ही, आई० जी० पी० रै लायक ही। पापा बीरो फेर साथ दियो। फेर तो दोनू हड हड हसै हा।

देस रै कानून स्यू पापा रो कानून न्यारो हो, पण आ बात समझ मे कोनी आई के जद देस रो कानून माडो हो, तो पापा बीनै विधान-सभा स्यू बदळायो क्यू कोनी, बा सभा तो बांरै ही हाथ री ही, पण आ बात जरूर म्हू जाणी के पापा दसरी भलाई रै नाम पर आपरी पार्टी रै आदम्या रो काम जरूर सार्‌यो, अर बै ही बारा गीत गावता फिरता, एक रै भलै रै साथै दूजै रो बुरो होवतो, बै लोग पापा नै गाळ काढता, कई तो रोवना करळावता, बीरी गूज कई बार अखबारा मे गूजण लागगी, बानै पढता तो जीदोरो होवतो। म्हे लोग कैवता जद् बै हँसन टाळ देवता, कैवता—

अखबार मे आपणो नाम तो छपै है, आ बात भी मोटी है।

8

कई दिना पाछै मत्री मडल मे फेर बदल कर्यो तो रेखा नाम री एक लडकी मत्री मडल मे आई। रेखा भोत हो सोवणी लडकी ही, गोरी निछोर, हाथ लगाया मैली हुवै, पतळी केळ री सी कामडी, चालै तो धरती लाज मरै। वा पापारी लाडली ही, पापा रै कैवणो स्यू आई। एम० एल० ए० ही। पैली भी बा क्दे क्दे पापा कनै आया करती, पण एम० एल० ए० बणनै रै बाद तो करीब-करीब घरे ही बैठी रैवती। कार तो राज री मिलेडी ही, आ खुद चलान आ ज्यावती, रात नै मोडै ताई पापा क्नै ही रैवती। रेखा म्हारो भोत लाड राखती।

म्हू ऊबार बडी होगी ही, डील घालगी। गाबा तो बीया हीं सातरा राखती, पण अबार म्हू गाबा कानी घणो ध्यान राखण लागगी।

म्हू काच रै सामै घणी देर रैवण लागगी। म्हारा केस भोत लाबा हा, म्हारी आख्या ही मोटी ही, नाक ही तीखो ही, रग गोरो हो, डील भरवा हो, सामै उभार होवण लाग्यो, तो मनै लाज सी आवण लागगी, पैली म्हू हरेक री गोद मे चली जावती पण अबै को रै नेडै जावणै मे सरम आवण लागगी। ओ काई फरक आयो, क्यू आयो, नी जाणू। रात नै मीठा मीठा सपणा आवण लाग्या लाज, सरम म्हानै छोडन जावती ही कोनी। लुगाया पताया कैवण लागगी—स्वराज, तू तो जुवान होगी। हां तो, आ जवानी ही।

एक दिन म्हू काच रै सामै खडी-खडी केस बावै ही, लैरै स्यू एक छोरो जको रो नाम विनोद हो जको म्हारै घरे घणो ही आवतो, एक मत्री रो छोरो हो म्हारै लैरै खड्यो होग्यो, बीरी आख म्हारी आख स्यू मिलगी, म्हारो डील हालण लागग्यो, सारै डील मे 'सरण, सरण' होवण लागगी, बो

मुळक्यो तो म्हारो जीव जगा छोड्यो, म्हू काच स्यू परनै हटगी, बो चल्यो गयो जद म्हारो जीव टिक्यो ।

रेखा घणी वार मनै कार में वैठाय आपरै घरे ले ज्यावती, म्हू बठै बीरै टावर साथै रमती । बीरै घरे बीरो धणी, एक नौकराणी अर बीरो एक टावर हो—छोटी-सी गुडिया जैडी नानकी, रेखा जैडी फूटरी, एक छोरो राख छोड्यो हो बीरै खिलावणै खातर । भोत खिलौणा हा, वां स्यू बा खेलती रैवती । म्हू जावती ही बी गुड्डी नै गोदी में लै लेंवती, नाम तो बीरो नीता हो, पण सगळा बीनै गुड्डी-गुड्डी ही करता । म्हू गुड्डी नै भोत खिलावती । रेखा जद काम पर जावती अर काम करती तो गुड्डी नै कोनी राखती । एक दिन म्हू गुड्डी नै म्हारै साथै घरे लेगी, कई देर पापा बीनै राखी, पण पापा री गोदी में पेसाब कर दिया, फेर तो सै ही हसण लागग्या, पापा नै कपडा बदळना पड्या । फेर मां बीनै गोदी मे ली, म्हे कई देर ताई बी स्यू खेल्या, फेर ओजू बीनै घरे लेग्या ।

रेखा जद बात करती तो बीरी बात म घणो मिठास हो, कई बार बा बात डूंगी कर देवती, म्हारै समझ मे कोनी आवती । मेरै खातर बा कैवती, 'तनै म्हू मिनिस्टर बणा स्यू ।' जद म्हू समझती, म्हू भी मिनिस्टर बण स्यू । मनै वा दिना मिनिस्टरी नेडै-सी लागती ।

म्हू अबार इत्ती स्याणी तो होगी ही के दुनियादारी-री बात समझण लागगी ही । अखबार आळा इत्ता कांइयां होवै है के वै कीनै ही बक्सै कोनी । वै पापा अर रेखा न लेयन बात उछाळन लागग्या । म्हू आ बातां मा नै सुणावती, मा पढेडी तो कोनी ही, पण लोग बाग जकी बात करता, बा स्यू ही बा सगळी बातां पढ लेंवती, लोग बागां री बातां ही बी साह अखबार हा ।

मा कैवती—दुनिया भोत टेढी घुळवा गाठ है । ईनै समझावणी, समझणी अर सुळझावणी—भोत ओखी है आ पराये सुख दूबली है, आपणै पर लोग भोत खार खावै है, लोगा नै बात मिलणी चाहिजै, फेर हो लै तेरी कई के मेरी ।

एक दिन पापा भी इण बात नै लेया गभीर होग्या—बातो सार री बात पदी—लोग पैली प्रचार-प्रसार सारु शुरुया करता । साची बात कैवता

ही डरता। अर्ऐ प्रचार-प्रसार री पूरी छट है। आ अखबारा तो सफा हो गपोळ खीचडी कर दी। जे आ अया ही चालतो रयो तो काम करण आळा काम करणो छोड देसी। माडै रै नीचै आछो दब ज्यासी, फेर लोग माडै करणै स्यू झिझकैला कोनी, भलाई वैठ ज्यासी बुराई दब ज्यासी।

अखबार चार दिन चीं-चीं करन थमग्या। बारी कण ही ग्यान गिणती कोनी करी। रोळै रै सामी चालै तो रोळो बधै, रोळै नै कोई निजरा सामी नी करै तो आपी थमज्यावै, आ ही बात इण घटना सारू हुई, बात घणी बदी कोनी, आपी दबगी।

पण एक दिन दादी आगी तो बण घर मे सुरळ मचादी। आ आयन बैठी कोनी, सीधी इण बात नै छेड दी—अरै मुराजडी, थारी मा कठै है ?

—मा, थारै सारू चाय बणावै, म्हू कयो।

—अरै चाय तो तू फेर बणा लेई, पैली म्हारी बात सुण।

मा आगी, सामै ऊबी होगी।

—बोलो, माताजी, मनै बुलाई, मा कयो।

—अरै बा रेखली कुण है ?

दादी नाम बीगाडन बोलती।

—क्यू माताजी, वा तो मिनिस्टर है।

—लोगा गाव नै चक राख्यो है के बीरमै रेखली साथै घर वासो कर लियो, बा बीरी दूजी लुगाई है।

मा हसण लागगी, म्हू भी हसी।

मा हसी तो दादी समझगी, मा रसाई मे जायन चाय ले आई। दादी वैठगी, थोडो सारो लियो। फेर दादी चाय पीवण लागगी।

मा थ्यावस स्यू पूछ्यो—अबै बताओ, काई बात है ?

दादी बोली—म्हू झूठ कोनी कू, बीनणी। म्हू इण काम सारू अठै आई। लोगा मनै टिकण कोनी दी। मनै तो भोत फिकर होग्यो। म्हू सोच्यो—अबार टावरा रो कुण घणी। एक सिपाही हो पुलस मे, बीनै राजा देसी जागीर। बण मरज्याणै आपरी घर आळी नै छोड दी अर दूजो ब्याव कर लियो, तो ओ धन अर राज कुबध करावै। चोखै सै चोखै आदमी री खोपडी खराब हो ज्यावै। लुगाई की जात इसी होवै रे, रीसी दुनिया रो

तप भग कर देवै। मनै तो रात नै नींद कोनी आवै, बात हैं काई ? बा बता।

मा बोली—बात जकी है थे देख लीज्यो, म्हे काई बतावा ?

—कोई रेखली बताई, गौरी सी छोरी।

—थे देखल्यो, ओ घर पड्यो।

—की होवतो तो तू हसती कोनी, तेरो डोळ ही बिगड ज्यावतो, सौक भोत खोटी हुवै।

दादी पुराणी लुगाई ही, बीरै कनै ढेर सारो अनुभव हो, नई बात नै तो कोनी समझै, पण मार हर बात रो काढ सकै ही, चाहे नई हो पुराणी हो। बात रो मूळ कोनी बदळ सकै चाये बीरै ऊपर कोई रग चढा देओ।

दोपारै पापा दौरै स्यू आग्या पण रेखा कोनी आई, दादी नै उतावळ ही रेखा नै देखण री। दूजै दिन रेखा दिनगै पैली आगी। आवता ही सीधी आगणै पर कोनी आई। बा सीधी पापा रै कमरै मे गई। गौरै रग पर कबूतरी साडी भोत ओपै ही। दादी नै अबार बेरो कोनी हो। थोडी देर पाछै दादी नै म्हं बतायो तो बा सीधी पापा रै कमरै मे गई।

दादी बेगी ही पूठी आई, दादी रो थोबडो सूजेडो हो।

—हू, आ है बा रेखा, बीनणी, है की दाळ मे काळो।

मा मुळकी अर बोली—क्यू माताजी ?

—अरै राड रै कोई लाज न सरम, बीरमै रै सारै बैठी जाणै बीरी ब्यायेडी हुवै, हाथ स्यू चाबी सी घुमावै, मूडै पर तो सरम रो नाम ही कोनी, थोगडो सीधो ही पड्यो है, धोतडी काधै पर गेर राखी ही राड रै दो चोटी।

—दादी, होळै बोलो, म्हू क्यो।

—म्हारो काई ले है, म्हू तो बीरै मडै पर कैय द्यू, पण बा तो अबार गई। तेरै बाप मेरै पगा और लगाई, मेरा पग ही पापी होग्या, इसै राड रै दरसणा म टोटो। राड चालै ज्यू वैस्या राड चालै, आ क्यांरी मनीस्टर, होग्यो जनता रो भलो ई कुलछणी रै भरोसै।

इत्तै मे पापा आग्या। पापा आवता ही की दादी मट्ठी पडी, पण बात चालती राखी—'हैं रै, बीरमा, मनै तो आ लुगाई आछी कोनी लागी।

—क्यू मा ?

—बेटा, ईंरै तो लुगाई आळा-सा लछण ही कोनी ।

—मा, आ है आजाद देस री आजाद लुगाई । बोलै जद लाखू आदमी ईंरै मूडै कानी देखै, मिनिस्टरी सोरी कोनी, तेरो बीनणी नैं तो कोनी बणावै, पढी लिखी, स्याणी समझदार, अक्कल री धणी है, देस आजाद होग्यो, मा, लुगाई नै बराबर रो हक मिलग्यो ।

—ओ हक तो म्हारी समझ मे कोनी आयो, लुगाई रो टाबरो अर गाडी रो पाचरो कूट्या काम देवै, लुगाई नै इत्ती सिर चढाणी आछी कोनी ,

—थारी बात अबै काम री कोनी रयी, माळा फेर, भगवान रा भजन कर।

—म्हू कोनी कऊ, बो भूरजी आयो हो, रै मेरै कनै, तेरो बेली हो न पुराणो, बण इसी बाता करी, इसी बाता करी रे पूछ मत । बोल्यो तेरै बेटै नै अबै अम्बर टोकसी सो दीसण लागग्यो । आ रेखली, तेरै बेटै नै, घर नै अर राजनै ले बैठैली, इसी इसी बाता करी, मेरी तो नींद हराम कर दी। एक छापो साथै ल्यायो जको पढन सुणायो, मै तो चकरी गुम होगी ।

—भूरजी बावळा होग्या, अबार, मा, पापा कयो, बीरै सारै री बात कोनी रयी । बो साठ रो होग्यो, बीरी साठी री बुद नाठी होगी । आज्या आपा रोटी जीमा साथै ।

पापा भोजन करण लागग्या, दादी भी साथै बैठगी । फेर तो पापा गाव री सगळी बाता बूहारली ।

दूजै दिन रेखा मनै अर दादी नै आपरै घरे लेगी । रेखा रो धणी भी बठै ही हो । म्हा दोना री बडी खातरी करी । पैली नास्तो, फेर भोजन, भोजन मे कई तरा रा पकवान । दादी रो जीसोरो होग्यो । म्हू कई देर ताई गुड्डी साथै खेलतो रयो । बीरो धणी दादी रै पगा लाग्यो । आवती बार रेखा दादी रै फेर पगा लागी, एक बेस अर सौ रिपिया दिया । बीरै धणी कयो—आ थारी टाबर है दादी मा, म्हारै तो बिरमानदजी माइत स्यू ही बत्ती है, इसा ही माताजी है । थारै तो ओ कोई अवतार जलम्या है, एहडा मिनख धरती पर कदेक्दास ही आवै है । म्हे तो थारो **आयो बर** पळा हा ।

रेखा दादी अर मनै पूठी गाडी मे भिजवायी।

दादी बाग बाग होरी ही। आवता ही बोली—बीनणी, लोग मर ज्याणा इया ही बकै है, काळजो बळै काळजो, ईस्कै रै मारै करै ए, म्हू अबार समझी। रेखा है लुगाई लाख रिपिया री, देख, मनै एक वेस दियो है, सौ रिपिया।

मा दादी री खुसी नै आपरी खुसी मानी।

9

अबै कोठी अर कार म्हारै सै गै होगी। न कोठी म्हारै साह नई चीज ही अर न कार इसो लागण लागग्यो जाणै म्हारी जिन्दगी साथै आ जुडेडी हुवै। पापा कनै भीड री कोई ठिकाणो कोनी, दिनगै मिलण आळा रो तातो लाग ज्यावतो, मोडै ताई आ लगस टूटती कोनी। पापा न्हाधोयन बैठ ज्यावता हरेक री सुणता, आवरी जाण मे हरेक रो जीसोरो कर भेजता। म्हारै विचार मे ओ काम भोत दोरो हो, लोग भी की खास लयन आवता। सगळा जायज बात लेया आवता, आ बात कोनी ही। सगळ ही पापा रा आदमी होवता, आ बात भी कोनी ही। पापा नै आपणै आदमी री पहचाण साथै काम री भी पहचाण ही। पापा काम नै की तरीकै स्यू करणो है, काम करणो है या टरकाणो है आ बात भी पापा स्यू छानी कोनी ही। पापा नै कैवणै स्यू सगळा काम हो ज्यावता, आ बात भी नी ही, कई काम तो आपी हो ज्यावता, पापा रो नाम होवतो, कई काम पापा जद् गोडी लगावता जद् हावता। पण फुल मिला'र भीड बणी रैवती, कई तो ऐन नडै हावता, वै कोठी मे ठहरता, वा साह कोठी मे जगा ही, रोटी और चाय कोठी स्यू ही मिलती। अबार मा घण करा आदमिया नै सक्ल स्यू पीछाण लागगी, बारा नाम तकात लेवती, ईस्यू पापा री राजनीति मे फायदो होवतो। इण बात नै मा आछी तरिया जाणती। पण मोटी बात आही के पापा रा आदमिया

रा काम हावता, ओरा रा काम कोनी हावता, ओ जनता रो राज हो, आ बात तो कोनी जचै, हा पार्टी रो राज हो। पण कदे कदे दुसमण नैं दोस्त बणाणो हावतो अर पार्टी नैं साथै लेवणा होवतो तो पापा बीरैं काम में भी रुचि लेंवता, पण कदे कदे कई साप भी दूध पी ज्यावता ।

पापा रो काम बदतो दीस्यो तो पापा आपरी मदद सारू दो आदमी राख लिया—चैनसिंह जी अर रामनिवास जी। चैनसिंह जी आपरी कोठी न्यारी लेली, पण रामनिवासजी आवता-जावता रैवता, दोनू ही पाकेडी ऊमर रा हा।

चैनसिंहजी जद पैंतीपोत आया, बारी नाड निकळेडी ही, पेट मे आळा पडरचा हा, जवाडा बैठेडा हा चाहे मुट्ठी दाणा घालद्यो, मूंडै पर भूर उडै ही, पासळा चाहे गिणल्यो, पण गिण्यां दिना म बारो काधो मचग्यो, मूंडै पर लाली आगी, पेट आगीनै आवण लागग्यो, रोज सूट बदळधा करता, इया लागता जाणै बिना विभाग रा मन्त्री होवै। बारै कनै नित नई कार होवती। फेर पतो लाग्यो कै राज रा लखपति, करोडपति काम सारू बारै कनै आवता अर आपरो काम करावता, म्हू एक दिन पापा रै साथै बारै बगलै में गयी, बगलो काई हो, एक रहीस रो घर हो जाणै, कमरो पूरो सजेडो, माही टेली-विजन अर टेलीफोन। बगलै रै बारै रहीसा री कारा खडी, म्हारी कार तो बारै मामै की कोनी।

चैनसिंहजी, लोग कैवता, बढिया ऊ बढिया दारू पींवता, बढिया ऊ बढिया भोजन करता, बा एकला रो खरचो दो हजार हो, बारा टावर टीकर बठै कानी रैवता। ओ पीसो कठऊ आवतो, राम जाणै, पण बारै की बात री कमी कोनी ही, आ म्हानै ठाव हो। रामनिवासजी ज्यू त्यू बारै रैवता पण आवता, जद वै भी बी रहीसी ठाठहू, वै तो पैली स्यू ही मोटा ताजा हा, वै जात रा वाणिया अर चैनसिंहजी ठाकर।

आ दोनो नै लेयर फेर अखबारा मे तुरळ मची, म्हू पढी, फेर पतो लाग्यो के बारो काई काम हो। अै पूरै मन्त्रीमडल रा दलाल बताया गया जका रै माध्यम स्यू सगळा मन्त्री खावै, फेर तो एक दिन अखबार मे निकळी आ खबर म्हारै पापा रै खिलाफ ही के म्हारा पापा चैनसिंह रै मार्फत एक काण्ड मे पूरा लाख रिपिया खाग्या। म्हारी पापा री बडी बदनामी ही—

म्हानै भो तो दुख उठ्यो, पण पापा क्नै एक लाख रिपिया आग्या, म्हारै मन ही मन मे लाडू-सा फूट्या। मा नै क्यो जद् मा सगळी बात ही धूड मे मिला दी--बेटा, सगळी बाता झूठी है, तेरै पापा नै बदनामी दिराणै सारू लोग अै धधा करै है, पण म्हारै कम जमी क्यूके बिना पीसा चैनसिहजी रै डील पर चरबी कोनी चढती।

एक दिन फेर स्वामीजी आग्या। स्वामीजी आवता जद् एक ओळमै री पोटळी बाधन ल्यावता। म्हू बारै आवता ही म्हू समझगो, बाबो ओळमो लेयन आयो है। स्वामी जी साची पूछो तो साधु ही हा, साधु रो मन पाप पुन स्यू दूर होवै है, वै पाप रै तो नेडै ही कोनी जावै, जद् पाप नै काई समझै। बारो व्यक्तित्व दूध सो पवितर हो, बामे हळको सो उफाण आवतो अर थोडा-सा ठडा छाटा दिया अर फेर शीतल। पण पापा रो व्यक्तित्व बेहद व्यापक हो। वै हसता तो एहडा लागता जाणै परभात री वेळा मे भात भातरा फूल खिलैडा होवै अर बा मे एक झरणो चालै, चाणचकै एक पल मे बै गभीर हो ज्यावता ज्यू हिवाळो ऊभो है। जद् बै बोलता तो जाणै डूगो दरियाव एक गतिस्यू हळबा हळबा चालै है। जद् वै रिसाणै होवता तो समदर आपरी सीव छोडतो सो लागतो फेर एक दम एहडी करवट लेवता ज्यू तूफान हो अर एक झटकै स्यू ठडो पडग्यो।

पापा स्वामी रै पगा लाग्या अर बैठग्या वैजाणै स्वामीजी रै ओळमै सारू त्यार हा। स्वामीजी समाज सेवी हा तो पापा राजनीतिक। पापा स्वामीजी नै आपरा गुरु मानता, पण स्वामीजी आजादी न मिलणै ताई पापा रा गुरु रह्या, जद् ताई स्वामीजी अर पापा रो एक मारग हो, पण सत्ता रै आणै रै बाद दोना रा मारग न्यारा न्यारा होग्या, पण स्वामीजी रै ओजू ताई आ बात समझ मे कोनी आई। स्वामीजी कयो—'बिरमानद, म्हू एक बात सुणी कान पापी है, म्हू कै नी सकू, बात कठै ताई साची है, पण मनै भरोसो है के आ बात झूठ हो नही सकै, जद् इत्तो रोळो होग्यो है तो को तो साच है ही, थे लोगा आ कर्मचारिया स्यू इसी साठगाठ कर राखी है के हर थाणै रो थाणैदार एस पी नै पीसा देवै, एस पी, आई जी पी नै पीसा देवै फेर आई जी पी. थनै पीसा देवै।

पापा बीच मे कीं बोलै हा, पण स्वामीजी कीं कऊ हा, पण स्वामी जी

बानै बोलण कोनी दियो, वै बोलता ही रया—'जद् कर्मचारी भ्रष्ट होसी तो न्याय कठै, गरीब रो भलो कठै, राज तो बो ही बडा आदम्यां रो, अमीरां रो, गरीब तो बया ही कूकता रया, कूकता रैसी, म्हारै मार्ये मे आ आजादी जमी कोनी ।'

पापा बात नै टाळता कयो—स्वामीजी, एक बात आप नै करूं हूं, या तो म्हे इण दस नै एहडो बणा देस्यां के ओ पूठो सोने री चिडिया वणज्यासी या इणनै एहडो बीगाड देस्यां के आवण आळी पीढी इनै सुधार नी सकैली ।

—आ तो म्हारै जचै है, पण एहडो क्यूं काम करो जीस्यूं ओ खोइजै, स्वामीजी कयो ।

—राह आपी बणै है, स्वामीजी, कोरै बणाया कोनी बणै, आज ससार री रीसी, मुनि, विचारक, चिन्तक कित्तो सोच्यो, विचारयो, चिन्तन कर, आप आप रै ढग री व्यवस्था दी, पण सृष्टि स्यूं पाप नी मिट सक्यो, अन्याय नी मिट सक्यो, शोषण नी मिट सक्यो ।

स्वामीजी फिर सोच मे पडग्या अर बोल्या—तो आपा अया ही तरळो मारस्यो, आपरै राज खातर गरीब आगै आयो, त्याग करयो, लोगां जेळा भरी ।

—आ बात सही, पापा कयो, ओ राज अबार भी गरीब सारू है, गरीबां नै जमीन देवां हां, गरीब नै स्कूल मे भरती करां हां, गरीब स्यूं राज सारू राय मागां हां, पण गरीब ओजूं गरीब है, हर ढग स्यूं गरीब हू, मन स्यूं गरीब, तन स्यूं गरीब अर धन स्यूं गरीब । बीरी ओजूं कोई औकात कोनी, बीरी औकात बणाणी है, बीनै सिक्षा देस्यां, राज मे सीर देस्यां, बो धीमैं धीमैं आपरी औकात बणा लेसी, बीनै आज सौंवपूं सौंपद्यां तो जेडो कुछ है, जेडो कुछ होवणो है, बीनै खतम कर देसी । बीनै आज देस रा कारखाना कयां सौंपद्यां, एक झटकै स्यूं राज रो बदळाव करद्यां तो देस रो नुकसान हो जासी, मार्क्स भी आ ही बात कयी है ।

स्वामीजी कै थोडी थोडी बात जमी, पण वै ओजूं सिर हलावता ही रह्या, बारो जीव टिक्यो कोनी ।

पापा फेर कयो—म्हे लोग गरीबां रा प्रतिनिधि हां, आज सारा प्रेस पूजीपतियां रा है, प्रचार मोटा सेठां रै हाथां मे है, वै चावै कोनी कि म्हे

लाग राज करो। म्हारी कानी म दो गुट है एक अमीरां रो, एक गरीबां रो, म्हे लोग गरीबां रा आदमी हा म्हा माथा रै खिलाफ प्रचार है, स्वाभाविक। म्हे आज राज करा हां इण प्रचार म्हारै माथै पड़दो है ओ गरीब जका म्हारै साथै जुड़ेड़ो है इणी रा म्हे पाणा हराकरा पारै है आ बात आपरै गल्ला म आ ज्याणी जद दिन आपरै गल्ली बात समझ म आ ज्यासी अर थोड़सा समय म्हारै कनै करो आया।

10

म्हारै डील म बेजा फरक आवण लाग्यो। आयीनाणै री मूजादा कंपण लागगी— आ तो बचपन जाणो रागो। बचपन री बात सोचतां ही म्हारै अंग अंग म गुदगुदी होवण लाग ज्याती। गीतै रै गाणै ऊभी हावती तो म्हू आप ही लाज मरती। म्हू चावती का म्हारो मारगो जाणें म्हारी टांगा म जिन्न वाल्या हावै। चाह म्हारी हुणो दीवाणो, पूनम म्हानै मुळकता। जुवान छोरा री आंख्यां म्हारी आंख्यां म दरपण री चेष्टा करती, म्हू नाड नीची कर लेवती। म्हू म्हारै उभार पर घणी रागरण लागगी। इणी सागै ही आणै नई चीज अबी म्हारै म अधार ऊभर आई है, इनै म्हू ढाकणो, छिपाणो चाऊ हूं। छोरा रा हरसता म रीस भी आवती पण जोभागो भी हावती। अबै म्हारी आंख्यां काजळ बिना कोनी रैवती, मूंडै पर हळकी हळकी पावडर आणै छानै मगन रैवती। अबै म्हारी म्हारा बेग लटकता कोनी सुहावता। आप आपरा म म्हू सरीर नै सिणगार देवती।

जिनाद ही और नेड़ै आवण लागग्यो। मनै बैठा पोथी पढ़ण लाग ज्यावतो थार मन्नै री चेष्टा करतो, म्हारै मूंडै कानी देखतो ही रैवतो। म्हानै थोरी हरकतां भैडी लागती।

एकर बो एक कागद म्हारी पोथी म सरका चल्यो गयो—माडो कागज, पढ़तां ही सरम आवै।

फेर एक दिन वो म्हास्यूं बाता लागग्यो। रात नै कोई पिक्चर देखन आयो हो। बोरी कहाणी कैवण लागग्यो। फेर म्हाकै कानी देखन बोल्या—स्वराज, तू म्हानै आछी भोत लागै। म्हू बोली—म्हू तो सगळा नै ही आछी लागू, मा नै, बाप नै, म्हारै भाई नै, रेखाजी नै, दादी नै, सगळा नै जका म्हारै घर मे रवै।

—नी, नी, म्हू थास्यूं प्रेम करू हू।

म्हू फेर बोली—प्रेम तो भोत बडी बात है, प्रेम स्यू ही दुनिया बसै है, भगवान ईं धरती रै जीवा स्यू प्रेम करै है जद ही आ धरती बसै है, मा-बाप आपरी औलाद स्यू प्रेम करै तो टाबर पळै, फेर बेटा बेटी आपरै मा-बाप स्यू प्रेम करै जद मा-बाप आपरो बुढापो काटै, भाई आपरी बहन स्यू प्रेम करै जद वो बीनै सासरै स्यू ल्यावै। विनोद, तू इसो ही प्रेम करै तो तू म्हारै घर रो आदमी है, पण मनै तो तेरो प्रेम कोनी लागै, तेरो माथो सिनेमा सू खराब होयोडो है। म्हू सिनेमा देखू ही कोनी, तू सिनेमा मे ज्यू टीगर टीगरी प्रेम करै बीसो करै है तो मनै माडो लागै, तू म्हानै कागज दियो, बीरै माय बास आवै ही, म्हू फाडन लैट्रिन मे गेर दियो। म्हू आ बात तेरै पापा नै, मम्मी नै कैस्यू के तू अबार सिनमा आळो सो प्रेम करण लागग्यो है।'

विनोद हाथ जोड लिया। पतो नी, जुवानी एहडै प्रेम स्यू क्यू डरै, इण म जन्र कठैई माडोपण हुवै, माडै काम स्यू हरेक डरै। आछो काम स्यू तो आदमी रो सीनो फूल ज्यावै, बो सगळा री 'वाह वाह' लेवण सारू आगै आवै। विनोद फेर तो म्हास्यू बतरावण लागग्यो, बण ज्यू स्यू घर छोड दियो।

म्हू कदे वडेरा री गोदी मे चली ज्यावती, अबै वाही बडेरा रै सामी आवणै मे मनै सरम आवण लागगी। अबै म्हू पापा रै सामी भी कोनी बैठती, पापा भी मनै गोदी मे कोनी लेवता। पण म्हारो लाड भोत राखता—'बेटी मेरी, बेटी मेरी' करता ही रैवता। कदे कदे मनै भोत ही आछी बात बतावता, जद वै मूड मे आवता, जद बानै बेल मिलती। पापा री गंभीर मुद्रा भी भोत सुहावणी लागती। कदे कदे चैनसिंहजी म्हारी गाल पर हळको चपत लगा देवता, लाड री चपत जकी मे सुध मिठास होवती।

जद् म्हू गेलाणें होवती तो मा स्यू भी लडती कोनी चूकती, जद् चैनसिंहजी कैंवता—'आ मिर्च है तर्तेया मिर्च'

नीरा अर निशा भी म्हारी तरियां जुवान होगी। नीरा भोत पिक्चर देखती, या भोत बाता सुणावती। निशा पिक्चर कानी देखती, बीनैं बाता कोनी आवती, बा तो पढाई री बात करती। बा पढाई में भोत हुसियार ही। बा स्कूल री, पोथ्या री बाता करती। म्हे तीनूं बैठती तो खोमळी बाता होवती। म्हा तीना री जाडी आच्छी ही।

म्हे तीनूं ही ग्यारवी पास करली तीनूं ही कॉलेज में चली गई, ईनैं स्यू आम चुनाव आग्यो—देस रो सार्थे राज रो। लोकसभा रो सार्थे विधान सभा रो। मुख्य-मंत्री पांडे अर पापा में खटपट होगी। पांडे दखणपंथी विचारधारा रो मिनख जद के पापा वामपंथी। एक दिन पापा अर पांडे दोनूं आपणी कोठी में तू, तू, मैं मैं होग्या। पापा बार बार आही कवैं—थारी नीति गांव विरोधी है, किसान विरोधी है। पांडे बारबार आपरी नीतियां रो पख लेवैं। इस खटपट रो असर चुनावा री टिकटा में होयो। दोना आ ही चेस्टा करी के आप आपरैं आदमियां नैं टिकट मिलै। पापा एक चालाकी और करी पांडे भी करी—जठै बारैं आदमी नैं टिकट नहीं मिली, बठै दोनूं बीनैं हराणें सारु आपरा आदमी खड्या करया। हकीकत आ ही के प्रचार पार्टी रो कोनी हो, आपरैं आदमियां रो हो।

पैलडो चुनाव जठै राजा महाराजा स्यू टक्कर रो हो तो ओ चुनाव आपस री टक्कर हो। राजनीति सीधी स्वारथ कानी चाल पडी, ओछैपण पर आगी।

म्हू पापा सार्थे पणकरी सभावा में गई अबै पापा री नीति म्हानैं राजनीति में ल्यावणें म ही। पापा आपरैं साथी सारु जम'र प्रचार करता, घर घर घूमता, हर तरियां रा हथियार आजमाता—जातिवाद रो वारो अमली हथियार हो। पीसा अर दारू री भी खुली छूट दे राखी ही। पण जठै बारो आदमी नीं हो चाहे पार्टी रो हो, बठै या तो वै जावता ही कोनी, जावता तो कुवेळै जावता, जे टेम मिर पूच भी जावता तो पेट दूखणें रो बहानो बणा लेवता। आपरैं आदमियां स्यू ओनैं मिलता अर पार्टी रैं उम्मीद-वार नैं हराणें मारु कैंवता अर आपरैं आदमी नैं समर्थन दिलवाता।

इण चक्कर म म्है एक दिन म्हारै गाव भी गया ।

गाव मे म्हारी भोत आवभगत हुई । पापा रै स्वागत मे गळी-गळी मे दरवाजा बण्या । मच भोत सजायो गयो, पण म्है ऊतरया म्हारै घरे ही । दादी बठै ही । दादी रै रहण-सहण मे की फरक कोनी । बोही कच्चो कोठो जको म्हारै थका हो । कच्चै कोठै मे एक माचलियो अर बी माचलियै मे एक गूदडो । म्हू दादी नैं बोली—दादी, भोत गरमी पडै अठै तो ।

दादी री तो वै ही बाता—अरै सुराजडी, भोत मोडी आई गरमी आळी, तेरै बडेरा अठै ही दिन काडया, तेरो दादो ई कोटडी मे, ई गरमी मे रयो, अठै ही मरयो । तेरो बाप अठै ही पढयो, तेरी मा अठै ही बीनणी बणन आई ।

म्हू काई बोलती । बो वगत एहडो हो के म्हारा जी हजूरिया री काई कमी । पैली म्हारै ठैरणै सारू व्यवस्था नाकै बणी ही, पण म्हारा पापा तो पूरा राजनीतिक, वा आवता ही फैसलो करयो के म्हू म्हारै घरे ठैरस्यू । फेर तो इन्तजाम करण आळा मिनटा मे घर रो रूप बदळ दियो । दरी गद्दा, मसद ढालिया, चादरा मिनटा मे आया बिछग्या, पण दादी एहडी जिछण के बण आपरी खाट, गुदडियो कोनी बदळन दीन्यो ।

म्हू हवा ल्यू, पण पसीनो कोनी मिटै, मनै महसूस होयो, आदमी रो सरीर अमीर कोनी हुवै, रहत अमीर होवै । म्हारै रैवणै रो ढग एहडो अमीरी हाग्यो के अठै तो एक मिनट ही जीव कोनी टिकै । आखा गाबा पसीनै स्यू भीजग्या, पवन लेंबता लेंवता हाथ थाकग्या, जीव घुटै, कठै जावा । दादी स्यू मन री बात करती, पण जीव टिकै जद होवै । गाव री छोरचा आसै पासै खडी, म्हारै कानी घूरै, पण बोलै नी । म्हानै कोई जाणै ही तो कोनी । फेर म्हारो पैहराव, वेसभूसा एहडी के बानै अचभो हुवै । बारै तो बोही घाघरियो, छोटो सो कवजियो । कठैइ फेर बदळ होयो कोनी । अबार ताई फेर बदळ करण आळी चीज गाव मे बापरी कोनी—लडकिया री स्कूल अर सिक्षा । म्हू मन मे पूरी बात धारली के अठै छोरचा री स्कूल जरूर खुलवास्या । पापा तो दिन भर गाव मे मिलणो जुलणो राख्यो । की ताऊ रै घर तो कदे काकै रै घरे । की दादी स्यू बात करै तो करै की भाभी स्यू मिलै । पापा तो वै ही सागी हा, पण अबार जको मत्री पद स्यू बदलाव

आयो, बो लोगा नैं अचभो पैदा करण आळो हो । पापा आगै आगै, बारी गाडी लारै लारै । बै आखै गाव मे गाडी पर कोनी चढया । उको भी बानै घरे मिलणै सारू क्वै, बै जावै । वै बडेरा स्यू घणा मिल्या । जुवान मोटयार तो वारै साथै फिरै ही हा, पण लुगाई अर बूढ़ा क्या मिलै । पापा रै आवणै स्यू गाव म एक मेळो सो मडग्यो, नई रुणक होगी । थोडी देर पाछै मनैं भी बुलाओ आग्यो । म्हू भी पापा साथै होगी । म्हारै जावता ही तो लुगाया अर छोरचा रो गट सो जुडग्यो । साची पूछो तो कई जगा म्हारै टिपणै साम जगा कोनी मिलती, मोट्यार लुगाया नैं पासै हटावता । असलियत आ हुई के म्हारै आवणै स्यू लुगाया, छोरा अर छोरया रै एक अचभो हाग्यो । कारण भी तो हो म्हू छक जुवान ही, गोरी निछोर, बाळा रै कटमे कतई नई फैशन, सलवार, जफर पैरण नैं, गाव आळा तो इसी छोरी देखी कठै । कई लुगाया तो क्वै—आ तो परी सी लागै, भई । आवभगत भी एहड़ी के कठैइ दूध, कठैई हलवो, कठैई चाय । आदमी घालै तो कयाम घालै । कठैइ पापा सीरै की एक डळी उठा लेवै, कठैइ चाय रो एक गुटको ले लेवै, कठैइ दूध रो एक पळियो । आ वात ही म्हू करती । दिन छिपै पाछै म्हे लोग घर आया । बारै माचा ढाळ लिया, फेर तो मोकळी हवा ही, ठड ही । पण लोगा रो, लुगाया रो बोही जमघट । पापा गाव री ही बात करी, फसला री बात करी, घाटै बाधै री बात करी, आपरी पुराणी बात करी । आपरै भायला री बात करी । राजनीति रो एक आख बा आपरै मूढै मे कोनी घाल्यो । पापा मनोविज्ञान रा माहिर आदमी हा ।

रात नैं मीटिंग हुई, भोत मिनख भेळा हूया, लोग अर लुगाई । पापा आपरी पार्टी री बात कयी । बोनैं मजबूत बणाणै री बात कयी, वोट देवणै री बात कयी । लोगा म्हानैं बोलणै सारू जोर दियो । म्हू भी बोली । म्हू लाबो भाषण तो कोनी दे सकी, पण पार्टी री छोटी सी बात कैयी, सिक्षा सारू बात कयी, फेर एहडी घोषणा करी के जे म्हारी पार्टी राज मे आई तो अठै छोरया रो स्कूल जरूर खुलवा देस्यू । लोगा म्हारी बात पर बडी ताली बजाई । लोगा अचभो कर्‌यो—अरै मिनख तो भाषण देवै ही पण आ री लडकी भी भाषण देवै ।

पापा रस्तै म मनैं भाषण पर स्याबासी दीनी । बोल्या—तू तो म्हा

स्यू भी कमाल करगो। म्हू ताळी कोनी बजवा सक्यो, तू ताळी बजवाली। म्हू घोषणा कोनी कर सक्यो, तू घोषणा कर दी। पापा भोत खुश हा।

म्हू कयो—पापा, गाव आळा कित्तो लाड करया आपणो आपा इण रै बदळै मे काई दे सका हा। कित्ता आछा मिनख है।

पापा कयो—तू तो भावुक हो ज्यावै है, राजनीति अर भावुकता रो मेळ कोनी। भावुकता मे दया री पुट है, जठै राजनीति सागै भावुकता मिली अर राजनीतिज्ञ मात खाग्यो। आपणो उद्देश्य पार होवणो चाहिजै पण उद्देश्य सारू सौ आछा मदा करणा पड़ै, कोरा आदर्श अर सिद्धान्त तो पोथी मे पढावणै रा है, औ तो साध्य है, साधन सारू आ पर जोर दवणो, अक्कल री बात कोनी। पुलिस चोर पकड़घो चावै जे पुलिस सोचै के बेगुनाह क्यू भुगतै, तो गुनहगार भी ई री आड मे लुक ज्यासी।

फेर तो चुनाव मे जकी बाता होवण लगी, बै इत्ती माडी के जे कोई सुणै तो काना रा कीडा झड ज्यावै। वोट लेवणै सारू कोई कसर कोनी राखीजी अठै तक लोगां करी के भोळा मिनखा मै भुळान कठै रा कठै ही लेग्या, इण मे न तो सत्ता आळी पार्टी लैरै रयी अरन विरोधी।

म्हू पापा नै निरास होयन पूछ्या—'चुनाव रो ओ रूप कद ताई रैवसी ?'
—जद ताई वोट रो राज रैसी, पापा रो जवाब हो।

चुनाव रा नतीजा आया तो बात पेचीदा होगी। पापा तो जीतग्या, पापा रा घणकरा आदमी भी जीतग्या, पण पार्टी राज बणावण सारू बहुमत म कोनी आई। अनै बहुमत ल्यावणै सारू लाखू रिपिया बाळना पड्या। राज ता बणग्यो, पण कित्तो दोरो। म्हू मन म करती—जकै रा साधन पाक कोनी, फेर साध्य पाक कया रैसी। अै लाखू रिपिया कठै हूं तो आवै ही है राज री खजानो क्या पाटै कीरा घर पाटै, फेर राज रै आ नुमाइदा स्यू मनमानी क्यू कोनी करावै। बीरै बावजूद भी अै लोग दावो करै रै म्हे लोग भ्रष्टाचार दूर कर देस्या, कित्तो झूठ अर फरेब है। पखपात अर भ्रष्टाचार तो सारी जड मे है, आम आदमी काई चावै है, रोटी अर रोजी मिल जावै, कोर्ट, कचेडी मे धक्का न खावणा पडे, न्याय सस्तो अर सारो मिल ज्यावै। पण आ हालाता मे तो राज पूजी रै सारै लागर्‌यो है, भ्रष्टाचार रै कांधै स्यू चालै है, फेर सांतरै शासन की **कल्पना करणी** ही

फालतू है।

एक और मवट आयो पापा रै सामैं। पापा री सिकायत हुई केन्द्र में, कै बिरमानन्द आपरै स्वारथ सारू आपरी ही पार्टी रै आदमिया नैं हराया। केन्द्र स्यू जाच सरू हुई, पण अबार पार्टी में दो दल आमैं सामैं होर्‌या हा, एक दूजै री टाग खीचें हा, ईंरी जड राज्या मे कोनी ही, केन्द्र मे ही। केन्द्र मे पापा रा आदमी तकडा हा। वां पापा नैं बचा लिया। उलटो मुख्य-मन्त्री पर आरोप लाग्यो के बो राज मे टीम भावना स्यू काम कोनी करै समाजवाद सारू काम कोनी करै। पापा आपरै उद्देश्य मे सफल होग्या। दाडे मुख्य-मन्त्री रै पद स्यू हटग्या। घणा लोगा पापा नैं मुख्य-मन्त्री रो पद देवणो चाहै हा, पण बा एक ही बात कही—राजनीति टेढी खीर है, मुख्य-मन्त्री रो पद काठ री हाडी है, म्हू काठ री हाडी कोनी बणणो चाऊ, आपा नैं राज करणो है, समाजवाद सारू राज करणो है। आपा आपणै लवेज रो मुख्य-मन्त्री ले आवा, अर वा जानकी वल्लभ जी सर्मा रो नाम दे दियो, फेर बारी जीत होगी। पापा री पाचू घी मे, बारी पायली ओजू चालण लागगी। अबैं तो पापा को नाम अखबारा मे जगमगावण लागग्यो, आ पर विशेष लेख लिखीज्या, प्रधान-मन्त्री तकात पापा रैं नाम नैं पूजण लागग्या। पापा मे एक ही खास बात ही कै बा आपरी जड जनता मे जमा राखी हीं। काम करावणै मे वै झिझक कोनी करता, चाहे कोई बठैऊ आओ। रसोवडै रो काम मा रैं हाथ मे हो। दूब रो खायेडो नीचैं न देखै, अर जून रो खायेडो ऊपर न। आवण थाळै नैं रैवण नैं जगा मिलज्यावती, पीवण नैं चाय, खावण नैं रोटी। पापा काम करावणै री चेस्टा करता। वो रोवतो आवतो अर हसतो जावतो। वो गावा मे जायन पापा रा गीत गावतो। पापा री हवा गाव-गाव मे बणगी। पापा रो कैवणो साची हो—'राज री जड जनता मे है, जनता री जड गावा मे। गाव रैं आदमी नैं आदरो, राज री जड हालै कोनी। गाव रो आदमी गीत गावणै मे भाड स्यू भी बत्ती। पापा री आ राजनीति काम करै ही।' पापा एक वात कदे कदे कान मे कैवता—'धन आळै स्यू धन खात्यो, कोई गुन'ह कोनी, गाव आळै रा पाच गिंदिया ही लगादयो, वो स्याल्कूटा टिठ करसी, वीरा पाच पीसा बचादर्या, वो गीत गासी।'

11

एक दिन भुआ आयी, भुआ म्हारी गाव में रैवै, ठेठ गाव मे एक ढाणी मे। बा भात नूतण आई, बीरी बेटी रो ब्याव। वण हट कर्‌यो—म्हू तो स्वराज नैं साथैं ले ज्यास्यू। म्हानैं भी चाव चढग्यो।

मा तो इत्ती बात कयी—स्वराज नैं पूछल्यो जावैं तो, म्हारैं काई अठैं अणमर्‌यो पडयो है। बीरी पढाई खोटी न हुवैं।

म्हारैं घर मे आ खास बात ही के कोई कीरैं काम मे टाग कोनी अडावतो। पापा तो कीनैं की कैंवता ही कोनी। म्हूं भुआ रैं साथैं होली।

भुआ रो गाव काई हो—फक्त च्यार घर, गाव रो नाम ही कोनी—ठाणी, कुणसी ढाणी, जद् लोग कैंवता—झुवारजी री ढाणी—म्हारैं भुआ रैं सुसरैं रो पड़दादो अठै आयन वस्यो हो, बीरैं नाम स्यू आ ढाणी बणगी। ढाणी मे भी काई-झूपडा ही झूपडा, एक दो खुड्डी। म्हारी भुआजी रैं दो झूपडा, एक खुड्डी अर एक चुन्नो लगायडो कोठो जकैं रैं ऊपर टैण। म्हू कोठी स्यू निकळन अठै आई तो सारो माहौल ही बेढव अर अजीव लाग्यो— ब्याव रा ओजू पन्दरा दिन—पन्दरा दिन अठै क्या आवडसी।

छोरया अर लुगाया म्हारैं आसैं-पासैं आऊ भी। म्हू नहायी, धोयी, गाबा बदळचा, भुआजी रैं घरे एक गहरो नीम हो, बीरैं नीचें माची घालन बैंठी जद् की जी मोरो होयो, फेर तो धीमैं-धीमैं छोरचा सैंदी हुगी। भुआजी री जकी छोरी रो व्याव हो—बीरो नाम हो—कमला। बीरी छोटी वहन रो नाम हो—नीमा। दोनू छोरया ही फूटरी ही। एहडी लागैं ही जाणैं बारो रूप धोरा ऊपर बैंठन घडयो होवैं—ऐन धोरा जेडी राती। बारो फूटरापो बुदरत स्यू जुडेडो, नवळीपन तो बारैं आसैं-पासैं नी, रूप ज्यू ढळ-ढळ पडैं। सरीर पाटू-पाटू होरचो हो। होवैं क्यू कोनी—भुआ रैं दो भैंस अर दो गाय। च्यारू पशु दूध देवैं। दस-बारा किलो वक्त रो दूध—सगलो खाणै-पीणै में जावैं। दूध री जगा दूध, घी री जगा घी, छाछ अर दही रो घाटो कोनी।

भुआजी रो मोटोडो छोरो व्यायेडो। बींरी बीनणी भी अठै ही। बीनणी थोडी सावली, पण भोत ही हसोड, हरदम मुळकती रैवैं, पूरो घूंघटो राखैं। सासु-बहू झाझरकै ही उठ ज्यावैं। बारी घडी काई, पूरब मे एक तारो उगैं,

ारैं साथै ही दोनू माची छोड देवै। उठता ही भुआ तो चाय वणावै अर हू डागरा नै नीरैं। डागर चरण लाग ज्यावैं अर भाभी पीसण लाग ज्यावै, ाकी रैं चालणै स्यू जको मदरो-मदरो मुर फूटैं बो सोवण आळैं नैं लोरी ो काम देवै।

भुआजी बीलोवणो विलोवैं, झरड झरड—। टाबरपणै मे म्हे एक कविता-सी पढता—झरड विलोवणो खाटी छा—। बो दरसाव अवै सामी हो—पूरो किलो पको चूटियो भुआ काडै। टाबर उठैं, कोई दही लेवैं, कोई ाछ, कई चूटियो खा लेवै। बा डीला पर रूणक क्यू कोनी आवैं। झाझरकै री चाय मे तो सामू बहू रो ही सीर हो। भाभी मनै बतायो के म्हू चाय कोनी पीवती, पण मा सा म्हानै हिलाली। मा सा नै चाय तो बणावणी ही, बै म्हानै बुलान कंवती—ले बीनणी, एक कप पीलै। काई लागै है, पण मा-सा रैं वेरो कोनी हो के आ लागै है, फेर तो म्हारो ही जी करण लागग्यो।

चैतवाडो हो, गोर रा दिन नेडा हा, पौ फाटता रै साथै छोरया खडी हो ज्यावती, म्हारैं काना मे गीता री भणक आवती—सवारी उठस्या म्हे, दूजो गीत, तीजो गीत, गीत ही गीत, आछै वर री कामना, ईशर अर गोरज्या री पूजा रो ओ ही आशय। काई वर चावैं छोरया—सूणो अर वीर, बारो चितराम बा गीता मे सातरो माडीजै, पण नापसद भी बारो सामणै हो—चूरहै बैठो चानडो ए, हाडी रो सिरदार। म्हू भी कदे-कदे चली ज्यावती, जद् भुआ बरजती—तू आज ताई गोर कोनी पूजी तो अबै मत पूज, गोर री फासी पड ज्यावै है, बा काडणी पडै। 'एक मानता जकी पीढया स्यू चली आवैं। आ मानता मे ही अै लोग जीवै, इण जीवणै मे आनै दोरापो भी काई ? देस मे क्राति रो दौर आरयो है, देस पुराणी मानता री जगा नई मानता री थरपणा करणै मे जुट्यो है। पण आ पुराणी मानता मे कमी काई ? अठै कदे सडक भी आवैंली—बिजळी भी आवैंली, स्कूल भी आवैंला। देस रै विचारका री मानता है कै आज आपणा गाव अणपढ् है, भोळा है, पण आरैं साथै जुडेडी है एक अणमोल सस्कृति जकी परम्परा स्यू चली आवै है, वीरैं माय राम-सी मरजादा है, किसन रो रागरग है, सीता-सो सत् है, कदे इसो न होवै के आ री जिदगी रो ओ अनूटो मिठास अर आकरो रसराग नयेपण रैं कोड मे खोसल्या अर आनैं आ कनै की नी छोडा, आनैं

बीच मे ही भटकता छोडदया छेवड सडका रै माध्यम स्यू आंगे दूध-दही खोसल्या अर स्कूला रै माध्यम स्यू आरी जडी जापडी सम्कृति ।

दिनगै उठनां ही जको वायरियो चालै, टीबा पर बैठन बीरो आणद लेवै तो इयो लागै जे धरती कठैइ सुरग है तो ओ ही है। नीचै धोरां री बाळू रेत जकी नै आखी रात इमरत स्यू सींचै, पून मे ऐडी गोरम भरेडी काई करै हूं रै आगै कस्मीर रा बाग बगीचा। धोरां पर फोग अर थीप सातरा लागै, कठैइ है कोई कवि ई रो जीतो जागतो रूप मांड देवै, भीगां पर मिंजर अर सरेश पर जका फूला रा झूमरा लटकै, बामै अगली मद भरी-जेडो। जी करै अठै बैठ्यो रवै। सूरज नै म्हू कऊ—हे सूरज, तू तेरो थारो रथ थामने, तू ई रूप रो आणद तो ले। पण आज तांई कोई बरगू, कोई पल ई धरती रो थिर कोनी रयो, अै पल थिर क्या रवै। छोरयां जद तांई पूजा सारू फोगा रा टवरा तोडै म्हू बो आणद रो पान करती रऊ, फेर बांरै साथै भीर हो ज्याऊ। बै गीत गावती रवै, म्हू बीरो रग लेवती रऊ। भूआ म्हारै साथै मजाक करती—तनै नी आवडै तो बायदियां घडा दयू, साथ्यांई मनै भूआ आवडियो घडा दियो। म्हारो अरै जी लागग्यो। अठै मिनखां रा नीपापा हिवडा हूं वेरा रै निरमळ जळ स्यू धोयेडा हा, जकां मे कठैइ छळ, छदम कोनी, गगाजळ री उपमा आरै सामै फीकी पडै।

रूखा पर बैठी कमेडी बोलै, कू-कू-ऊ, टू, घु-घु-उ कू, गुहेडा अर झुपडा मे चिडिया री चीऊ-चीऊ, दूर कठैइ मोरिया बोलज्या, पी-ओ, पी ओ, इणी मे कठै कोई गाय रांभज्या—ड्याव, ड्याव, फेर कोई भैंस बोलज्या—टिरडव, टिरडव। ऊंट करज्या—बलू-बम्न, टोरडी टी-टी करण लागज्या। ओ आखो समाज जको मिनखां, पसु पखेरू अर जिनावरां रो है यो एक सूत मे बंधेडो है, कठैइ कोई अलगाव नीं, बिगराव नीं जाणै गगळा ई धरती मा रा जलमेडा बहन भाई हुवै, बरसा स्यू हेत री दकसंग भापती धारा ई चालता रह्या है, चालता रैसी, आ न होवै कोई ई तार न तोड देवै, अर अै मिणिया ओस री बूदा ज्यू बिखर ज्यावै, आ जिन्दगानी मूड मे मिनग बरबाद हो ज्यावै।

ब्याव रा दिन नेडा आवण लागग्या, अर अधारो होवता ही छोरयां अर लुगायां बनडी रा गीत सरू कर देवती, फेर तो आधो रात तांई [illegible]

धडाको, गीता स्यूं आभो गरणाट लाग ज्यावतो, फेर एक ढोलकी आती, छोर्‍या गावती अर नाचती। कद दिन छिपतो, कद रात पतो ही नीं लागतो।

दिन और नेड़ा आयग्या, जद बटाऊ आवण लागग्या। दो दिन पैली भुआ रा जुंवाई-सा आग्या, फेर तो माळी-माळेण्यां कांनै एक घटा सुरा लेवती, गैली, गूगी बाता म वो टेम टिप ज्यावतो जिन्दगी में जित्ती स्याणप री जरूरत है, बीस्यूं थोड़ी भात कम सही, पण गैली, गूगी बाता भी आपरो ठोड राखै है।

कदे-कदे रूंख रै तळै बैठती तो पापा अर मा याद आवता, और तो कांई पण म्हूं आथणगै री टैम रेडियो जरूर लगावती जद राज रा समाचार आवता, पापा रो ज्यूं-स्यूं पतो लाग ज्यावतो। बाकी नाम स्यान ही चूकतो।

ब्याव रो एक दिन बाकी रयो, दूजै दिन बरात आवणी ही। बीस्यूं पैली भात भरीजणो हो पापा अर मा नै जरूर आवणा हो। मनै भोत अडीक होवण लागगी। अबै तो एक ही रात काढणी ही। टैम सिर म्हूं सात बजे रेडियो खोल्यो हो- खोलता ही पैली पोत समचार आयो—विधायक हेमराज रै गोळी मार दी गई, बारी हालत खराब है वै अस्पताल में भरती है, गोळी मारणिया ओजूं ताई कोनी पकड़ीज्या। म्हारो एकदम काळजो पकड़ीजग्यो। हेमराजजी पापा रा खास आदमी, दायां हाथ, ऐन नड़ै। अबै पापा नै वेल कठै, पापा लागग्या होसी बारै चक्कर में बी रात नै अठै राती-जोगो। स्याणी लुगायां देवी देवतावां रा गीत गावै, आधी रात भांत-भांत रा गीत गाया पण म्हारो जीव तो एहड़ो खराब होयो कै पूछो मत। बारो रातीजोगो तो हो ही, पण म्हारो भी रातीजोगो होयो, एक पल नींद कोनी आयी, चैन कोनी पड्यो। हेमराजजी री सूरत आसै-पासै घूमती रयी। लम्बो अर पतळो डील खद्दर रो चोळो अर धोती, हरदम सिर पर टोपी राखता, करमठ अर पक्का आदमी। पापा रा अटूट भगत। पापा हेमराजजी पर ज्यान देवता अर पापा हेमराजजी पर।

दोरी-सोरी रात तो गई, दिन ऊग्यो, म्हूं पापा अर मां री अडीक में। कदे आ जवै, स्यात् न आवै, न आया तो समाज में कोजा लागस्यां। भुआ भी अडीकै। पापा, इत्ता मोटा आदमी, बहन तो भाई नै याद करै ही, नरसी

रो माहेरो दुनिया मे एक उदाहरण। ओ ही तो दिन है जद् बहन आपरै पी'र पर गरव करै, आडा दिन कोई को देदयो गुण विचार करै। पण इं दिन परिवार रा पूरा गिनायत भेळा हुवै, जद् भाई ईं ओसर पर चूक ज्यावै तो बहन नै ऊमर भर कोई बोलण कोनी दे, ऐडी बाता रोज लुगाया करै। टेम टिपतो जारयो हो, म्हू कदे लैरै जाऊ, कदे आगै, कदेइ जीप रो घरघराहट सुणै। रोटी तो खाई, पण जीसोरो कोनी होयो।

ठीक दो बजे एक जीप आवती दीसी, जीप घर रै आगै थम्मी। पापा आग्या, पापा री जीप रै लैरै एक और जीप जकै मे राज रा लूटा अहलकार।

मा सीधी घर म आई। पापा अर बारै साथै लोगा रै ठैरणै रो, प्रबन्ध पैली स्यू हो ही। मा आवता ही कयो—फक्त म्हारै कनै एक घटो है, टेम मत लगावो, भात लेल्यो। हेमराजजी री हालत खराब है। आ बिना बठै मरै कोनी, मसा मेरै कैवणै स्यू इत्तो टेम काडयो है। पापा अर साथ्या नै फटाफट चाय प्यादी। भात लेवणै मे देर कोनी लगाई, पापा इत्तो देग्या के बो गुवाड मे बो इतिहास बणग्यो। सगळा ही बोल्या—कोई नरसीजी आ बापरया, रिपिया, कपडा कोई छेह ही कोनी रहयो। आसै-पासै रै गावा रा मिनख पतो नी कठैऊ आ बापरया, मेळो मडग्यो। भात रै बाद पापा चल्या गया, मा रैगी। मा नै ब्याव रै बाद जावणो हो। पापा जावता-जावता पाच मिनट रो लोगा नै भाषण दे दियो।

बारात आई, फेरा होग्या, दूजै दिन बारात चली गई। कमला भी चली गई। एकदम सुनड, पलपल मे रोवणा आवै, एक घडी जी नी लागै। वो दिन बीत्यो तीजै दिन कमला पूठी आगी—हसती खिलती गुलाब रै फूल-सी। ऐहडो टेम लुगाई री जिन्दगी मे एकर ही आवै। दिन भर कमला स्यू बतलावती रैयी। दूजै दिन म्हारी जीप आयगी अर म्हू मा-बेटी आपरै घर आ बापरया।

12

म्हे मा-बेटी आवता ही हेमराजजी स्यू मिलवानै अस्पताल गया। हेमराजजी इमरजेंसी वार्ड मे एक पलंग पर सूत्या हा। अबार बांरी हालत की सुधरेडी ही, खतरै स्यू बारै होगी ही। म्हे देख्यो बांरै एक हाथ रै पट्टी बंधरी ही। कदे-कदे की बोलै हा। म्हानै पतो लाग्यो कै बांरै हलकै मे जठै स्यू वै विधायक पद सारू खड्या होया अर जीतग्या बठै बांरै विरोधी आं पर गोळी चलवादी। वै एक टेसण पर खड्या हा गाडी पकडू हा, चाण-चकै दो आदमी घोडै स्यू ऊतर्या, आं पर गोळी चला दी। बांरै निसानो मे तो आंरै सीनै पर मारणै रो हो, पण आडै हाथ आग्या, हाथ रै गहरी चोट आई, वै तो ठौड ही पडग्या टेसण पर मिनखां री कमी कोनी, फेर वै चावता आदमी हा, फटाक स्यू लोगां आनै उठा लिया, फटाफट एक जीप करी अर सारकै ही एक अस्पताल पूगा दिया। बात रो हाको तो फूटणो ही हो। च्यारूंकानी फोन खडकग्या, पापा खुद चालन आनै अठै ले आया, खून तो छोटियै अस्पताल म ही बन्द होग्यो हो अठै असली इलाज चालू होग्यो। पूरी सरकार आनै बचाणै मे लागगी, डाक्टर अर दवायां रो टोटो कोनी रैवण दियो।

बात आ ही कै आं रो विरोधी एक लूंठो आदमी, घर स्यू सेंठो, मिनखां अर धन रो टोटो कोनी। पण हेमराजजी गरीबां रा मसीहा—पूरा सेवाधारी। पुराणा कार्यकर्ता अर दीन रा दास। आधी रात नै कण ही जगा लियो तो जाणै रो आळस नी, काम गो आळस नी। आपरै हलकै मे की रो काम अटकण कोनी दियो चाहे की दफ्तर म हो। जगा-जगा स्कूल खुलवा दिया, घणी जगा अस्पताल बणा दिया, पाणी री डिग्गी बणा दी। गाव-गाव पैदल फिरणो, लोगां रो दुख-दरद पूछणो, लोगां कनै गुवाड मे बैठ ज्याणो, बांरै दुख सुख री करणी, लोग ऐहडै मिनख नै वोट नी देवै तो कीनै देवै। विरोधी मोटै घर रो, मोटै घर रो आदमी, मिनखां रो बाछो धडो, पण गरीब री ताकत नै कुण पूछै, वो जिनै झुकज्या, बीरो बेडो पार कर देवै। हेमराजजी कनै घर कोनी हो, पण गरीबां री ताकत भोत सातरी ही, ईंरै आगै विरोधी कया टिकै। हेमराजजी बीनै दोनूं बार ही हजारां वोटां स्यू चित

मार्‌यो। विरोधी रो ओर तो बस चाल्यो कोनी, दो आदम्या नैं मारणैं सारू त्यार कर्‌या, हेमराजजी तो बचग्या, पण विरोधी मार्‌यो गयो, मिनखा की निजरा स्यू तो गयो ही, पण अबैं जेळा री हवा खाओ। दोनूं आदमी गिरफ्तार होग्या, साथैं बारो हिमायती।

रात री टेम, पापा, मा, म्हू अर छोटो भाई, पूरो परिवार छात पर बैठ्या हा। गरमी की करडी मौसम ही। दिन मे तकडी तपत पडै, बारै निकळन जी कोनी करै, पण रात की ठंडी होवैं। बारा बजे ताई फेर जी कोनी टिकै। म्हे नीचा ऊपर दरी बिछा राखी ही, एक एक तकियो लिया पड्या हा।

पापा की सोच मे डूबरया हा। बाल्या—सुणै है।

—काई कैवो हो, मा कयो।

पापा मा नैं नाम स्यू कोनी बुलावता, सदा स्यू पापा नैं बाण पडेडी ही, 'सुणै है,' ही मा रो नाम हो। कदे-कदे स्वराज री मा कह देंवता। पण नाम लेंवता बानैं सको आवतो। पापा रो ब्याव टाबरपणैं म ही होग्यो हो, जद् स्यू पापा मा नैं 'सुणै है' कैवता। दादी रो घर म पूरा दबदबो हो, अठै मोटा मिनखा म बैठता जद् मा नैं नाम स्यू बुलावता, जद् बो नाम भोत ही अपरोगो लागतो, म्हानैं भी, पापा नैं भी।

पापा फेर कीं अफसोस में बोल्या कोनी।

मा ओज् पूछ्यो—बोल्या कोनी ?

एक बात और ही—मा भी पापा नैं 'सुणै हैक' कैवती, कदे-कदे मा स्वराज रा पापा कैय देंवती। मा तो पापा रो नाम लेंवती ही कोनी। जे की दूजै रो नाम ही बिरमानद हावतो तो कैवती—बारो नाम रासी, स्वराज रै पापा रो नाम रासी। मा पडदो छोड दियो, घूघटो छोड दियो, सगळा स्यू बोलै, चाहे जेठ हो, सुसरो हो, पण अठै मां बठै ही खडी ही, जठै पैली ही। मा आं सम्कारा स्यू लैरो कोनी छुडा सकी। पापा पूछ्यो—हेमराज जी कानी गई ही आज ?

मां कयो—गई ही।

—काई हाल है ?

—ठीक है, इलाज चालू है।

पापा फेर चुप हो ग्या। पापा दरी पर ही सूत्या हा। पापा रै कदे

माट मुरजाद कोनी ही। बै कठै ही सो ज्यावता, चाहे दरी हो, पलग हो, बिस्तर हो या ना हो, सिराणो हो या ना हो, अर बठै ही नींद ले लेवता। कदे-कदे तो इसी बात हावती के जद सोवता जद तो हळको कपडो लेया सोवता, झाझरकै जद ठारी औसरती तो बी कपडै में गिंडी-सी बण ज्यावती, धणी बार मा सभाळती जद वा पर कोई मोटो कपडो गेरती। खाणै-पीणै, सोवणै, आढणै मे बारै नखरो कोनी हो, पण बारै निकळता तो वै आपरै डील रो ध्यान राखता, सेव रोज बणावता, कपडा रोज बदळता।

पापा विया ही पसरया-पसरया बोल्या—आ तो आछी हुई, हेमराज बचग्यो, नी तो ईरा टाबर रुळ ज्यावता।

—टाबर तो रुळता ही, भिनख रै लैरै ही है सौ क्यू। मा कयो।

पापा वयो—तनै बेरो है, हेमराज कनै की कोनी। जमीनडी अण ई जनसेवा में एडै लगा दी। दो चुनाव लड्या, घरे की हो कोनी। की लोगा रो सारो मिल्यो, की म्हे लोगा दियो, की पार्टी दियो, पण चुनाव म ता छाया चढै, गोगैजी रा डेरू बाजता ही गोगैजी रै भगता रै छाया चढै ज्यू। जमीनडी एडै लागगी। खरचो के सहज है आ चुनावा मे, पीसो पाणीज्यू चालै।

—अण की कमायो कोनी, मा पूछ्यो।

—कमावै काई हो अण ता खोयो, सवा री धुन है ईं रै, टाबरा रो काई हाल होवतो, लोग तो बारा दिन रोवै, फेर भेडा भेली भेड, कुण कोनै याद करै, काई याद करै, लोगा री आपरी कोनी सरै।

—बात तो ठीक है, मा बोली।

—म्हू फिकर म डूबग्यो हू, राजनीति तो गदो खेल है, इण जिसी गदगी की धधै मे कोनी। म्हू अबार राजा हू अर एक पल मे की कोनी। म्हू अबार महल मे हू, एक छण बाद ही जेल मे। मौत तो अठै चप्पै-चप्पै पर है। घर स्यू निकळू अर पूठी लाश आ ज्यावै। तू सुणै कोनी, रोज एहड़ी खबरा आवै, फलाणी जगा राष्ट्रपति अर प्रधानमत्री नै मौत री घाट उतार दिया अर सेना रो शासन होग्यो। पाकिस्तान मे लैरै सी होयो ही हो।

—गाधीजी जिसै भलै आदमी नै ही कोनी बक्स्यो, मा बोली, दूर क्यू जावा, बा कीरी काचळी मे हाथ दियो हो।

पापा बोल्या—जद् ही तो म्हू कहू हू, ईं राजनीति रो कोई भरोसो कोनी, कद् काई हो ज्या, म्हू एक बात सोची है।

—काई ?

—आज हेमराज माथै आ बात बीती, आपणै साथै भी बीत सकै हैं।

—थूको मूडै स्यू इसी बात चेतावो ही मत।

—बात सगळी सोचणी पडै, फेर थारो कुछ धणी, बैठण नै ढाव कोनी, टाबर रुळता फिरै, लोग हसै—अै है सा-बै।

मा बोली कोनी, फिकर में डूबगी। पापा आगै कयो—आपा एक मकान तो बणाल्या, आज तो चलतो चक्कर है। इण मौकै सो क्यू हो सकै है, वक्त बीत्या की कोनी।

—मकान आळी बात ठीक कयी।

—म्हारै निगाह मे एक जगा है। एक आदमी मोल देर्यो है, बीरै माय ही खेत है, पूरो पचास बीघा। बिजली है, बीच में मकान सारू जगा बणा लेस्या।

बात तय काईं हुई, बठै पाचवै दिन तो कारीगर लागग्या, चिणाई सरू होगी अर दो मीना में मकान त्यार—च्यार कमरा, ऊपर पापा सारू एक चौबारो, चोखी खुली आगणवाई, रग-रगन लगा'न त्यार, बारै एक मोटो झूपडो आया-गया सारू। पूरी पचास बीघा जमीन, मायनै एक बेरो, जमीन मे बेरै रै पाणी री सिचाई। टेम पर की बीजो।

मकान मत्री रो हो, बिजली अर टेलीफोन जरूरी, सगळी व्यवस्था सरकार रै खरचै पर हुई, म्हे लोग एक दिन चोखो दिन देख बरपणा कर दी, कोठी अर इणमे भोत फरक, पण इणम जको अपणायत रो मिठास हो, बीरी होड कठैई कोनी।

म्हे लोग भोत राजी हुया, दादी नै पतो लागणो ही है, दादी एक दिन आगी।

दादी आवतां ही सगळो घर नै देख्यो। बा बोली—घुथकारै जाजो, घर आछो बणा लियो।

दादी नै मकान दाय आयो। पण दादी री बाता तो मजेदार होवै, म्हे सगळा दादी री बाता सुणन बैठ ज्यावा।

दादी गाव री बातां बतावै । दादी बोली—बो मर ज्याणो, खीवलो है न, कवै, तेरै बेटै धन कमा लियो, अबै राजधानी में मोटी बणाई है, कोठी ।

म्हू बोली, अरै मरज्याणा, तरो काळजो क्यू तळतळीजै, बणाई है, पीसा कमाया है, *अगलै रो हिम्मत है, तू ही बणा ।*

बो बोल्यो—नाम तो जनता री सवा रो जनता नै सूरड-सूरड खावै है ।

म्हू तो लड मरी—रोवणजोगा, तू किसोक जापन दियो हो, कै तू नाम बता, जकै रो खाग्यो । पण एक बात है । मेरो पूरो जी सोरो जद होवै, जद आपा इसो ही मकान गाव मे बणावा, जद् आ राम-मार्‌या रै काळजै मे खोवा लागै ।

—*बठै काई करा, मा, कुण रैवै ? म्हू बोली ।*

—अरै, थे पढ तो गया, पण गुणीज्या कोनी, बावळी रैवणो भाइया मे हो चाहे बैर हो । बठै है न, बो भैरियो चूनियो, ओ खीवलो, रोवणजोगा, चूतर्‌या पर बैठ ज्यासी, ऊचा गोडा कर कर, थारी काट करै, ओर साप-खाद्‌यो, थारै चूचाडी लागै, थे थारो आपो सभाळो, बी एक री राड तो कूऐ म पडन मरगी बो एक सुसरो, फिरै इया ही दोजक ढोवतो, राड तो आखै दिन हाडती फिरै रोहियां म, घाघरियै री लावण मूडै मे ही रवै, आप करै चौधर । *एक ही छोगरी कोनी ब्याहीजै, बीस साल री होगी,* बाड पाडती फिरै ।

—थारो काई लेवै, मा बोली, आपा क्यू लोगां री आछी मदी करा ।

—बीनणी कट्वै जको कुहावै, दादी बोली । काई बा रडवा रो लेवन खायो है, म्हू तो की कनै ही उधारै नै ही कोनी जाऊ, मनै क्यू सेकै, रोवै आपरै जामणिया नै, अरै बा है न डूमडो, नाम हैं की बीरो, हा, घोटियो, अरै छाज बोलै जकै तो बोलै, पण, छालणी बोले जकै रा सत्तरसो बेज, *ऊलगयेडा, तेरी राड तो तेरै वस मे ही कोनी,* बो ही कवै—बिरमानद, सेठा नै लूट-लूट खावै, तो बेटी रा काड, अगलै री हिम्मत है, खावै, तू ही खा, म्हू तो सीधी मूडै पर मारी । पण, म्हू तो एक ही बात कऊ—आपणै बठै एक कोठी बणावो, जद्, म्हारो जी सोरो होवै ।

—थारै कनै पीसा है, थे ईंट गिराद्‌यो, बणा म्हे देस्या, म्हू कयो ।

—म्हारै कनै पीसा, क्यारा हुवै, दादी बोली, दो सालस्यू तो काळ ही पडै है, गुवार तो सेर ही कोनी हुयो, अळ लागली, बाजरी हुई चाबण जोगी, अबकै हाडी मे ही दम कोनी, मावठ हुई कोनी, की पवन पान न मारी, तो को सरस्यू बण ज्यासी, पण पक्की ईंट गिराणी सोरी बात कोनी, बेटा, माया लागै माया, माया दादी कनै कठै। एक मरज्याणै फूसियै नै दे राख्या है हजार रिपिया, वो कवै—देस्यां ताई, देस्या, अरै देमी कद तेरे छोरै रै ब्याव मे दिया हा बीरै टाबर चार होग्या, पण तेरै स्यू मारला पीसा कोनी, देइजै, पण बिचारो गरीब आदमी है, काई देवै, कठैऊ देवै।

मा कयो—माताजी, आप तो अबै अठै ही आ ज्याओ।

—अरै, काइ आ ज्याऊ, दादी बोली, मेरो जी अठै रैवण न करै अर बा जगा भी कोनी छोडीजै। म्हारो भी बा बिना जीवडो कोनी टिकै, वा मरज्याणा नै दो सुणाद्यू अर दो सुणल्यू जद काळजो दब्वै, खायेडो पचै। म्हू बी तो खोडली हू वा जमीनडी री लीर है, दो ढ्ढिया है, बारै सारै पडी हू। जे अठै आज्याऊ तो बो घर तो गौर बण ज्यावै, बी जमीनडी मे की होवै तो की भेडै कोनी, म्हू तो हाड बठै ही नाखस्यू।

दादी अर मा बया ही बाता मे लागा रह्या, म्हू तो उठ परी पढणै में मे लागगी, म्हारा दो दिना पाछै इम्तिहान हा।

मा नये मकान नै सजावणै मे लागगी, म्हू भी मा नै मदद करती। सामान तो म्हारै कनै हो ही कठै, नई दर्‌या मा मगाई, फरनीचर मगायो, सोफास्यट मगाया, पापा रै कमरै नै ढग सिर बणायो, मा आपरो कमरो न्यारो बणायो, म्हारो कमरो न्यारो, म्हारै कमरै मे म्हू अर भइयो जको अबार दसवीं मे आग्यो हो।

मा आपरै कमरे म एक आलमारी मे देवी देवतावा री फोटू मगान सजाली। मा अबार देवी देवतावा नै ऐहडी सजाई के पापा नै भी अचभो होग्यो। आ बात लाबी चाली। पापा बोल्या, स्वराज, आजकलै तेरी मा आपा सगळा नै छोड दिया जका मे जीव है, निरजीवा री पूजा सरू करी है, वै मा नै हस्या। पापा ज्यू-स्यू नास्तिक हा। मा री आस्तिकता भी ओजू ताई सामै कोनी ही।

—आ रा ही दिया दिन है, मा कयो, जेल तो दुनिया गई ही, बीनै ही

मनीस्टरी कोनी मिली।

—तो आ बात है, पापा कयो, म्हारली करी कराई अर्या ही गई, सारो श्रेय अण तो आ फोटूआ नै दे दियो।

—आपा नै ओ वहम है, मा बोली, जो कुछ करे है भगवान् करै है, मिनख तो बीरै हाथ री ही कठपुतळी है मेरो तो जी हालण लागग्यो जद् हेमराज जी रै गोळी लागी। बानै भगवान् ही बचाया है, मारण आळो तो बानै मार ही दिया हा। बो ही न्यायकारी है।

—न्याय करण आळो बात म्हारै कोनी जचै, पापा जवाब दियो, बावली तू देख, आज इण धरती माथै कित्ता गरीब बिखर्‌या पड्या है। दिन-रात कमाई करै है, अर भूख मरै, न्याय कठै है, पण जका चोबीस घटा खोटा घई, बै ऐश करै है, महला मे रवै, कूलर रै नीचै सोवै, कारा अर हवाई जहाजा म चालै, म्हू क्या मानल्यू बे वो न्याय करै।

—इसी बाता मनै कोनी आवै, म्हू तो एक ही बात जाणू के खोटा करन जे कोई भगवान् री सरण मे आ ज्यावै, बीनै ओ माफ कर दवै, ईरी किरपा होवै तो डूबतै नै तार ले, आगम्यू बचाले, मौत रै मूडै स्यू काढण आळो ओ ही है, मनै तो ओ ज्ञान आग्यो, थारी बात थे जाणो, म्हू तो आ रै ही चरणा मे हू।

मा री इसी डूगी आस्था देखन पाप भी तरका री तलवार कोनी चलाई। आ ही बात मजाक मे कहदी—कोई बात नी, तू तो म्हारो आधो अग है, थारी करणी मे म्हू आध री हकदार हू।

13

म्हू म्हारै मकान री छात रै आथूणै पासै कुरसी ढाळन बैठगी। म्हानै म्हारै इम्तिहान री त्यारी करणी ही। पोथी म्हारै हाथ मे ही। म्हारो मकान पूरो एकान्त मे हो, एक सड़क ही फक्त दिखणादै पासै, बी पर अबार ताई

ट्राफिक तेज कोनी ही । पाच चार बस दिन मे आया-जाया करती, कदे-कदे कोई वार, जीप टिप ज्यावती । पण उतरादो पासो तो सफा उजाड हो । दूर डूगरा री एक लाबी कतार ही, डूगरा अर म्हारै मकान रै बीचै कोई मकान नी, बीहड जगल हो जठै मोकळी किस्मा रा झाड बोझा खडया हा, जगळ सुहावणो कोनी, डरावणो हो । डूगरा पर बादळा रा मोटा-मोटा टोख उठै हा, जका भोत ही मन भावणा लागै हा। म्हू पढणै साह वारै आई ही, पण बी दरसावनै देखन म्हारो जी इण दरसाव मे रमग्यो । सोचण लागगी स्यात् बिरखा आ ज्यावै । बिरखा तो ई दरसाव नै भोत ही मनोहारी बणा देवै । म्हू वा बादला नै दखती रही—देखती रही । बादळ धीमै-धीमै ऊपर उठै हा, दूर टोका मे बिरखा री धारा चालण लागगी ही, डूगरा पर बिरखा भोत मजेदार लागै, फेर धीमै-धीमै छाटा औसरण लागगी, छाटा घणी तेज होगी । म्हू छाटा औसरता ही कुरसी मायनै लेगी अर फिर ई आखै चितराम रो आणद लेवण लागगी ।

मेहा क्यू बरसे ? धरती प्यासी होवती होसी, प्यास तो हर जीव नै लागै, धरती भी कोई जीव है, धरती री आ माग है, मेहा आ, म्हानै अबै प्यास लागरी है, धरती बुलावै, मेहा आवै—बुलबुलावतो, गरजतो, चमचमावतो, झबझबावतो, आपरी जुवानी रो प्रदर्शन करतो । धरती आपरी बावा फैला राखी है—आलिगन सारू, मेहो बरसण लागर्‌यो है ।

दादी आवता ही कही ही—अरै, स्वराज तो अबै जुवान होगी, थानै फिकर कोनी, जद् मा क्यो हो—हा, छोरो देख राख्यो है, अठै बी ए. मे पढै है, घर रो तो गरीब है, पण छोरो भोत आछो ।

पापा अर मा भी आ ही बात करी । मनै तो बडी सरम आई, वारै सारै ही कोनी बैठी, पण एक जी करै, वात पूरी सुणल्या, एक जी करै, सुण्या कोनी करै है, इसी वाता, दूर जाणो ही आछो ।

विजय भइये भी एक दिन एक वात कही ही—पापा अर मा तेरै ब्याव री वाता करै हा ।

म्हू सीसै मे मूडो देखू तो म्हू ही लाज मरू । चालू तो धरती लाज मरै । सडक पर चालती नै छोरा घुर घुर देखै, कई सीटी बजा देवै, कई सारै कर टिपता गाणो गा देवै । एक दिन तो म्हू

म्हारी चुन्नी हवा में उडै ही, सारै घर छिपै एक छोरी म्हारी चुन्नी ही में उड़ग्यो। मा चुन्नी बाबत पूछ्यो तो मोन ही सरम आई।

मेह बरसण लागर्यो हो — इमरत, मूसळधारा, बिजळी चमकरयी ही, चिमकै ही, धरती रो जी सोरो होर्यो हो, बीरो ताप सीतळ होवन लागर्यो हो। बा म्हारै अगा पगरो पड़ी ही। म्हारै डील में गुदगुदी होवन लागरी ही—म्हू गद्दे पर पड़गी अर एक तकियो माथा में नें लियो। मेह अबार भी बरसै हो, पतनाळा चालै हा, गाळ्या बगन लागर्या हा, फिर धीमै-धीमै मेहो थमग्यो, बादळ साफ होग्या, आभो ओजूं भीनो दीखन लाग्यो जाणै धरती री प्यास बुझगी अर बो धाप्यो गयो। इतै में नीचै स्यूं नोकरानी आगी, बा चाय ल्याई ही।

—ल्यो, बाई-सा, चाय पील्यो।

—अरै। तू मोत स्याणी ए राधा, टेम पर चाय ल्याई।

—बीरो नाम राधा हो, म्हू बीनै रोज ही छेड्या करती—राधा, तेरो किसनो कठै?

बा चाय कप में घालै ही, आज तो मनै बीनै छेड़न जी करग्यो—राधा, राधा, किसनो कोनी आयो।

बीरै धणी रो नाम तो दुरगो हो, पण म्हूं तो बीनै किसनो ही कैवती।

—मर तो होसी, मरज्याणो कठै ही।

दुरगो ब्याया पछै आयो ही कोनी, कठै ही दिसावर चल्यो गयो।

म्हू बीरै साथै मजाक पर उतर आई—क्यू ए, राधा, साची बता, तनै बो याद कोनी आवै, तेरो गोविन्द।

—क्यू मसकरी करो, बाई-सा, चाय पील्यो।

—चाय तो पीस्यू ही, पण देख, सावण री झड़ी लागरी है, तू लुगाई री जात है।

मनै बो गीत याद आग्यो—तेरी दो टकै की नौकरिया, मेरा लाखों का सावन जाये, म्हू बीनै सुणायो, पण बा एकर तो मुळकी, फेर बीरै आंख्यां में सावण बरसण लागग्यो। म्हू मन में करी, बिचारी रै सागण जगा चोट हुई है।

—लै तो, चाय पील्या, आपा साथै, तू भी चाय ले ले।

म्हारै साथै ही बैठन चाय पिया करती, पण आपरै काळजै नैं दाबणै मे भोत पटु ही, फटाक स्यूं मुळकी, फेर हसण लागगी, पण बीरा आसूं ओजू बीरै गाल पर ही पड्या हा, सूक्या कोनी हा।

—माताजी लडैली, आ बात कहर बा नीचै गई, म्हूं चाय पीवती रही, पीवती रही, राधा री जिंदगी नैं लेयन सोचती रही।

राधा म्हारै अठै दो मीना पैली तो आई ही। बीरो बाप अठै छोडग्यो, मा नैं बो जाणै हो। बीरो मा पर जी टिकै हो। पाच साल पैली ई रो व्याव होयो, बस व्याव ही होयो, बण तो ईंरो तात ही कोनी ली। बो दीसावर चल्यो गयो, पाछो आयो ही कोनी, बठै ही रमग्यो। राधा मा बाप रै भार होगी ही, मा, बाप राधा रै भार होग्या हा। मा बीनैं आपरै कनैं बुलाली। नारी री जिंदगी रो आ ही तो विडम्बना है। पण राधा रो जौवन कदे उमड्यो ही होसी, पण अबार तो बो सूसण लागर्‌यो हो जाणै हवा भर्‌योडो ढोल मूसण लाग ज्यावै है।

म्हूं नीचै गई तो पापा आग्या हा। कोठी रै आगै गाडी खडी ही।

पापा कमरै में हा, बारै कनैं एक आदमी बैठ्यो हो। म्हूं नेडै गई तो पतो लाग्यो—वै तो मोहनसिंह जी हा। म्हूं बानैं पीछाण्या ही कोनी।

मनी वरणै रै बाद अबार ही आया, वैं तो म्हारा पडौसी हा। पापा जेल में हा—जद् वै ही म्हानैं सभाळ्या करता। बारी लुगाई भोत आछी हीं, बारी लडकी म्हारी सहेली ही, म्हारै साथै रम्या करती। पण अबार तो वैं ऐन बूढ़ा होग्या, सिर धोळो होग्यो। मूंडै सळ पडन लागग्या।

म्हानैं देखता ही बैं खड्या होग्या, म्हारै माथै पर हाथ फेर्‌यो। बोल्या—म्हारली सुमित्रा री तरियां होगी। तू भी तेरै पापा री फिकर होग्यो।

पापा बोल्या—सुमित्रा भी बडी होगी होसी।

—बीरो ही तो फिकर होर्‌यो है, मोहनसिंहजी बोल्या।

पापा ओळमो दियो—भई, मोहनसिंह, इसी काई नाराजगी, तू आयो ही कोनी।

—अरै बडा आदम्या, काई आवा, किरायो कोनी लागै, कोई काम होवै तो आवैं, नी ईंयां ही आयन काई लेवैं।

—म्हूं तो घरे बैठ्या घणी बार याद कर लेवता, पूछो ग्वराज स्यूं, पापा कयो, सगळा ही आया है अठै, मालमसिंह मिल लियो कई बार, फूसाराम घणी बार मिले है, म्हूं गयो हो बठै आपणै क्वार्टर मे गयो हो, सगळा हूं मिल्यो घरे जाय जायन पण तूं कोनी मिल सक्यो, छुट्टी पर हो।

—हां सुणी ही थे आया, मनै बडो पछतावो रयो, पण अबार हाव मारणी पडी, बिना मतलब आवणो भी आछो कोनी, अबार मतलब हो तो आयो।

—बोल, चाय प्याऊ, छाय प्याऊ, कॉफी प्याऊ।

—की कोनी पीऊ, अण राज थारलै पाणी प्याव दियो, वी चकरी मे एहडो चढर्यो हूं पूछो मत।

—ना, पीवणी तो पडसी ही।

इत्तै म मा आयगी, आवता ही बोली—ओ हो हो, आज गुरज कीनै ऊगैलो, थे तो मोत ईद रा चाद होया, कर्वे है थे पादव मरता मरग्या, पण सोमवती अमावस कोनी आई, म्हूं कूं, म्हारै मोहनसिंहजी कोनी आया।

—आवतो तो अबार हो कोनी, भाभी-सा, पण हाव मारन आवणो पड्यो, राड तो रडापो काटै पण रडवा कोनी काटण दे।

इत्तैन मोहनसिंह सारू चाय आगी, पापा अर मा भी साथ दियो।

—अबै बताओ, थानै आवणो क्या पड्यो, थानै तो कागज स्यूं काम कर देवा, म्हूं थारो गुण कोनी भूलूं, मा बोली, पण थे सुमित्रा री मा नै साथै क्यूं कोनी ल्याया।

—अठै टेम सिर रोटी रा सासा पडर्या है, थानै सुमित्रा री मा री लागी है, म्हूं मेवडू रिपिया खराब कर चुक्यो, ओ तो हारी रो आक चाख्यो है।

—बात तो बताओ, मा बोली, आधी रात थारै सारू हाजर हा, मोहनसिंहजी तो टत्ता साला मे एकर ही तो कोनी आया।

—काईं कूं, सरम आवै, थारो खास आदमी, मूछ रो बाळ कोडाराम एम० एल० ए० म्हारो तबादलो करा दियो कोसा दूर जाण-बूझन।

पापा हस्या, बानै तो नीति रो ज्ञान हो जवी तबादला पाछै बणा राखी ही।

—कोडाराम जी थास्यू नाराज है, थे बारा वोट बिगाड दिया, पापा क्यो।

—म्हू एक बात कू आपनै, मोहनसिंह कयो, कै तो आप जनतत्र रो ढोंग रचो मत, जे रचो तो फेर एहडी फोजी अर ओछी बाता पर मत आओ। म्हू जाणू हू राज रो नौकर राज रै पक्ष अर विरोध मे बोल नी सकै, भाषण नी दे सकै, क्नवेसिंग नी कर सकै, फक्त बीनै वोट देवणं रो हुक। म्हू कठै ही बोल्यो हू, वोट माग्या हू, वोट सारू मजबूर करयो हू, तो थारो जूतो अर म्हारो सिर, काई हुवै कठैइ दुकान पर बैठन बात करली, भाया मे बैठन बात करली, इत्ती ही नी कर मका तो फेर आपणो राज काई? आ पाबन्दी तो राजा ही कोनी लगाई ही। थे म्हे बैठन राज नैं गाळी काढता हो, छोडो इण बात नैं म्हू थानैं मदद करी, थे म्हारा भायला हा, म्हू कर दी, पण थारा आदमी तो खुल्लम खुल्ला प्रचार करैं, गाव-गाव फिरैं, घर-घर घूमैं, म्हे जे बोलग्या तो गुनाह होग्यो।

—तो कोडाराम करयो ओ काम, मा बोली, थे कोडाराम कनै गया?

—गयो क्यू कोनी, गयो, मनै के कोडाराम स्यू डर लागै, बो कवै म्हू करायो, जाण-बूझन करायो, भोत तबादला कराया हा। थे लोगा म्हारो विरोध करयो। म्हू कयो—जनतत्र उठायो, वोट मागो क्यो, कहद्यो—राज म्हारो अर म्हारै बाप दादै रो। क्यू करोडू रिपिया जका जनता रो धन है बीनैं फूको, आग लगाओ।

मोहनसिंह जी काफी ताव मे हा, पण पापा तो रोज ऐहडी बाता सुणैं, बा पर ऐहडी बाता री कोई प्रतिक्रिया कोनी हुवै।

मा ही बोली—थे कठै ठहरडा हो, आ बताओ।

—धरमसाळा मे, मोहनसिंह कयो।

—आ घर कोनी, मा ओळमो दियो, जाओ थारो सामान अठै ली आवा, म्हू गाडी भेजू हू।

—मा ड्राइवर साथै मोहनसिंह नैं भेज दियो।

लैरैं स्यू मा पापा नैं कयो—आ काई व्यवस्था करी है, राज रा नौकरा नैं क्यू परेशान करो हो।

पापा कयो—राज करणै सारू सौ कौतक करणा पडै, ओ करता रवै तो

काम करै या नी करै, वोट तो देवणा ज्यै । म्हानैं तो राज करणो । की इरावा, की इरा अद काम पावै ।

—मोहनसिंह रो काम करणो है, मा बयो ।

—काम तो करणो है, पण इटको लागग्यो, अबार काम हुवता हीं ओ ही लागी तोन लावणो पिरगो । ओ कोडाराम गे तो पेर भी को काची हुवै, पण आवा मीं तो कोडाराम नै मता कोनी राख्या, वीनै बगलो बार अडडेरया । आ राजनीति है, देवी जी ।

पण मा ई राजनीति नै कोनी समझती । मोहनसिंह जो घरें आग्या हा । वे आपरा कोरिया विस्तर मटै ही पक स्यावा ।

मा नै घंन बटै, पण तो कोडाराम नै दिन दिरै मू पैगी युला लिदा । ओ अठै ही आपरै क्वार्टर मे मिलग्यो ।

पतो मी मा रै काई जची, पण कोडाराम नै आवता ही मकरदवारै मे लिया ।

—कोडाराम जी, मां बोली, आ ही है थारो राजनीति, बाद म मुन्या ऊ काई वैर कोनी लेवरै, माग तो कोई हेर री शिकार मारो कीडी छिम-जगी स्यू कोई लाभ कोनी मिलै ।

—माताजी, कोई बात तो ।

—बात भी बतास्यू, ध्यावस राखो । थे मोहनसिंह जी नै कोनी जाणो । थे तो काल मारै नेडै आया हा, अं मोहनसिंह जी थारै सामै बैठ्या है, जद म्हानै दुनिया भर रा सकट घेरेडा हो, कोई म्हारै नडै कोनी आवतो, अं सगळा ई धरती पर ही मरै हा जका ऐन एक नम्बरी देसभगत बण्दा फिरै है, चोटपोसिया होर्‌या है, शहर मे कठै ही नावडै हो कोनी थें एक हो म्हारै सारै कोनी आया, अं मोहनसिंह जो म्हारै आधी रात रा काम आया करता, आरो हू गुण कोनी भूलू ।

—काई बताऊ, कोडाराम कयो, अं म्हारै खिलाफ रह्या, म्हानै वोट कोनी दिराया, म्हारी खिलाफत करी ।

—ओ तो थारो इस्यो ही कोठ है, अं काई करै, पढ्या लिख्या आदमी है, अं सं समझै है, थारा कारनामा है इसा ही, म्हारै ऊ तो छाना कोनी,

दयू। लोग म्हारै कनै रोज अठै आवै, इण राज रा सतायोडा। की रो तबादलो करा दियो, कीनै ही नौकरी कोनी, कीरै ऊपर झूठो मुकदमो चला दियो, कठै ही फौजदारी करा दी, कीनै पाणी कोनी, कठै स्कूल कोनी, कीनै पुलिस आळा कूट दियो, म्हू तो आखै दिन ओ ही राडो रोवणो देखू है, थारा काटा म्हानै बुहारणा पडै, राजनीति रो मतलब ओ तो कोनी के थे मिनख पणै नै ही भूल ज्यावो। वो भगवान तो देखै है, तडकै नै बठै काई मूडो लेयन जावैला।

कोडाराम नै काटै तो खून कोनी, बण तो नीचो मूडो कर राख्यो हो।

मा तो बोलती ही रयी जाणै बा आपरो सो हवडास काडै ही—काल म्हारै कनै एक लुगाई आई, आयन पग पकडन रोवण लागगी। बुरी तरिया, झरर-झरर बीरी आख्या झरै, बोल कोनी पाटै, म्हू मसा बीनै थमाई। बण क्यो—म्हानै पुलिस आळा सतावै, म्हारै एक कुवारी छोरी है, म्हू काई बताऊ, रोज दारू पीयन आ ज्यावै।

म्हू आई० जी० पी० नै फोन कर्‌यो। वै तो धरमात्मा आदमी, बोल्या—काई बतावा, च्यारू कानी आग लागरी है, इनै बुझावा तो परनै लाग ज्यावै, बीनै बुझावा तो इनै लाग ज्यावै। घणा तो थारा एम० एल० ए० दुख देवै है। अै थाणैदारा माथै मिलन पीवै। काई करा। थारै एम० एल० ए० री नी राखा तो थे कोनी पार पडन द्‌यो, राखा तो ओ हाल है, म्हानै तो नौकरी करणी है, रिटायरमेंट रा ग्यारा मीना रह्या है।

आ बात आई० जी० पी० कवै, मा बोली, जको पुलिस रो मलिक है। अरै भाई कोडाराम जी, राजा जुल्म कर्‌या करता, म्हू जाणू हू, पण जुल्म करण आळा हा कित्ता? गिणती रा, पण अबार तो राज अणगिणती लोगा रै हाथा मे है, एम० एल० ए० बारा मरजीदान, गिणती ही तो कोनी। क्यू बिचारै गाधी रै मूडै पर तोवो मसळो हो। अै थोडा सा धरम-करम आळा आदमी पुराणा राज मे है, गिण्या दिना मे सगळी ही सेळभेल होवण आळी है।

मां ठैरै वयारी, बीनै तो आज बोलणो हो, बोलती तो गई। इया लागै ही जाणै रीस बिचरगी।—म्हू तो भाई, म्हे नौकरी मे हा तो भोत सुखी हा, आपरी नीद उठती आपरी नीद सोवती। स्वराज रै पाधा टेम सिर काम

पर जावता अर टेमसिर आ ज्यावता। पण अबार तो म्हारकै वट्ठ हू अर आधी रात गी मोऊ हू। रोटी खावणै रो ही पतो नी, कदे-कदे या हीं भूल ज्याऊ, कठै ही कूणै-कचूणै में बठन आख झपकू तो लोग थाहो कोनी झपकण दे, लोग कवै—आ (विग्मानन्द) कोटी बणाली, वो तो मनै पेरो है, काई बणाली, कया बणाली, ओ सगळो म्हारै माथै पर कन्जो है, म्हानै रात नै सूतो नै नीद कोनी आवै, अखबारा आळा रो राम नीसर्यो है। भाई, लोगा रा मुह खुलग्या, मरम गेर दी, मरजी आवै ज्यू बक ज्यावै, मरजी आवै ज्यू लिख मारै। वानै कवै तो कुण कवै ?

मा इत्ती बोली, इत्ती बोली के मा रो जीव टिकग्यो, मा में इत्ती बाता छिपी पडी ही, म्हानै वेरो ही कोनी हो।

कोडाराम बैठ्यो-बैठ्यो सुणतो रयो, मोहनसिह जी भी कोनी बोल्या, बै जाणै हा, माताजी आज कोई कसर कोनी राखी।

मा इण दुनिया नै देखन भोत स्याणी होगी ही। आखर में बण एक स्याणी वात कयी —देख कोडाराम, तबादलो तो आरो तनै कैनसिल कराणो है, बण जे तू गाठ बाधै के मोहनसिह म्हारो ध्यान पटादी तो म्हू आरो तबादलो है ज्यू ही रैवण दयू, बयू के तू तो बदळो लेवण री सोचै लो, और कोई कबाडो करा देसी, आनै सतासी, उळझादेसी अै फेर म्हारै कनै भाजन आसी। म्हू कठै आडो आस्यू पण तेरो मन माफ होवै तो तू अबार ही आरै साथै वात कर ले, आदमी कोजो भोत होवै है, इं रै काळजै में चडी गाठ्या है, छुरा है छुरा तीखा तीखा।

मां तो चली गई, चोरै नाम स्यू फोन आयो हो। मोहनसिह जी अर कोडाराम दोनू मिल बैठन बात करण लागग्या, दोनू हसता दीखै हा, घुट-घुटन बात करता दीसै हा, साथै चाय री चुस्की लगावै हा।

तीन दिन पाछै मोहनसिह जी आपरो हुकम लेग्या।

14

—तू कठै गई ही ? मा पूछयो ।

—ऊपर तो ही, म्हू क्यो ।

—काई करै ही एकली ?

—एक उपन्यास मिलग्यो हो, पढण लागगी, म्हू कयो ।

— ठीक है ?

मा रो जी टिकग्यो, मा मेरो ध्यान राखती, कठैइ ऐरी गैरी जगा न चली ज्याऊ । घर मे भी सौ भात रा मिनख आवता, मा बारो भी ध्यान राखती । म्हू की साथै ज्यू-त्यू हसती, बोलती भी कोनी, फेर भी मा टोक देंवती ।

म्हू यह देवती—मा काई बावळी हू ।

मा कैंवती—तू तो बावळी कोनी, बेटा, आ ऊमर बावळी है । आपणै हा न एक कलक्टर सा'व, बारी छोरी नै मा-बाप घणी छूट दीनी, बेरो है काई होयो ?

—हा, बेरो है, मा ?

—बस तो, वा छोरी बावळी तो कोनी ही, स्याणी ही बी० ए० में पढै ही, कित्ती बदनामी हुई ?

म्हू तो चुप ही, काई कैवती, म्हा स्यू की छानी कोनी ही, कुण किसी, कुण किसी । पण राम जाणै काई बात ही, नौ जुवान छोरा ही हिम्मत ही कोनी ही, म्हा स्यू बात करै । आ बात कोनी ही के म्हू फूटरी कोनी ही, पण बडै बाप री बेटी ही, वासना री आख म्हा पर गडावता बानै डर लागतो ।

पण आ बात कोनी ही के म्हू सफा भाटो ही, म्हारै भी मन हो काळजो हो, म्हारै भी हिवडै मे कल्पना रा पखेरू उडाण भरया करता । रात नै सुहावणा सपना अधबीच मे नीद उचाट देवता । आभै रा तारा मुळकता दीखता, चाद हसतो दीखतो । मोरियै री पीऊ' 'पीऊ'''टीटूडी री टी उ '' टी उ मन मे गुदगुदी पैदा कर देंवती ।

म्हू छात पर घणी बार एकली बैठ ज्यावती, बैठी रैवती, बैठी रैवती,

म्हारै आसै-पासै की रो ही घर कोनी हो, की री छात कोनी ही, म्हारै नैणा रै सामै मुध प्रकृति होवती, हर्‌या-भर्‌या मोटा-मोटा रुख, दूर आभो धरती जठै मिलै वठै ताई रूख ही रुख दीपता, एक कानी परवत ही परवत, बादळ री टोळा सुहावणा, मन भावणा। कठै-कठै ही रोहिड़ै रा लाल-लाल फूल भोत फूटरा लागता। एक कानी पूरो नगर आपरी ऊंचाई सायँ टिक्योडो, जम्योडो मन नैं ओपतो। दिखणादी सडक पर कदे-कदे मोटर री घर्‌र-घर्‌र स्कूटर री भर्‌र-भर्‌र, कार री सर्‌र-सर्‌र सुणती रैवती। म्हू मोटर नैं जनता मानती तो कार नैं रहीसी अर स्कूटर नैं जवानी री उपमा देवती, साइकिल तो गरीबी रो रूपक हो ही। पगा चालता जका—गरीबी री रया स्यू नीचा, कीनै ही भाकडा त्यार करणा है तो की सडक पर खडया हो ज्याओ।

आ दिना म्हारी जिन्दगी म एक ठहराव सो आग्यो हो। इम्तिहान तो खतम होग्यो, करू भी तो काई करू। राजनीति म भी कोई हलचल कोनी, पापा आपरो काम करता रवै, मा अपणो, विजय भइयै नै इम्तिहान देवणो है, फिर बो तो छोरो है, छोरो तो कठैइ आपरा दोस्ता मे चल्यो जावै, अबै म्हारी सहेल्या भी दूर पडगी, अठै इत्ती दूर आवै कुण ? आसै-पासै कोई ढग रा घर नी, इनै-बीनै छोटी-मोटी झूपडया जका मे लोग आपरी जूण पूरी करै, म्हारै घरे कीं नौकर-चाकर आपरै धन्धै लाग्या रवै, म्हारै सारू वेल कीनै।

म्हू कदे छात पर चढ ज्याऊ, प्रकृति नै देखती रऊ, कदे नीचे आ ज्याऊ, रेडियो सुणती रऊ, लोग आवै जका सीधा मा कनै जावै या पापा नै पूछै, म्हू ऊत-सी गई काई करा।

ऊपर बैठी ही बिया ही ज्यू रोज बैठ्या करती। सामै ही दरखता रो बीड। बिरखा रुत मे ई रो रग सातरो हो ज्यावै, सारा रुख पत्ता स्यू लद ज्यावै, न्यारा न्यारा पण एक साथै, डाळ स्यू डाळ जुडर्‌या हा, जिया बै बाथ घालन मिलै, कठै सरडी ही तो कठै कीकर, कठै झाडकी ही तो कठै ही जाळ, कठै ही रोहिड़ो हो तो कठैइ कैर। बधणै म कीकर रो मुकाबलो कोनी, पण खेरटी न तो पसरणै मे तकडी न बधणै मे आ मध्यम श्रेणी री प्रतीक ही, जाळ रो फैलाव आछो सात्तरो, गहरी चोखी छिया ही घणी, पण रोहिड़ा

आपरै स्परग मे नार्क ही दीखैं, नखरै मे डूब्योडा । आरी भी एक दुनिया है, अठै भी गरीव, अमीर है, आपरी-आपरी ठौड मे सगळा खडया है पूरै जी सोरै स्यू, वठैड कोई टक्कराव नी, बाथ स्यू बाथ घालन मिलेडा । कठैइ पीपळ अर वड भी खडया की पूजीपति-सा भारी भरकम, बारै नीचै छाव तो घणी पण बार्के आमैं-पासै की बच्चू नैं पागरण दे नी ।

इत्तै नै राधा भाजन आई—बाई-सा, बाईसा थारो ब्याव मडग्यो ।

ब्याव मडग्यो, म्हू अचभै मे पडी, कोई बात नी चीत नी, ब्याव कया मड्यो, म्हू मन मे करी । म्हू की पूछती, पण राधा खुद ही कह वैठी—दस दिन पाछै पच्चीस तारीख नैं ।

म्हारै पगा रै थडा बधग्या । म्हू पढी-लिखी छोरी ही, म्हा स्यू पूछ्यो तक कोनी, म्हानैं मण ही देखी तक कोनी, म्हू की नैं देख्यो तक कोनी, स्यात् एक बात चालै ही, एक लटको है, अठै ही बी० ए० मे पढै है, गरीब है, स्यात् बो ही हुवै । पापा नैं तो वेल कोनी, मा तो स्याणी है । जमानो बदळ्यो है ई बदळाव नैं दोना ही महसूस क्यू कोनी कर्‌या, म्हारी राय तो कोनी ली, लडको बो ही है तो बीनैं तो म्हू देख्यो है ।

ब्याव तो साच्चाई मडग्यो । ब्याव रा दिन ही दस रह्या । मन मे की और तारिया होवण लागगी, एक अजीव तरा री उदासी, एक अजीव तरा री जिज्ञासा, एक अजीव तरा री खुसी । म्हू भुआ री लडकी रै ब्याव मे गई ही, भोत धूम धडाको हो—बनडी गावती छोर्‌या, पण अठै तो कोई छोर्‌या ही कोनी ही, पडौस ही कोनी हो, हा जका ऐन गरीब-गुरवा, खेता मे मजूरी करण आळा, भात भात रै दस रा, आपणा गीत बानैं आवैं भी कोनी । मां रो घणो जी करै, पण करै काई ? म्हारी छोरी रो लाड कोड कोनी होयो । भुआ री छोरी नैं तो एक मीना पैली गूद जमान दियो, म्हारै बो भी कोनी दियो । तीन दिना पैली म्हारा पीळा हाथ कर दिया, कठैऊ एक पडत बुलायो, दो छोर्‌या मिला एक दो गीत गा दिया, नाम सो कर्‌यो । पापा नैं फुरसत कोनी, मा नैं फुरसत कोनी, कुण भात नूतण जावै, दादी नैं भी कोनी बुलाई । घर मे ब्याव सो लागै ही कोनी हो, न बान, न बनौरा । पापा कह्यो—आपा आदर्श ब्याव करा हा, सगळा पडपच है, फरेब है, ढोग है, फक्त फेरा, न कोई दाइजो न कोई जनेत, पाच आदमी आसी अर फेरा

करन ले ज्यासी ।

सामण दिन बारात आगी पर जीप मे पाच आदमी । न ढुवाव, न माडो, एक पडत आयो, फेरा करावण लागग्यो, म्हू नया गाभा पैरन एक पाटै पर बैठगी । पापा आया ही कोनी, हा मुख्य-मन्त्री हा, विधायक भी हा, कई मन्त्री भी हा । मुख्य-मन्त्री पापा नै फोन कर्‌यो कै बठै ही दौरै पर हा । पापा उत्तर दियो बतायो—म्हू काई करस्यू, आप भी तो बाप री जगा हो । म्हू उघाडै मूडै फेरा लिया ।

दूजै दिन ही म्हू ता भीर होगी, मा मनै विदाई दीनी, भीर हावता-बक्त क्ण ही कैयो—स्वराज अर आनन्द रो विसोव मेळ है । म्हारै आख्या म आसू आया, म्हू रोई, म्हारै रोवणै रै साथै गीत भी हुया करै—लस्कर पाछो घेर, ओळ्यू तो आवै' भुआ री छोरी बिदा हुई तद ओ गीत गाइयो, छोरया भी आपरी सायण नै भीर करै—म्हारी सायण चाल पडी, म्हारा डब्-डब् भरि आया नैण' इण धरती रो तो रोवणो भी गीत साथै होवै, म्हारा फेरा म न ही गीत काई गुज्या—चौथो ए फेरो'' हुई पराई, म्हू इण गीत बिना ही पराई होगी । गोवर पसर्‌यो ए, जामी तरी धीय बिना' अै सगळा गीत म्हारै मन मे गूज्या अर गूजता रया, आखै मारग म्हानै याद आवता रया ।

जीप एक गाम मे जा ठैरी, एक घर रै आगै जकै री हर ईंट कच्ची ही, छोटो सो बारणो, गाम री लुगाया अर छोरया मनै घेर ली, पतो नी क्यू, म्हू आखै मारग उघाडै मूडै ही, पण बठै आवता ही म्हू घूघटो खींच लियो ।

इण घूघटै मे जको मनै आणद मिल्यो, बो उघाडै मूडै मे कोनी हो । आवै जकी छोरी अर लुगाई म्हारो घूघटो करन म्हारै मूडै नै देखै अर म्हानै सरावै—'ओ हो बीनणी तो भोत फूटरी ।' इण फूटरै सबद स्यू ही म्हारो पाव खून बदै । लुगाया री बाता बडी मजै री ही—'बीनणी, आख उघाडो ?'—म्हू आख उघाड द्यू, पतो नी क्यू सरम आवै ही, म्हू लाज स्यू माय ही माय गडी जावै ही, अठै आवता पतो लाग्यो के नारी चाय कित्ती ही पदल्यो, बीं रो मूळ रुप लुक नी सकै, लाज तो नारी रो खास लखण है । आख उघारता ही छोरया कवै—ओ हो आख्या तो गट्टा सी है । 'ओठ देख ए, कित्ता लाल है, ए मर-याणी, रच्येडा है काई' 'ना तो, रच्याडा-सा

लागै है, बडै घर री है, भीत बडै घर री, ए रस देख, राममारी, लाल सुरख,''' इसी बाता करती रयी, फेर म्हारो गठजोडो बाधीज्यो, म्हारी सासू म्हारो स्वागत कर्यो—'लाडो आयो जीत रे ?' एक रिवाज, एक परम्परा, पुराणै जमानै मे जमीन अर जोरू जीती जाया करती, जद् स्यू ही ओ गीत जीवतो है। फेर तो आखो आगणो ही गीता स्यू गूजण लागग्यो। रात नै रातीजोगो लाग्यो, सगळै देवी-देवतावा नै याद करीज्या। आदमी आपरी कमजोरी मे देवी-देवतावा अर भगवान रो सारो चावै चाये बो हो या ना हो। कदे-कदे म्हारी निजर मकान री भीता कानी चली ज्यावै, आखो मकान ही कच्चो, गोबर लिपीज्यो, पण मकान मे जगा-जगा सौरम ही सौरम ही, नयै भात री सौरम—मेहदी री ज्यू हुवै।

मनै दो छोर्‌या पकडर छात पर लेगी। म्हू छात पर बैठगी। म्हारी जिन्दगी मे थै सगळी अजीब बाता ही, जाणै कोई सपनो हुवै, म्हू कदे इसी बाता री कल्पना तक कोनी करी कै कदे म्हारै मे इसी भी बीत सकै, कदे दादी काणी कैवती—एक राजा हो, बीरै सात बेटी, राजा आपरी बेटी नै पूछै—तू कीरै भाग रो खावै—बापू थारो। राजा खुस। एक बेटी कह दियो—म्हू मेरै भाग रो खाऊ—तो लेज्याओ इनै जगळ मे, मोर, कागलो मिलै जकै नै ब्याव दीज्यो। फेर बीरो ब्याव मोर साथै होयो।'

म्हानै बा कोठया, बगला मे रमा'र पापा ओ काई करयो, काई पाप करयो हो म्हू।

म्हू एकली पडी-पडी मन ही मन मे रोवती रयी, ऊपर चादणी म्हारी पीड नै देखर मुळकै, बो ही सागी चाद जको म्हारी कोठी पर चमकया करतो, बो लैरै ही आयो, म्हारी मजाक उडावण सारू।

आगणो जद् ऐन चुप होग्यो तो धीमै-धीमै कीरा ही पग बाज्या, म्हारी आख्या मे नीद कठै ही, पतो नी, म्हारो काळजो क्यू धडकण लागग्यो—धडक-धडक। म्हू तो नीचै पडी ही, एक सूत्ती बिछावणो हो। बा आवता ही म्हारा दोनू हाथ पकडर मनै माची पर बिठादी। फेर पत्तो नी बानै काई सूझी, बोल्या—'म्हानै माफ करदयो, स्वराज, म्हारो कोई कसूर कोनी, थारै पापा री ही आ जिद् ही, बा म्हानै थारै साथै ब्याव दियो। म्हू आपरै कतई लायक नी।

म्हू काई बोलती, म्हू तो रोवण लागगी, चसर-चसर, पतो नी म्हारो रोज क्यू फूट पड्यो।

—म्हू हाथ जोड़ आपरै आगै, बा कह्यो, आप रोओ मत, म्हारी भी तो गलती कोनी। म्हारै बापू नै मना लियो। म्हू बापू स्यू कैंवतो रयो—म्हारो बीरो कोई जोड़ कोनी। आपा गरीब आदमी। मसा गुजारो करा, बै मनीस्टर, कोठी, कारा आळा। पण थारै बापूजी कयो के वै मनै आपरै कनै ही राखसी। बठै ही पढासी, नौकरी लगासी। म्हारै बापूजी रै लाळ पडण लागगी, थारै बापूजी रै आगे म्हारी चालती भी कया, बारी बात टळै कया।'

म्हारो रोवणो बीमो तो कोनी रयो, पण म्हू बसयसिया पादती रही, फिर बानै भी नीद आगी अर म्हानै भी। म्हारी सुहागरात रो चाद इण हाडीरोवणै मे ही छिपग्यो अर परभात रै साथै ही म्हारी जीप पूठी चाल पडी, म्हारी मा रो एहडो ही आदेश हो।

आनद बारो नाम हो, पण मा बानै कवरसाहब कैवती। कवरसाहब भी म्हारै साथै हा। कवरसाहब भी दो दिन ठैरया अर पूठा आपरै घरे आग्या। इनै कवरसाहब गया अर बीनै स्यू दादी आगी।

दादी तो अयार विकराळ रूप धारण कर राख्यो हो, पूरी चडी बणरी ही। मौको भी इसो पडयो के पापा अर मा दोनू एक जगा बैठ्या मिलग्या। आवता ही बोली—था दोना री अक्कल मे तो फाको ही कोनी।

—क्यू मा, पापा कयो।

—तू स्वराज रो ब्याव करयो, मनै तू ठाव ही कोनी पडन दियो।

—टैम कठै हो, मां

—टैम तेरै कनै कोनी हो, बीनणी कनै कोनी हो, आ छ्या फिरै तेरै आगै पीछै, कीनै क्यन दो बाक सहवा देंवतो, म्हू आ ज्यावती।

—काम मे म्हू तो सूनो होरयो हू, मा, की ध्यान कोनी रयो, म्हें भी कोनी हो।

—तो आ आछी बात ही ? मनै सो ठाव पडग्यो, छोरी रा कोई लाड कोड होया नी, गीत गायाजी नै, बान बनौरा होया नीं, दान-दाइजो ही कोनी, तनै तो तेरी अक्कल पर घमड होग्यो, तू मनीस्टर काई बणग्यो,

भगवान् बणग्यो, दूजं नैं की गिणै ही कोनी ।

—आ बात कोनी हीं, मा, तू समझी कोनी ।

—म्हू काई समझू, तू अबै बडेरो होग्यो, मनीस्टरी तो म्हू कोनी कर जाणू, पण ब्याव-स्यावा नैं आपस्यू बडेरा नैं पूछन करै है, बारी बाण कायदो राख्या करै, बास्यू सलाह लिया करै है, तैरै तो भातवी कोनी आया, बानैं भी कोनी बुलाया । तेरै स्यू सासी सरड़ा आछा, जका आपरी रीत तो कोनी छोड़ै, तू तो सफा ही मनैं नीची दिखादी, मेरी नाक काटली, मनै अबै मिनखा में कोई बोलण कोनी दे, आ तो करी तो काई करी ।

—मा, तू पैली चाय पाणी पीले, न्हाले धोले थकेड़ी है न, फेर बात करस्या ।

—म्हू तो तेरो पाणी कोनी पीऊ, तू चाय री बात करै ।

—मा इत्ती नाराज मत हो । म्हू तनैं समझास्यू ।

—तू कांई समझासी ? मेरै पर तेरै जित्ती ही अक्कल कोनी । बावळी घून, काई देख्यो तू, बी जीवणियै रो बेटो है बो, म्हू जाणू हू बी घर नैं, बैठण नैं ढूढा कोनी, पैरणनैं पूर कोनी, खावण नैं दळियो कोनी, बठै तू छोरी नैं ढोवी है । चुनावा में फूकण नैं तेरै कनै धन है, लाखू बाळै है, की ढग सिर घर देख लेंवतो, छोरी उमर में सुख पावती, आ बता, तेरो धन ई छोरी रै काई काम आयो, थो कोठी काई काम आई । आ तो बीं जीवणियै रै घरे पोठा गेरै ली, तू अर तेरी लुगाई अठै कूलर री ठंडी पवन भखोला, धूड तेरी ई कमाई मे ।

पतो नी, मा रै काई हुयो, बीरै आख्या में पाणी आग्यो, बा उठन मायनै चली गई ।

पापा एकदम गभीर होग्या, जद पापा गभीर होवै तो बारो मूडो को तपसी मिनख स्यू कम कोनी दीखै । पापा बोल्या—मा, आपा समाज नैं जाणबूझन बिगाड राख्यो है । छोरी आपणै भार होवै है, आपा छोरी जामता ही रोवा हा, करळावा हा, बीनैं भाटो माना हा, दगड माना हा, फकत ई वास्तै कै आपानै बीरै ब्याव में दान-दाइजो देवणो पडै, कोरी कमाई ऊ कोनी सरै, लोगा रा घर फोडणा पडै, लोगा रै जमीन गिरवी राखणी पडै, ओ रिवाज, बोल, कित्तो माडो है । फेर तू ही तो कया करै है—काई तो हूत

रो सरावै, काई अणहूत नै बिसरावै। जगा-जगा लोग छोरयां नै कूटै, मारै, समूळी बाळ देवै है, तू सुणै कोनी।

—सुणू तो हू, दादी बोली।

—फेर म्हे लोग जका आज समाज रा अगुआ हा, लोगां रै सामै आ आदर्श राखा कै ब्याव इया भी हो सकै है, न दान, न दाइजो, न बरात, न बान, न बनोरो। तू जाणै है, इण छोरी रै ब्याव रै नाम स्यू म्हू लाखू रिपिया बटोर सकै हो। दस-दस हजार रिपिया मनै दान रा देवण त्यार बैठ्या हा, पण काई करा बी धन रो, कठै मेलता। मा, जकै कनै धन नी होवै, बीनै धन भोत प्यारो लागै, जकै कनै धन है बो धन स्यू धाप्यो बैठ्यो है। दाळ रोटी मिल ज्यावै, बीस्यू मोटो धन कोनी। लडकी नै लडको चाहिजै, लडको चज रो है तो धन हो जीसी, लडको चज रो नी है तो धन चाहे टीबा बधेडा क्यो नी बड ज्यासी।

—आ बात तो साची है तेरी।

—तू। मा, सगळी बात साची मान लेसी, ज्यू म्हे करची है लोग करण लाग ज्यावै तो साची मान, लोग बस ज्यावै, ब्याव तो अबार उजडणै रा ढग बणरया है, दोसै-दोसै आदमी बरात म, काई कठै लडाई रोप राखी है, फेर कठै दारू पीवणो, तुरळ मचाणी, कोई बात है आ, लाख-लाख रिपिया री समठूणी, फेर भी सगो राजी कोनी।

—बात है तो ठीक, तू जे लाख रिपिया लगावतो तो लोग बया कोनी टिक्ण देवता, कैवता, खाग्यो खुरड'र देस नै।

—आपा समाज बणाणो चावा हा, मा, आपणो देस कया आछो बणै, रीत री बात छोड, रीता तो नई बणाणी पडसी, पापा कयो।

—बात तो तेरी ठीक है, पण लोग कोनी मानै।

—तू लोगा री छोड, समाज ने नई दिसा देवण सारू लोगा री चिन्ता नीं करणी। स्वामी दयानद अर गाधी हरिजना सारू जकी बात कयी, कित्तो विरोध होयो। चूतरिया पर बैठण आळा लोग देस नै कोनी बदळ सकै। देस नै बदळन सारू मर्द चाहिजै जका विरोध री आग नै चीड फाड आगै निकळ ज्यावै। लडको म्हू देख्यो है लाखा मे एक।

बात पापा री साची निकळी, आनद जी आपरै बी ए रै इम्तिहान

मैं विश्वविद्यालय मे दूजैं नम्बर पर आया, वारा नम्बर इक्तर प्रतिसत हा। वानैं देखना म्हू तो रोहिड़ै रो फूल हो। बा सारू कोठी म एक कमरो थरपीज्यो। बानैं सहकारी विभाग मे नोकरी मिलगी, बा अबै कानून री पढाई साथै चलाली।

15

म्हारो पीर अर सासरो एक जगा होग्यो। आनदजी रै कमरै मे वडतो तो सासरो अर बारै म आवता ही पी र। आनदजी डील रा साफ सुथरा हा। रग गोरो, पण डील पतळो, न लाबा न ओछा। म्हू वारै आगै मोटी लागती, तक्डी लागती।

बाकै टेम घणकरो पढणै मे बीततो। रात नै पढता ही सोवता अर चार बजे उठ'न पढण लाग ज्यावता। म्हू वारी इत्ती ही सेवा करती, उठन बानैं चाय बणा देवती, कम बोलता पण बोलता जद् नाप-तोलन बोलता। मनैं बारी बोली मीठी लागती, ज्यू-ज्यू वै नेड़ै आवण लाग्या, म्हू बानैं समझण लागगी, बैं मनैं समझण लागग्या, पण वै एक बात बारै माथै स्यू कोनी मिटी—बैं मेरै सामै अपणै आपनैं ओछा मानता, मनैं हुकम देंवता सक्ता। बा मनैं कदही कोई काम कोनी कयो, म्हू खुद ही आपणो फरज समझन करती। झाझरकै जद् बैं उठता, म्हू आपी जाग ज्यावती, बा मनैं जगायो कोनी। कदे मनैं नींद आवती रैंवती, तो बैं खुद ही उठन चाय बणा लेवता। जद् म्हू कैंवती, 'मनैं जगा लिया करो।' बैं आ ही कैंवता—'मनैं काई जोर आवै है, आछो है नींद उड ज्यावै।'

एक दिन म्हारा सास-सुसरा कोठी मे आग्या। म्हू बारै पगा लागी। साम सुसरा ठेठ देहाती आदमी। देहाती भेस, देहाती बोली, देहाती चाल, न मोट न मुरजाद। सासू रै घाघरियो ओडणो, काचळी अर सुसरै रै कुडतियो अर धोती, साफो। मा बानैं कुलर री शीतळ हवा म सुआया, पण बानैं नैं

बा सुहायी कोनी, बैं दोनू एक नीम रै नीचै माचो ढाळन बैठग्या ।

म्हू वानैं आ दिना मे ही बोली—मा सा, बाप-सा आ नीं समझे के म्हे बारै बेटै नै खोस लियो ।

आनदजी बोल्या—आ कदे हो सकै है, म्हारी तनखा रा पीसा वानै पूचाद्यू हू । नौकरी करै बारो इत्तो ही तो सीर होवै है ।

मा वानै विदा कर्या—तीवळ अर कामळै रै साथै मा वानै हजार रिपिया दिया । मा, बाप ज्यू-त्यू पीसा ऊ राजी होवै, बै राजी होयन गया ।

दीवाळी रो सै दिन । दीयां रो त्योहार, अधारो पडता ही च्यारू कूटा में दीया री जगमगाहट स्योचन्नण । म्हू अर आनदजी कोठी पर दीया जगावा । माटी रा दिया, दीया मे तेल भर वाती, फेर लौ स्यू लौ मिलावा, एक दीयै रै साथै दूजो दीयो, दीया री पूरी लगस, भोत सातरी लागै । आनदजी तेल घालै, म्हू बाती मेलू, लौ स्यू लौ जगावणै रो काम म्हे मिलन करा । दोनू ख्यात राखा, लेरला जगायेडा दीया बुझ न जावै, बायरो दीया न झटको दे सकै, पण पवन तो एकदम थमेडो ही, झटको लागै कया । आनदजी इण बात न लेयन दर्शन पर उतर आया, जिदगी रो दर्शन । नारी अर-पुरुष मिलन इण सस्कृति रो निरमाण करै ज्यू आपा करा, ख्यात भी *राखणी पडै, कोई इण सस्कृति रा दीया बुझा न देवै ।*

आज कोठी मे बटाऊ कोनी, सगळा आपरै घरे गया, आपरै घर री दीवाळी मनावण नैं, त्यूहार सिर तो घरे जावै ही । जिदगी रा झझट तो कदे मिटणै रा ही कोनी, अै तो चालता ही रैसी । पापा भी घरे हा, बै भी आगणै म बैठ्या हा । मा खावणै-पीवणै रै सामान में लागरी ही ।

पापा वेला हा, कोई आज मिलण आळो कोनी । पापा जद् वेला हुवै तो भोत खुस होवै । वै भी पेड्या-पेड्या ऊपर आग्या । म्हे दीया जगावै हा ।

ऊपर आवता ही बोल्या—'भई कमाल है, भोत ही फूटरी दीया री लगस लगाई है, अबै म्हानै कोई फिकर नीं, स्वराज एकलो ही भोत दुख पावती, अबै स्वराज साथै आनद ।

मनै भोत सको आयो, पण अबै बडे कठै । अब्र तांई म्हे बात करता, वा बद होगी, पण काम बद कयां होवै ।

पापा तो बात करै जद् घणकरी बात ही बारी दर्शन री होवै । अबै तो

बै चूकै ही क्या। बोल्या—स्वराज साथै आनद रो मेळ हुवै, जद ही बो स्वराज हुवै, पण बो आनद होवै क्या जद शासन चालै फेर समूचो सहयोग जरूरी है।

पापा भी काम मे लागग्या, बै दीया भेळा करण न एक साथै मेलै।

म्हू कयो—थे जावणद्यो पापा। बा कयो—अरै, म्हू म्हारी मा रै एकलो बेटो हो, म्हारी मा तो खाणो-पीणो बणावती, म्हू दीया जगावतो, म्हानै दीया री बडी अटकळ है।

अबै म्हे तीनू दीया जगावणै रै काम मे लागग्या।

दीया झिलमिल झिलमिल भोत ही सुहावणा लागै हा।

इत्तै नै पापा, ध्यान कर्‌यो, कई लैरला दीया बुझग्या हा।

पापा कयो—बेटा, लारला दीया रो भी ध्यान राखो, ओ भोत जरूरी है। बै फेर दर्शन री बात ल्याया—नई विचारधारा आपरी थरपणा सारू पुराणी नै मारणी चावै, कवै, पुराणती मर्‌या बिना म्हानै कुण पूछै, पण बै भूल ज्यावै है कै थे पुराणा पडस्यो जद लोग थानै मार देसी। जकै दीयै मे तेल है, बाती है, बो आगी तो कोनी बुझै तेज बायरो बुझा सकै है, पण एक-दूसरै नै बुझावण लागग्या फेर ओ रग कया लागै जको अब लागर्‌यो है, आपणी सस्कृति नयै पुराणै रो ओपतो मेळ है, भारत जद ही भारत है, लारली नै सावत राखाला—जद ही आपा जीवता रैस्या। आ कहन बै लारला दीया नै ओजू जगाया।

अबै म्हे च्यारू कूटा लगस सही करदी, फेर बो दरसाव मन भरन खूब देख्यो। च्यारू कूटा जको दीया रो नजारो हो बो भोत ही सातरो हो, हियै म कोड गहरो उठै, टाबरां रा पटाका, फुलझडिया नै इण रग नै और ही बढावो देवै हा। विजय भइयं गुवाड मे आपरै आसै पासै रा टाबर भेळा कर राख्या हा, बो पटाका मे लागर्‌यो हो। हर काम ऊमर सारू होवै है।

इत्तै म मा हेलो मार्‌यो—आओ जीमल्यो।

—म्हे तो अडीकै ही हा।

मा सगळो सामान लयन चौक मे आगी। पापा बोल्या—आज तो आपा पुराणै तरीकै स्यू जीमस्या।

पापा ही नीचै बैठन जीमता। कद मेज पर बैठ्या तो बैवता

क्यू फासी पर लटकाओ हो ?

मा सगळा सारू दरी विछादी। मा सदा ही देसी चीज बणावती—सीरो, सब्जी, पटोळिया, रोटी।

पापा नैं पटोळिया री भोत कोड हो। मनैं सीरो आछो लागतो, भइयैं नैं भी सीरो आछो लागतो। पण पापा नैं मा हरी सब्जी घणी खवावती।

म्हे कदे-कदे अया भेळा होयन जीम्या करा। आज राम्रा कोनी ही, बा आपरैं घरे गई ही। सगळो काम मा न ही करणो पड्यो।

—सीरो किसोक बण्यो, मा पूछ्यो।

—तेरैं हाथ री चीज कदे माड़ी बणी ही कोनी, पापा कयो।

मा फेर पूछ्यो—पटोळिया।

म्हू कयो—पटोळिया तो भोत सुवाद है।

भइयैं कयो—सब्जी आछी कोनी, मा।

—अरे, आ तैरै पापा री है।

—ओ घास-फूस मेरैं खातर होवै है, भाई, पापा कयो।

पापा नैं सब्जी ज्यादा खावणी पड़ती, बानैं डाक्टर बताई ही वै पालक री सब्जी घणी खावता।

आनदजी भी साथ देवै हा, पण वै बोलता कोनी, वैं भोत सकाळू हा।

मा वां सारू कैवती भी—स्वराज ! कवर साहब, सबो भोत करै, बानैं तू न्यारा जिमा दिया कर।

—सबो तो करता ही होसी, पण बारो सुभाव ही है।

—वैं पीसा वापरण द्यो, म्हू थारो मकान ही न्यारो बणा देस्यू।

दूजो दिन रामरमी रो हो, शहर रा भोत लोग पापा स्यू मिलण सारू आया। दिन छिपे रै आसै-पासै पापा आपरैं लोगा स्यू मिलण चल्या गया।

पण दूजैं दिन एक तार स्यू म्हारै झटको लाग्यो। म्हारी सामू चालती रयी। म्हू तो रोयी कोनी, म्हानैं वेरो ही कोनी हो, पण आनदजी भोत रोया, बानैं थमाणैं में म्हू रोवणो भूलगी। म्हानैं रोवणो जद् आयो जद् मा कयो—तनैं साथैं जावणो पड़सी।

म्हारैं सारू जीप त्यार होगी। मा आनदजी नैं दो हजार रिपिया ल्यान दिया, जै कोई काम पड ज्यावै।

म्हू मन मे करी—अठै डग रो डाक्धर नी, वैद नी, इया ही गोळी गुटका देंवता फिरै, बानैं बेरो काई ?

—बठै ले आवता तो ठीक रैंवतो, म्हू क्यो।

—म्हानैं काई पतो हो, आ होवैली, आ तो सोची कोनी ही, बुखार तो घणी वार चढ ज्यावती।

—कोई बीमारी ही इसी ही जकै रो थानैं बेरो ही कोनी लाग्यो।

—बीया तो अै माडा होवण लागग्या हा, म्हे जाण्यो, बुढापो है। रोटी भी कोनी भावती, डील मे करण-करण होवती ही रैंवती।

—खैर, बानैं जावणो हो, चल्या गया, आपणो इत्तो ही संस्कार हो।

मोकाण आळा दिन में आवता, मोकाण आळा नै चाय प्यावणी पडती, बारै आळा मैं रोटी भी खुवावणती पडती, जद् लुगाया मोकाण सारू आवती, म्हानै रोवणो पडतो। रोवणैं मे म्हू अर जेठाणी, पडौस री म्हारैं ही भाया मे म्हारी एक द्योराणी अर सासू ही, जकी भाजन आवती। चाय करणैं री ड्यूटी मानैं सभाळणी पडी। रोटी जिठाणी बणावती।

म्हारै घरे डागरा री पूरी रणक ही। एक भैंस दूध देवैं ही, दो पाडघा ही, एक पाडी पाच मीना पाछै ब्यावण आळी ही। एक पाडकी छोटी ही। एक गाय जकी पाव, आधसेर दूध देंवती। बा चाटै पर दूध देंवती। एक बच्छो हो, एक टोगडती ही। म्हू क्यो—ओ काई, थारैं तो आ डागरा को मोत खरचो है।

जिठाणी क्यो—ओ कजियो तो है, पण जमीदार रैं डागर धन है। आपणी भैंस अबार पाच हजार री है। रोज रो सौळा क्तिा दूध है। धाप'र टाबर दूध पी लेवैं घी खा लेवैं, चाय पी लेवैं। ओ घीणो है जीस्यू इत्ता बटाउ आपा पौसावा हा, पतो ही कोनी लागैं।

वात साची ही, चाय रो पतीलो तो चढ्यो ही रैंवतो, दूध आळै नै दूध, चाय आळै नै चाय। सगळा नै आ भैंस ही धपा देंवती।

जिठाणी जद् दूध काडती, म्हू सारो देवण लागगी। म्हू पाडकी नै पकड लेंवती, खूटै रैं बाध देंवती। जिठाणी दूध काड लेंवती। जिठाणी दूध दूवता ही, आपरी चाय वणावती, कड़ी वरगी चाय, मनै एक कप देंवती। बी चाय स्यू जीसोरो हो ज्यावतो।

ज्यू-ज्यू म्हू जिठाणी रै नेडै गई, जिठाणी रो हिवडै रै रूप सामैं आवण लागग्यो। बीरो काळजो काच जेडो साफ सुथरो, कठैं ही काळस कोनी। बा तो आ ही कैंवती—थारो डील भोत अमीर है, म्हारो तो की कोनी बीगडैं, थे काम मत करो पण मनैं तो काम मे जी लागण लागग्यो।

जिठाणी दिनउगे स्यू पैली ही उठती, बठैं तो कोई घडी कोनी ही, म्हू घडी जरूर राखती, पण अठैं तो टेम ही रोळदट्ट होग्यो जिठाणी रो टेम हो—एक तारो उठ्या करतो अगूण नैं, सगळा ऊ मोटो, बो तारो उगता बीनैं जिठाणी मोटो झाझरको कैंवती। डागरा नै नीरणो, चाकी पीमणी, बिलोवणो करणो। भोत धधा हा, पण म्हू भी सूरज उगणै स्यू पैंली उठ ज्यावती, म्हारो काम तो उठता ही चाय बणावणो हो।

आनद जी अर जेठजी—बारै ही सोवता। दिन मे वेल ही कोनी मिलती। रात नै जिठाणी बाता आवती—म्हारी मासू आछी भोत ही, कदे ही बण आपरै नाडियै रै चाबी कोनी राखी। सौक्यू म्हारै सारू खुलो पड्यो रैंवतो। कदे ही बा मनैं तुकारो कोनी दियो। होठ री भी चोट कोनी मारी, फटकारो कोनी दियो। कैंवती—बेटी म्हारो काई है सौक्यू थारो ही है। वैं कदे ही माची पर कोनी सोया। कमजोर हा, पण काम करता ही रैंवता। डील मे घोबा चालता ही रैंवता, पण कदे ही सारो कोनी लैंवता।

एक दिन आनद जी नैं पढाणै री बात चाली—म्हारै सुसरै जी री बडी नियत ही रे घर म एक तो पढै। सगळी ही पढाई बारै हुई पण सदा ही फस्ट फस्ट आया। खरचो तो लाग्यो पण खरचैं रो हक आग्यो, नीं तो थारो अर म्हारो काई मेळ। थानैं काई बताऊ थारो ब्याव होया पछै म्हारी इत्ती इज्जत बदी है रे पूछो मत, आसैं-पासैं रा मोटा मोटा मिनख म्हारैं अठैं धोक देवैं है, ओ पढाई रो ही पुन परताप है। म्हू देवर नैं कऊ—अरे देवर, तू म्हानैं भी कोठी दिखा, म्हू तो सहर ही कोनी देख्यो, मेरो जी मोटर म चढणै सारू करैं, जिठाणी हसन बोली।

—अबार म्हारैं साथैं चालियो, म्हू बोली।

—कठैं वेल है, जिठाणी कह्यो, भैंस धुहारकी है, म्हू भैंस रै कारणैं पीर कोनी जा मकू, म्हारो बाबो बीमार है, रोज समचार आवैं पण भैंस मेरै टाळ दूध कीनैं दवैं कोनी जिठाणी रैं दो टाबर हा—एक छोरो

छोरी । छोरै रो नाम गोदियो, मोटो ताजो सूमसाम, छोरी रो नाम चम्पा । टाबर ज्यू-ज्यू गावा कोनी पैरता, इया ही रेत मे लिटता रैवता । कदे-कदे जिठाणी नै औसाण आवतो तो नुवा दैवती, पण टाबर बिना न्हाये-धोये सूमसाम रैवता, पण बारो डोळ बिगडेडो रैवतो । नाम रै बारै म्हू कैवती— ओ काई नाम कडायो ईरो गोदियो ।

—कडावै कुण हो, डील रो भारी हो तो इनै गोदियो कैवण लागग्या ।

—पण छोरी रो नाम फूटरो है—चम्पा ।

—ओ ईरो भुआ आही ही, बा कडागी ।

दिन मे लुगाया । मौकाण आवती तो सगळी ही म्हारी सासू री बडाई करती, की तो मरया फेर लोग मरेडैन सराया ही करै है, की सासू आछी ही ।

दुख ज्यू-ज्यू दिन नीकळया मट्ठो पडण लागग्यो, चोट लागता ही पीड घणी करै, फेर तो सैणै पडज्या । रीत करै ही टूटी कोनी, न वै तोडणो चावै हा, न तोडणै री हिम्मत ही । तीजै दिन आनन्दजी सासू री अस्थिया लेयन गगाजी गया । लुगाया सासू नै बूढी करार दे दी, घणी बूढी तो कोनी ही, पण जुवान भी कोनी । बेटा, पोता सगळा ही ता हा, फेर रोवणो क्या रो । दिन मे लुगाया हरजस सरू कर दिया, रात नै भी कर दिया, अबै तो रोवणो मट्ठो पडग्यो, भजन भाव घणा बदग्या ।

म्हू एक दिन जिठाणी नै बोली— म्हू तो इण धोती अर सिलवार कमीज मे अपरोगी लागू, म्हू नी घाघरो ओढणो पैरल्यू ।

जिठाणी म्हारी बात मान ली । दण एकर पैरेडा गावा म्हानै काढन दिया । म्हू बोरियो बाध्यो, कावळी पैरी, घाघरो पैर्यो । जिठाणी देखता ही सुचकारो गेर्यो—फूटरी तो फूटरी होवै, चाये बीनै की पैरादयो ।

म्हू बोली, ओ पैराण ही आपणो है, लुगाई ईमै जिसी फूटरी लागै, बया मेइ कोनी लागै । आपा दूजो पैराण तो देखा-देखी ले भाज्या ।

दस दिन निकळया ग्यारवे दिन तो बटाऊ भेळा होवण लागग्या, काम की बध्यो, सगळा परिवार घरे आग्या, काम मे पूरो सागो मिल्यो, बारवो दिन भी आयो, म्हू मा, पापा नै अडीकै ही । पापा जाण-बूझन कोनी आया । मा अर भइयै नै आवणो ही हो ।

आरो जी लागग्यो।

मा बोली—बेटा, म्हारा तो सै भात रा दिन बेमेडा है, स्वराज स्यू काई छानो हो, टाबर तो ही, पण भूलै थोडो ही, वै दिन तो भगवान् कीनै ही न देवै, फेर अठै आपणै मिनखा रो जाड है, म्हू कोठी मे जरूर रऊ हू, पण बठै आपणा कुण है, अै तो लोग आपणा आवै जावै है, जी लाग ज्यावै, कदे-कदे कोई नी होवै तो उजाड सो लागै, जी लागै ही कोनी।

मा अर जिठाणी घणी देर बात करी। जिठाणी अर मा दोना रो ही जी सोरो होग्यो।

मा नै जाणो ही हो, मा चली गई। म्हू अर आनन्दजी दो दिनां पाछै गया।

16

म्हू कोठी मे गई जाणै एक जुग बीतग्यो हो। दिन तो पूरा बारा-तेरा ही बारै रही, पण लाग्या जाणै बारा मीना पाछै आई। पापा अबार दोरै स्यू पूठा आया ही हा, सरकारी गाडी बारै खडी ही। म्हू जाय'र मा रै पगा लागी, मा म्हानै पैली मिली, फेर पापा कनै गई, पगा लागी, पण पापा कनै दो आदमी बैठ्या हा, जका मे एक स्वामी जी हा, पापा खाणो खावण लागर्या हा। म्हू पगा लागी, पापा सिर पर हाथ फेर्यो। फेर म्हू स्वामीजी रै पगा लागी, स्वामीजी भी सिर पर हाथ फेर्यो। पापा स्यू पैली ही स्वामी जी बोल्या—'विरमानन्द, तू स्वराज रो ब्याव कर्यो, म्हानै कोनी बुलायो।

पापा बोल्या—म्हू खुद ही कोनी हो, बुलावतो किनै। आपणै अठै काळ पड्यो हो, कलकत्तै गयो हो पीसा ल्यावण नै।

स्वामी जी बोल्या—भोत आछो काम कर्यो, म्हू अखबारा मे पढी ही, आदर्श ब्याव होयो, भोत आछो होयो, जनता जे एहडो अनुकरण करै तो

लोग न्याल हो ज्यावै, पण आजादी रै बाद आदर्श जाणै मरणासन होर्‌यो है, लोग दिखावै पर घणा उतरया है, पण कारण भी साफ है। गलत कमाई गलत खरचो।

पापा कीं कोनी बोल्या, चुळू करण लागर्‌या हा। स्वामी जी कयो—पढाई लिखाई भी वदी है, पण ज्यू-ज्यू लोग पढै है सुरळी भग होया वर्ग है। भ्रष्टाचार, बेईमानी, रिश्वत वदती जारी है।

पापा बैठ्या हा, थोडा आडा होग्या, फेर वारो कीं दिमाग जम्यो। बोल्या—स्वामी जी, क्या पाधारणो होयो, अवार तो थे वोळा मोडा दरसण दियो।

स्वामीजी कयो—म्हू तनै कागज लिख्यो हो, बा ही बात। म्हारै कॅलिज होवणो चाहिजै।

—बात करी ही, और बात करस्या। पण थारै साथै ओ मोट्यार कुण है ?

—हा, आ सुणो, स्वामीजी बोल्या, ओ है थाणैदार, मोत्तल होयोडो। आरी कहाणी सुणो, बेहद अजीब, आज रै जमानै री जीवती जागती तसवीर। ओ थाणैदार—वहद ईमानदार। न खावै, न खावण द। नतीजो काई—अफसर नाराज, नीचै रा अहलकार नाराज। आरै ईलाकै मे अमल री एक सैठो व्यापारी। जीप स्यू अमल भेजै। अण भाई, बीनै पकड लियो—ढाई मण अमल। वो व्यापारी बोल्यो—दस-बीस हजार लेल्यो, म्हानै छोडो, अण छोडयो कोनी। जीप थाणै मे चली गई, नीचै रा अहलकार रपट वणाई बीरै बोझ ढाई मण री जगा तीन मण अमल लिख दियो। जाण-बूझ'र एहडी रपट बणाई के ओ भाई फसग्यो, ऊपर आळा अफसर नाराज हा ही, ई भाई नै सस्पैंड कर दियो। अण भाई मरो नाम सुण्यो, म्हू ईनै तेरै कनै ल्यायो हू, ईनै सकट स्यू बचाणो है, जे ईमानदारी अया मरसी तो फेर ईमानदार रैसी कठै।

पापा फेर भी इत्ती बात करी—देखस्या, म्हू आई० जी० पी० स्यू बात करस्यू। पापा नै स्वामीजी री बात पर कोई टिप्पणी कोनी करी, देस मे ईमानदारी री बेकदरी पर अफसोस कोनी जतायो, ईमानदारी री सजा पर बारै काळजै मे दरद कोनी उठ्यो, रीस कोनी आई।

पापा फेर बी मोटपार कानी देख्यो, फेर बोल्या—भाई, कानून आंधो है, ईंरै आंख कोनी, जदै ईंरै आख होसी, जकै दिन अन्याय मिट ज्यासी, पण न तो कानून रै आख होवै, न अन्याय मिटै। कानून री निगा में तू तीन मण अमल पकड्यो, आधो मण अमल अण उडवायो, अबै ओ बचै कया, ओ ईमानदार है, ईंरो कोई सबूत कोनी, ओ बेईमान है, ईंरो सबूत है। जद् तनै बेरो हो के लोग म्हारै सैरै लागर्‌या है, तनै सावळचेत रैवणो चाहिजै हो, सावळचेत न रैवणै री सजा भुगतणी पडसी।

फेर पापा स्वामीजी कानी मुड्या—स्वामी जी, आज देस में ईमानदारी अर बेईमानी री लडाई कोनी। राज बेईमान है, आ बात म्हे कया करता, अबै लोग म्हानै बेईमान बतावै। फेर ओ कोई सरकार आ ज्यावो, म्हे फेर बानै बेईमानी म्हे बतावण लागस्या। इण बात न लेयन चाला तो राज एक दिन कोनी चालै। एक साफ सुथरो राज तो 'यूटोपिया' है, पण ओ 'यूटोपिया' भी जीवतो रैवणो चाहिजै, नी तो आदमी आगै कानी बदै। म्हे लोग भी आछै राज री कल्पना लेयन आगै चाला, जनता सुखी रवै, आखै जगत रो कल्याण हो, आ भावना लेयन चाला, पण इण मारू भी कई खोटा काम करणा पडै। आप ऊपर आयन देखो तो आ बेईमानी, ईमानदारी टावरा आळी सी बात लागै, अठै तो शुद्ध 'पावर' री लडाई है। राज कीरै हाथ मे रवै, आ लडाई है। म्हारा शर्मा जी यानी मुख्य मत्री जी आजकाल म्हारै सार्थ जूझणै री चेष्टा मे है। बानै मोटी कुरसी म्हे दिरायी, आप जाणो हो, पण बो आ सोचै, आज इण मसीन रै जुग मे जद् गाडी बिना बळद, ऊट चाल सकै तो फेर राज चलाणै म की दूजै मिनख रो सारो क्यू। बो म्हारै मिनखा नै फाटण लागग्यो, आप कानी लेवण लागग्यो, बो एक ही बात कवै है—ई विरमानन्द कनै काई पड्यो है, ओ तो अडवो है, न तो खावै न खावण दे, राज भी करो अर भूख मरो, आ कुणसी थ्योरी है। चवाचक उडावणी है तो म्हारै सार्थ आओ, लोग तो छाया मे माचो ढाळै, म्हारै कानी क्यू रवै, म्हे थारै कॉलेज सारू बात करी, मूडै ऊ बोल्यो कोनी, बीरो नियत ही कोनी कॉलेज खोलणै री, आप तो एक ही काम करो—बीरी काठी रै आगै भूख हडताल करन बैठ ज्याओ, फेर म्हे जाणा अर म्हे जाणा।

स्वामीजी मुख्य मत्री रै कोठी रै आगै भूख हडताल पर बैठग्या।

स्वामीजी साह मुख्य मत्री री कोठी रै आगै एक तम्बू तणग्यो। आछा पथरणा बिछग्या, तकिया लागग्या, स्वामी जी बठै जम'र बैठग्या। अखबारा मे स्वामी जी री फोटू छपी, भूख हड़ताल रो कारण छप्यो। मुख्य मत्री पर क्षेत्रवाद रो लाछण लाग्यो। स्वामी जी कयो—म्हारो ओ आमरण अनशन है, कॉलेज खुलसी जद ही अनशन टूटसी।

दूजै दिन फेर खबर छपी जकै मे मुख्य मत्री आपरो वक्तव्य दियो। मुख्य मत्री आपरै हलकै मे कॉलेज खुलणै रो कारण बतायो, स्वामी जी री बात नै काटी। मुख्य मत्री स्वामी जी पर हठधरमी रो लाछन लगायो।

तीजै दिन फेर खबर छपी—स्वामी जी आपरी कॉलेज री माग रो कारण बतायो, मुख्य मत्री पर घणा लाछण लगाया, वा अठै तक कहदी रे इसो मुख्य मत्री राज रै लायक कोनी, जको आपरै ही हलकै मे घणकरो पीसो खपावै, मुख्य मत्री आखै राज रो मुख्य मत्री होवै है, एक हलकै रो नी।

कई अखबारा मे स्वामी जी नै एक लूठो समाज सेवी बनायो, बारी पूरी जीवणाण छापी, बारा फोटू छाप्या। इनै स्वामी जी रो नाम चिमकण लाग्यो तो बीनै बारी हालत पतळी पडन लागी। वै नींबू रै रस नै छोडन की कोनी लेवै। बारो भार घटण लागग्यो। स्वामी जी पर एक डाक्टर री ड्यूटी लागगी, वो हरदम स्वामी जी कनै रहवै। पुलिस तो तैनात ही। पत्रकारा री भीड लागी रहवै।

चौथै दिन मुख्य मत्री जी पापा कनै आया। ग पापा पर लाछण लगायो के थे म्हानै बदनाम करणै साह आ काम करायो है। पापा अर मुख्य मत्री तू तू-मैं मैं भी हुई। फेर मुख्य मत्री जी स्वामी जी कनै भी गया।

जकै दिन अखबार इण हड़ताल न लेयन रग्या पड्या हा। हर आदमी रा दोस्त अर दुसमण तो होवै ही, फेर जित्तो मोटो आदमी होवै बीरा बित्ता ही मोटा दुसमण। मुख्य मत्री रा जठै दोस्त तकड़ा हा तो दुसमण भी मैठा हा। अबै मुख्य मत्री री बदनामी रा चोखा बहाना दुसमणा नै मिलण लागग्या—मुख्य मत्री एक भ्रष्टाचारी आदमी है, अण लाखू रिपिया रो धन हडप कर लियो, ओ क्षेत्रवादी आदमी है। अण दूजै इलाका री कीमत माथै आपरै क्षेत्र रो निरमाण करयो अर करण लागरयो है। ओ आपरै क्षेत्र

सागै है। हर आदमी साम्ह मोवण नै जगा होवतो, ओड़ण नै बिस्तर होवता, कई आदमी तो इता घम्ह होग्या हा, याने साही ठेगण पुचावण जावती। मा एक ही बात कैवती—'परमात्मा आपाने आर्ं भाग माम्ह देवै है, आपानै भी मिल ज्यावै है।' मोग रोवता आवता, हसता जावता। अबै पापा रो काम करावणो रो काम भी हलको पड़ग्यो। जको काम पैली धेनसिंह जी करावता, बो काम मा गाम लियो, धेनसिंह जी रैवता पण काम घणकरो मा करावण लागगी।

अबार एक बात आप-माप दीखण लागगी ही के प्रशासन राज पर हावी होवण लागग्यो हो। सारा 'पावर' तो प्रशासन रै हाथ में, सरकार करै तो काई। इयो लागै हो जाणै राज रै हाथ में तो फोन हो, कोई फोन री बात सुणै तो वा भला, नीं सुणै तो नी सुणै सरकार कीरो करै काई राज री नौकर री जड़ पताळ में।

एकर रेखा पापा कनै आई, बोली—'काई करू, म्हारो डाइरेक्टर कयो कोनी मानै।' पापा रो दबदबो तकड़ो। पापा फोन उठायो, डाइरेक्टर स्यू बात करी—'डाइरेक्टर, म्हू बीरमानन्द, बोलू हू।'

पापा नै रीस आवती जद बै मुकारै पर आ ज्यावता, न आगलै रै 'जी' लगावता न आपरै।

पापा कयो—'सुण, तनै बैरो है, ओ राज कीरो है, जनता रो, जनता ई राज री मालिक है, 'तू राज रो नौकर है। जे नौकर मालिक रो काम नी करै तो बी नौकर नै रैवणै रो कोई हक नी। मेरै कनै रेखा बैठी है, वा सिकायत करै है के तू बीरो हुक्म मान्यो कोनी, तेरी इत्ती औकात।'

डाइरेक्टर मइया स्यू पैली पापा स्यू मिलण आयो, रेखा फेर कदेइ सिकायत कोनी करी।

पापा कया करता, इण व्यवस्था में जनता अया ही रोवती कूकती रैवसी, अै नौकर जनता पर राज करसी, मनीस्टर, विधायकां कनै काई है। बै आ भी कैवता—आरो तो ढोळ भी कोनी। आज जनता रा प्रतिनिधि ही बेडोळा है, पच स्यू लेयन केन्द्र रै मन्त्री ताई पीसै रो राज है, कठैई ई व्यवस्था में खाट है।

पापा तो फेर आ मोटोड़ा अफसरा रा कान खीच देवता। एकर एक

सैक्रेट्री पापा री बात कोनी मानी । बा बीनै 'सरपलस' कर दियो, फेर बण छ मीना ताई चक्कर काटतो रयो ।

आ दिना राज रै नौकरा री हडताल हुई, हडताल हुई तो एहडी हुई के आखै राज रो कामकाज ठप्प । स्कूल बन्द, क्चेडचा बन्द, दफ्तर बन्द । दफ्तरा, स्कूला, क्चेडचा मे कबूतर बोलै । चपडासी स्यू लयन बाबूआ ताई कोई काम पर कोनी । अफसर बैठ्या माखी उडावै ।

असेम्बली चालै ही, पापा असेम्बली मे भोत जोरदार भाषण दियो । पापा कयो—आज राज रो नौकर हडताल पर है, बो तनखा बधाणो चावै है, बो भूखो है । बानै बेरो ही कोनी, भूख काई हुवै है । भूख देखणी है तो गावां मे चालो । लोगा कनै बावण नै पूरी-सूरी जमीन कोनी, जमीन है बठै दाणा कोनी । झाझरकै उठै, आधी रात रा सोवै । भूखा उठै, भूखा सोवै । बारै पैरणनै कपडा कोनी, ओढणनै बिछावणा कोनी, टाबर नागा रवै, लुगाया भारया देदे आपरी लाज ढकै । गरमी मे गरमी मरै, सर्दी मे सर्दी, बिरखा बारै डील पर बरसती रवै, न्हाणै-धोणै रो तो बठै जिक्र ही कोनी । नाज नै पाणी रै लगा-लगा खावै । कोई दुकानदार बानै उधारो कोनी दे । सह्या नै कमायन नी ल्यावो तो भूखा सोवो । खेतीखड री आ हालत है के पाच साला मे एक साल जमानै रो होवै, कदे बिरखा कोनी, तो कदे घणी बिरखा, कद ओळा पड ज्यावै तो कदे पवन चाल ज्यावै, आखी जिदगी भूख अर करजे मे पिसीजती रवै, बठै है भूख । राज रो नौकर भूख री बात करै जका रा टाबर आछो पैरै, आछो खावै, स्कूला मे पढै, नौकर अर नौकर री लुगाया पखा रै नीचै सोवै, बारी तनखा पर न ओळा पडै, पवन न चालै । आपा जकी व्यवस्था दी है, ईरै माय पूजी पूजीपति कानी चालण लागरी है, गरीब घणा गरीब होवण लागरयो है । आपणा बणायेडा कानून नौकर री आलमारी मे सडण लागर्‌या है, आपणा हुकम नौकर री फाइल रा मजाक बणर्‌या है, आपणो समाजवाद नौकर री ठोकर मे रूळन लागर्‌यो है । मनै खुद नै ई राज मे रैवता सरम आवै है, बो जात रै सगठन होवै ईंरो मतलब ओ तो कोनी के बीरा ये नाजायज फायदो उठावै । आज नीचै स्यू लेयन ऊपर ताई आ नौकरा रिस्वत री तबाही मचा राखी है, आनै न डर है न आ पर रौब । आठै ताई के आपा भी आरै सागै मिल दोनू हाथा स्यू खावण

लागर्‌या हा, आ जनता थानै म्हानै बक्सैली नी ।

पापा रो भासण अखबारा मे छप्या, ई भासण री भोत चरचा हुई । सगळा ही इण साची बात नै सराही, पण नौकरा री आलोचना पापा रै महगी पडी । नौकर रोज जलूस तो निकालता ही, मुख्य-मन्त्री रो पुतळो जळावता, पण दूजै दिन म्हारी कोठी रै आगै नौकरा प्ररदसण करघो, पापा रो पुतळो जगायो । म्हानै भोत रीस आई, पण जोर कांई ?

कोठी रै आगै पुलिस रो इन्तजाम हो, कई देर ताई पापा रो नाम लेयन—'मुरदाबाद' रा नारा लगाया हाय हाय करी, पण आपता होयन आपी चल्या गया ।

मा बोली— आपा कित्ता आरै दुख म पडा हा, कित्तो आरो भलो करा हा, फळ ओ मिल्यो है ।'

पापा हसन बोल्या—'ओ जनतन्त्र है देवी, अठै तो सगळा ही रग देखणा पडै ।' तू म्हारै साथै कोनी चालै । साथै चालै तो पतो लागै, लोग म्हानै काळा झडा दिखावै, म्हारै ऊपर भाटा फेंकै, एकर तो मनै पाटडै नीचै बडन ज्यान बचावणी पडी, एकर एक मीटिंग म म्हानै बीच मे पुलिस री गाडी मे बैठन भाजणो पडघो ।

हैं, मा रो सास नीचै रो नीचै अर ऊपर रो ऊपर रैग्यो, म्हारो जी तो भोत ही खराब हुया ।

मा बोली — इसी बात है तो बाळो फूको इण जजाळ ने, म्हू तो भाजती भाजती आखती होगी, म्हू तो एकर गई तो दरवाजा बण्या हा, फूल माला घली ही, नोटा री माळा डली ही ।

—हा, तरी बात भी साची है, पण कठै-कठै जूता री माला भी घलैया है, एक जगा तो म्हू गयो तो राम जाणै लोग कठैऊ खूसडा भेळा करन ल्याया हा के बिरखा होवण लागी तो म्हानै गाडी पूठी मोडणी पडी, रस्तो बदळघो जद् नाको लाग्या देवी, ओ राज है, राज म सगळा धधा करणा पडै । पण अबै म्हू भी आखतो होर्‌यो हू, काम री कदर कोनी, हथकडा है, जोडतोड है, तोर-तरीका है, राज मे अबै कुरसी री लडाई है, खीचताण है, उठाव-पटक है, जको मजोरो है, बो रैसी, बाकी जासी ।

मुख्यमन्त्री रा नया-नया हुक्म निकळै, पण नौकरा री हडताल चालू ।

मुख्य-मंत्री एक दिन रेडियो पर भासण दियो जकै मे राज री माली हालत भोत माड़ी बताई, फेर बतायो के नौकरा री मागा स्यू राज रो करोड़ू रिपिया रो घाटो जको राज रै खजानै री सामरथ स्यू बारै। इण वास्तै नौकरा री सोच सही मारग पर चालणी चाहिजै बानै हड़ताळ तोड देणी चाहिजै। फिर मुख्य-मन्त्रीजी गरजन कयो जे नौकर हड़ताल चलू राखी तो राज बुरो वेस आसी --वारी नौकरी खतम करदी जासी। मुख्य-मन्त्री एक तारीख दीनी के बी तारीख नै जका नौकर नौकरी पर हाजिर हो ज्यासी, वारी नौकरी सही, बाकी आपरी नौकरी खतम समझो। मुख्य-मन्त्री रो भासण इसो लखावै हो जाणै नौकरा पर असर पडसी क्यूके राज मे भूख घणी, नौकर री तनखा बदणै स्यू भूख बदसी, नौकरा नै भी रहम आसी, वै आपरी मागा पूठी ले लेसी।

म्हू पापा स्यू बात करी तो पापा नै हसी आगी, वा बात टाळदी।

मुख्य-मन्त्री री थरपेजेडो तारीख आई ही, पण एक भी राज रो नौकर हाजर कोनी होयो, म्हू मन मे सोची—अबै देस मे राज नाम री चीज कोनी। राज रो मतलब को मिनख रो नाम कोनी, राज रो अरथ है राज री हुक्म नी तो राज ही नी। लडाई चाली आ पूरी इक्कीस दिन, राज रो पूरो काम ठप्प। मन्त्री लोग भी घरे बैठ्या माखी मारै। न कोई काम न काज। इक्कीसवैं दिन मन्त्री लोगा नै मुख्य-मन्त्री बुलायो, बातचीत करी, फेर नौकरा रै नेतावा नै बुलाया, बातचीत चालू हुई। पण फेर बातचीत फैल। अबै तो राज आपरै रग मे आयो, गिरफ्तारया चालू हुई, घणकरा नेतावा नै जेला मे दे दिया, कई नौकरा नै जका थोडा दिना रा असथाई हा वानै नौकरी स्यू काड दिया, पण जलूस और तेज होग्या, भासण ओर तीखा होग्या, कठै-कठै हिसा भड़कण लागगी, म्हू समझी—अबै राज झुकैलो नी, पूरो एक मीनो होग्यो, फेर बाता चालू हुई अर इण ही दिन सरकार ढीली पडगी, अण हाथ पादरा कर दिया, घणकरी मागा मजूर होगी, म्हू मन मे करी—ओ क्यारो राज। आज एक मीनै ताई जनता दुखी हुई—छोरा भणीज्या कोनी, दफ्तरा मे काम होयो कोनी, बिजळी, पाणी सगळो सकट ही सकट रह्यो, आ बात तो जकै दिन ही हो ज्यावती, जकै दिन आ माग राखी ही, इत्तो नाटक क्यू।

पापा बतायो—तू क्यू कोनी समझी, म्हू बताऊ।

—काई ?

—मुख्य-मंत्री बदनाम होयो, ईंरी कुरसी हाली।

—पापा, लोग थारो नाम लेवै के थे हड़ताल कराई।

—म्हू तो आरै खिलाफ बोल्यो।

—आ भी राजनीति ही।

—आ म्हारै खिलाफ परदरसण करयो।

—आ भी राजनीति ही।

पापा हसण लागग्या, बोल्या—अबै बेटी, राजनीति समझण लागगी। तेरो मतलब ओ है के म्हू आ नौकरा नै बहकाया, फेर वा हड़ताल करदी, फेर म्हू भासण दे दिया, केन्द्र म्हारै ऊपर वहम न करै, फेर वा म्हारै खिलाफ नारा लगा दिया, वहम सफा दूर होग्यो। आ ही तो बात कैणो चावै है तू।

—पापा, म्हू कोनी कऊ, ओ अखबार कवै है।

म्हू अखबार ल्या दियो, पापा तो जाणै हा, पापा बोल्या—हा बेटा ! आ राजनीति है। म्हू इत्ती ओछी हरकत नी करता, मुख्य मंत्री आ रीस म्हारै ऊपर काडै है वण केन्द्र मे म्हारो नाम भी लियो है, अखबारा मे बदनाम भी करै है, वण म्हारै साथै लड़ाई चालू करदी।

पापा बैठ्या हा, इत्तै मे चपरासी आयन कह्यो— कई गाव रा लोग आप स्यू मिलणो चावै है।

पापा 'हा' करदी।

लोग एक ही गाव रा हा, दस पन्दरा आदमी तो हा ही।

पापा उठन वारी आवभगत करी। लोग नीचै दरी पर बैठग्या, पापा भी दरी पर बैठग्या।

—बोलो भई, पापा पूछ्यो।

वा आपरो नाम ठाम बताओ, बी मे एक सरपच हो, और आदमी हा जका मे दो-च्यार पच हा, बाकी गाव रा मुखिया हा।

वै बोल्या— सा, म्हारै कानी एक नहर रो खाळियो आरयो है। बी मे पैली तो म्हारै गाव रो नाम हो, पण अबै वो मिटग्यो। म्है लोगा पूछताछ

करी तो पतो लाग्यो के एम. एल ए. री महरबानी इसी हुई के बै आपरै एक लवेज मे एक गाव हो बीरै कानी बो खाळियो मुडग्यो अर म्हानै छोडग्यो। एम० एल० ए० साहब कनै पूच्या तो बा वतायो के एक्स० ई० एन० सा'व ओ काम कर्यो है, म्हारो कसूर कोनी। म्हे बी सा'व कनै पूच्या तो बा कयो के बीस हजार रिपिया करद्यो तो म्हू ओ काम करद्यू, नी तो एड करो। म्हे लोग बीस हजार कर देंवता, क्यूके आजकलै मगळो काम लेवा देवी ऊ चालै है, पण गाव मे है पारटीबाजी, पीसो बणै कोनी जद् थारै कनै आया के थे ओ काम कराओ।

पापा बोल्या—थे लोग अरजी लिखन ल्याया हो।

—हा लिखन ल्याया हा।

पापा बारी अरजी ले ली, 'बात करस्या' आ बात कहन बात खतम करदी।

पण गाव आळा रो जी सोरो कोनी हुयो। बा मे एक आदमी कयो—'काई बतावा सा, आप दोरा नी होवो तो एक बात कवा, पैली म्हारै अठै एक पटवारी हो, अबै तो अहलकार भी घणा होग्या, घणी ही रिस्वत होगी।

फेर एक आदमी बोल्यो—ज्यू-ज्यू विकास होयो है, नौकर बद्या है, तो रिश्वत बदी है।

एक आदमी फेर कयो—पैली म्हे लोग जोहडै रो पाणी पीवता, अबै म्हारै अठै वाटर वर्क्स है, म्हे जोहडै ने खतम कर दियो, अबै वाटर वर्क्स मे कदे बिजली कोनी तो कदे तेल कोनी, पाणी री इत्तातरै तोडो रवै।

दूजे बोल्यो—बिजली तो आगी। म्हे चिमनी, लालटेन राखणी छोड दी, अबै रोटी अंधेरै मे खावा हा।

तीजो बोल्यो—म्हारै सासरै मे नहर है, बठै बै आपरै ओवरसीयर अर जिलेदारा री हाजरी मे खड्या रवै।

पापा कयो—विकास होसी बठै नौकर बदसी, नौकर बदसी बठै रिश्वत बदसी, गुलामी बदसी।

जद् सरपच कयो—सा, पैली आपा फक्त राजा रा गुलाम हा, अबै तो पाणी रा गुलाम, बिजळी रा गुलाम, नहर रा गुलाम, गुलामी चौगणी बदगी।

पापा बोल्या—गांधीजी एक बात क्यी ही—मशीन मत ल्याओ, मशीन ल्याओला तो गुलामी ल्याओला।

फेर एक आदमी बोल्यो—म्हारै अठै स्कूल है, पण पढ़ाई कोनी। न मास्टर टेम सिर आवै अर न छोरा।

जद् दूजै कयो—काई है पढाई मे आजकलै, नौकरी तो मिलै कोनी, चाहे बीस पढ़ल्यो।

—अरे पढाई स्यू मिनख तो बणै है, एक क्यो।

—आजकलै पढाई स्यू मिनख बणै है, आ कण कहदी तनै पढाई स्यू छोरो न घर रो रवै न घाट रो। बो तो जत्ता कुलछण होवै सै सीखै। बीनै परणनै चोखा गाबा चाहिजै, खावण नै चोखी रोटी चाहिजै। स्कूल मे पढाई कोनी, ट्यूशन कराओ, रिश्वत देओ, जद् पास करै। सलारा तो बो बदळले है पण आव एक बीनै आवै कोनी। न बो हिसाब जाणै न बो पढ़णो। हिन्दी रो कागद् कानी पढ सकै।

एक आदमी और बोल्यो—म्हे लोगा घोत कोसिस करी के म्हारै अठै रो स्टाफ बदळ ज्यावै, स्यात् पढाई ठीक हो ज्यावै, पण अफसर बोल्यो—काई खोट है बामे ?

—सा, वै पढावै कोनी ?

—म्हू थानै इसा आदमी दे देस्यू, जकै पढावै भी कोनी, दारू पीयन गाव मे हुरळ मचावैला।

—तो आप बारो की कोनी कर सको।

—म्हू काई करू, अफसर क्यो, कोई एम० एल० ए० रो आदमी, कोई मत्री रो आदमी। एक सघ और बतायो, बा काम करण ही कोनी देवै।

फेर एक आदमी बोल्यो—जठै रोब कोनी, बठै राज कोनी, अै अहलकार तो सफा मुफ्त री तनखा लेवै है। काम रा पीसा झाडै है। अहलकारा री आज मोटी-मोटी कोठिया बणरी है, कोई पूछण आळो कोनी।

एक आदमी अठै तक कह दियो—रीस मत करिज्यो, इँ राज स्यू बो राज ही चोखो हो, बठै न्याय तो हो, अबै तो एक बोतळ स्यू मरजी आवै ज्यू करल्यो। पीसै री पूजा है पीसै री, आज पीसो चाहिजै चाहे कित्ती कतल करद्यो, छूट ज्यावो।

अै बाता लोग रोज क्वै, कोई आमें नई बात कोनी ही, पण पापा भोत उदास हुग्या, बेहद उदास होग्या, इत्ता उदास वै पैली कोनी होवता, इसो लागै हो जाणै बारो हौसलो कमजोर पडण लागरयो हो। बा एक ही बात कहन लैरो छुडायो—गाधीजी कैवता, समाजवाद मे नौकरसाही बदसी, भ्रष्टाचार बदसी, रिस्वत बदसी। समाजवाद नैं काम रा करणा है तो पैतृक हक खतम करणो पडसी।

18

गाव स्यू समाचार आयो के दादी बीमार है, म्हू पूछो समाचार करायो रे वै अठै आ ज्यावै, पण दादी कोनी आई। म्हे मन मे सोचो रे कोई ताप सिरवा चढी होसी, गोळी गुटको ले लियो होसी, ठीक होगी होसी। बा बूढा आदमिया रै कोई मोटी बीमारी तो होवैं कोनी, इया ही चालती बीमारया होवैं है—पेट दूखण लाग ज्यावै, जुखाम लाग ज्यावै, ताप चढज्या, देसी दवाई कर लेवै, अजवाण री फाकी लेली, ताप री गोळी लेली, जुखाम नैं तो की समझै कोनी, चीकणो खाणो छोड देवै, छाछ, खाटो कोनी लेवै, लूकी सूकी खावै, इत्तै मे ठीक हो ज्यावै।

पण फेर एक समाचार आयो के बूढळी तो माची झालली, तो म्हानैं फिकर हुयो, म्हे एक गाडी भेजी, गाडी खाली आगी। दादी कुआयो—'चिन्ता मत करो, ठीक हो ज्याऊली, नी होऊली तो कोई बात नी, म्हारा काई अबै लाव जेवडा वर्ण है, म्हू तो अठै ही हाड नाखूली।' दादी कोनी आई। पण आदमी बताओ—'बूढळी कोनी आवै, बीया बारी सेवा करण आळा घणा है। बा तो एक ही बात क्वै है—'म्हू पराई धरती मे क्यू मरू, मरूली तो अठै ही मरूली।' बा पूरी जिद्दण है बा कोई नी आवै।

मा बोली—काई करा, वै तो कोनी आवै, म्हारो जावणो होवै, तेरै पापा नै एक मिनट री वेल कोनी। म भी जावण रा

म्हारै बालगोपाल होवण आळो हो। सातवों मीनों लागण त्यार होग्यो हो।

मा नै बोला फिकर होयो, पण मा नै कोई पूछो सी मरणै री वेल कोनी।

मा पापा नैं भी कयो पापा तो उदास होग्या, फेर बोल्या— मा मरै कोनी, भोग करड़ा हाड है। तकर तो वा ठेठ जायन पूठी आ गई है।

मा मन म करती— राजनीति री आ साकळ तड़ही गढ़ मे पली है बे नीकळै ही कोनी, आज म्हारै माय क्यू काई नी पूछसी तो लाग काईं कैसी, ऊमर भर कोनी जीवण देसी।

मा भात इगी सोचती, आगैं रो सोचती, पापा रो नजरियो और हो बां भाऊ तो अै कोई बात ही कोनी ही, लोग काई कैसी? आ बात तो बा कदे सोची ही कोनी हा, 'लोगा नैं काई करणो चाहिजै, काई सोचणो चाहिजै', आ बात ही बारै माथै मे, बै नई लीक माडणै री फिकर राखता, मा लीक नैं छोडण त्यार कोनी ही, फेर भी दोनू एक साथै चालता अर कठैइ बा मे फरक कोनी आयो।

दादी नै दिन आया मरणो हो अर बा मरगी, बी वक्त पापा एक जगां भासण देवै हा, मा आयेडा विधायका री खातरी मे लागरी ही म्हू आठ मीनैं रै पेट रै टाबर नै सेवणै मे सूनी ही, दादी कनैं कोई कोनी पूच सक्यो पण कोई काम बाकी कोनी रयो, बीनैं लोगा नेम स्यू न्हायो भी, बीरो कफन भी ल्याया, 'राम-राम सत् है, कहन मुसाणा मे भी लेग्या, बीरो दाग भी होयो, पण बीरै आगै दडोत करण आळा पोता कोनी हा, लाय लगाई जद् मा कहन हेलो मारण सारू कोनी ही, बीरा हाड चुगन गगाजी जावण आळो कोनी हो, बारा दिन ताईं घरे रोवाण आळा सारू बैठण आळो कोनी हो, लोगा तो आ ही कही होसी—'*इसैं मोटै आदमी री मा कुत्तै री मौत मरगी। ईंरै लारै काई कोनी हो, बेटा, पोता, राम जी री दीन लागरी हो,* पण विरमानन्द आपरै मोटापै मे धूळ गिरालो। मा आ दिना जेहड़ी दुखी ही कें, पूछो मत। पण एक ही बात कयी—'अै दिन सदा कोनी रैसी, एक दिन आ चमक-दमक जावणी है, लोगा री जामा वगै है, राजा रा राज चल्या गया, आ तो मागेडो चीज है, कित्ताक दिन रैसी, पण फेर लोग न

मनैं बोलण देसी, न मेरै टाबरा नैं। आ काई हुई, बूढळी रो जमारो भूंडो जग्यो, ओ राजनीति रो हाड एहडो गळ मे घल्यो है के घर री रीतिनीत नैं भी भूळग्या, दुनिया रो आपो तो आडो आसी रे नी, पण इण आपै नैं बिसरा दियो, पीढिया नै दाग लागग्यो, अबै कीनैं मूडो दिखास्या, आपणं काई कोनी, सगळा रा ही पीर सासरा, भाई, कुटम्ब कबीलो है, सगा, सरीका है, सरीकी क्या बालण देसी। मूडो लुकान कठैही कूट मे मला ही पडया रइयो, जीवणं रो ढग तो है कोनी।'

पण पापा तो मा री मौत नैं भी दर्शन री डोरी मे पिरोली, पापा तो मोटा आदमी हा, बा रो मूडो कुण पक्डै, मा भी बारै सामै इत्ती दबरी ही के बा भी बारी 'हा' मे 'हा' तो कोनी मिलाती, पण बारी बात नैं उथळणं हिम्मत कोनी ही।

दादी तो चली गई, पण दादी री बात भी च्यार दिन चालन चली गई, इण घरती री आ ही आदत है, आ मिनख भखणी है तो मिनखा री बात भखणी भी है। आ इतिहास रा इतिहास गरागाप करगी, आ तो बात ही काई ही। दोना मीना पाछै ही म्हारै नानियो होग्यो, नया रगचाव सरू होग्या लारली बात खतम होगी।

पण आ दिन पापा घणा रीसाणा होवण लागग्या। हरेक पर झ्याई लेवण लागग्या। आयै गए सागै भी वारो बरताव आछो कोनी रयो। वै ज्यू-त्यू हरेक रै गळै पडण लागग्या।

पैली पापा म्हा सगळा रै बीचै बैठना, हसता, बोलता, मस्त हो ज्यावता, पण अबार तो वै न्यारा ही आपरै कमरै मे बैठया रैवता, एकला बैठ्या रैवता, रोटी भी वठै भी मगा लेवना, मूडो काळूटण लागग्यो, बारा हसोडपणो पतो नी वठै चल्यो गयो। बाम्यू बोलणं री हिम्मत कोनी होवती। बास्यू अबार डर लागण लागग्यो।

म्हू मा नैं पूछ्यो—मा, पापा रै काई होग्यो?

—हो काई गया, आजकल मुख्य मत्री अर तेरै पापा मे खटपट चदरी है। एम० एल० ए० जका तेरै पापा रा हा, वै आनै एक-एक कर छोडण लागरया है।

म्हानैं भी फिकर होयी, म्हू आ दिना हेमराज नैं कोनी देख्यो जको

इतो भलो आदमी हो जकै रै गोळी लागी तो पापा खून दियो हो। कोडाराम रुळीचद, भागीरथ, मनीराम, फूलचद बा माय स्यू एक ही कोनी दीखै।

म्हू फेर एक दिन मा नै पूछयो—'मा पापा रो सुभाव खराब होग्यो, जद् पापा नै लोग छोड्या।

—नी बेटा, मा बतायो, मुख्य मत्री शर्मा एम० एल० ए० रै कान मे एक मतर पढ़ै है। टैम है, निक्ळ ज्यासी, वक्त चूकग्या तो पछताओला, मेरे साथै आओ, सोनै अर चादी साथै खेलो, भूख साथै रैवणो है तो बीरमानन्द कनै जाओ। वानै रिस्वत, तस्करी सगळी छूट दे दी, खूब खाओ खूब लगाओ। त्याग-प्याग मे की कोनी पड्यो। जका अठै लटूरिया करता, बा मे एक ही कोनी।

एक दिन पापा चौक मे बैठ्या हा, सामै भी लोग बैठ्या हा। पापा उदास हा पण हा शान्त। सामै रा लोग भी बात, शान्ति स्यू सुणन लागरया हा। पापा कयो—दुनिया मे दो ही कौम है— गरीब अर अमीर। अमीरा कनै धन है, धन स्यू वा सगळा मिनखा रै मानस नै गुलाम बणा राख्या है। अमीर आपरै ढग स्यू लोगा नै सोचण समझण री अक्ल देवै है क्यू रे वारै हाथ मे प्रेस है। वा सोचण समझण आळा मिनखा नै भी आपरा गुलाम बणा राख्या है। गरीब कनै धन तो है ही कोनी। वारी अकल भी अमीर रै हाथ मे है। जे कोई गरीब रो नेता बणनै री सोचै बो मिण्या दिना मे भात खावण रो जुगाड बणा लेवै है। अमीर कम है, गरीब घणा है, पण बहुमत अमीरा कनै है। अमीर राज कोनी करै, पण राज करावै है। म्हू मुख्य मत्री शर्मा नै आपणो आदमी समझ्यो, बीरो सोचणै रो तरीको गरीब हित मे हो पण बो भी अमीरा रै धडै मे चल्यो गयो, बण आपणै आदमिया नै भी धन रो टुकडो दिखान आपरै हाथ मे ले लिया, अबार शर्मा मोटै अफसरा नै कँय दियो के बै बीरमानन्द रो काम न करै, अबै म्हारै कनै तो कुरसी है, राज कोनी, पतो नी आ कुरसी भी छाडणी पड ज्यावै।

पापा एक लाबी सास ली, सामै बैठ्या लोग मौन हूया बैठ्या रह्या।

पापा कदे दफ्तर जावै, कदे कोनी जावै, दौरै पर जावणो भी कम कर दियो, जको चौगान मिनखा स्यू भरयो रैवतो, बठै अबार छीड पडगी।

पापा स्यू लोग मिलण आवता, पण वै और भात रा हा, कई मोटै पगड

रा, कई पागडी आळा, पण वैं पापा री पार्टी रा कोनी हा ।

पापा तो बात कोनी बतावता, पण अखबार पापा रैं मन री बात कैय देंवता। अखबार बोलता—मुख्य मंत्री अर बीरमानन्द मे टकराव, बीरमानन्द गो विरोधिया स्यूं सम्पर्क।

पापा अबार काई करैला, पापा राज छोड देसी, कुरसी छोड देसी, फेर काई होसी ? राज रा तो रंग न्यारा ही होवैं है, अै रंग एक झटकै रैं साथै चला ज्यासी।

आ दिना देस रो माहौल ही बहकरचो हो, चौखा-चोखा पार्टी रा नेता पद छोडण लागरघा हा। बैं देस मे बापरेड़ै भ्रष्टाचार स्यूं बेहद परेसान हा।

एक दिन पापा रैं मूडै स्यूं निकळी—म्हूं ईं शर्मा नैं लो रा चीणा चबार छोडस्यूं घर तो घोसियो री ही बळसी, पण सुख ऊदरा ही कोनी पावैला।

जद् एक साथी कयो—'थे कदेइ पारटी मत छोड दीज्यो, थारा बैर शर्मा स्यूं है, पार्टी स्यूं कोनी।'

पापा कयो—मिनखा स्यूं पार्टी बणैं, जे मिनख माडा होवण लागज्या, तो पार्टी बीचारी काई करैं, जी घर मे बास आवण लागज्या, अर बास नीकळै कोनी, तो बो घर छोडणो ही आछो।'

बो साथी सोच समझ बोल्यो—'कदम उठायो तो आछी तरिया सोच समझ लीज्यो, राजनीति तो एक खेल है, दाव मे चूकग्या तो हार मे आ जीस्यो।'

पण पापा अबार खासा रीसाणे हा, बनै की कोनी दीखतो, शर्मा ही दीखतो, वैं शर्मा नै ढावणै री जोड-तोड मे लागग्या, चाये बानैं की करणो पड़ै, पापा रो काळजो जगा छोडग्यो हो, वैं जाड भीचता ही रैंवता। पापा रो दाव आज ताई खाली कोनी गयो, म्हे अबार देखण लागरघा हा।

चुनाव री तिरचा चालण लागगी, आम जनता खासा परेसान ही, लोगा रा काम होवता कोनी, होवता तो पीसा लगान होवता, जगा-जगा जूता फजीती, कठैई मिनखां नैं चैन नहीं। महगाई आपरा पाखडा पूरा पसार राख्या हा, अराजकता बदरी ही, विरोधी लोग जनता पर हाबी होवण लागरघा हा, लोग कैंवण लागग्या—'इण सुहाग स्यूं तो रंडापो ही आछो। राज तो पैंली आळो हो, ... हो, अबार तो पीसा देवो,

पार ऊतरो।'

पापा केवण लागग्या हा—'ओ शर्मा मह में बैठनो मड़का मरै है, जद जनता रै सामी आवैलो, जद पतो लागैलो।

पापा अबार दिल्ली रो दौरा घणा सरू कर दिया, कांई करता, कीस्यू मिलता, पतो कोनी लागता दो चार दैयन पैरे आवता, एक दिन चाण चकै रेडियै स्यू खबर आई—केन्द्र रै एक मंत्री ध्यानण सिंह मंत्री पद स्यू अस्तीफो दे दियो, वण पार्टी स्यू अस्तीफो दे दियो दूजी पार्टी रो गठन कर लियो, बीरै साथै हजारू कार्यकर्त्तावा, नेतावा पार्टी स्यू अस्तीफो दे दियो, अखबारा में ईंरो भारी स्वागत होयो इसो लागै हो जाणै देश अबार बदलाव चावै हो, चीज चाहे आछी हो या माडी, छोड पडी भारी लागै, बदळनो तो चाहीजै ही, सत्ताधारिया रै को 'अहं' भी घर करग्यो, म्हानै पडगी जकी बाड में बडगी, हर मिनख न रै ओ सोच बडग्यो—आनै तो बदळो ही।

जकै दिन पापा री मूढो चैळकै हो मिनखा री भीड़ भी घणी बदी, पण अबार जका मतलबिया आवता, बै आवण ही बद होग्या या भीड़ री चाय अबार कोनी बणती, भीड़ आळो डावो भी अबार माठो पडग्यो।

इनै शर्मा एक झटको और दियो—चुनाव सारू जको समिति बणणी ही, बीरै माय पापा रा आदमी कोनी लिया, पापा रो नाम राखणो जरूरी हो। पापा नै पतो लागग्यो कै अबै आ तिला में तेल कोनी।

19

थोडा दिना पाछै एक दिन म्हे चाय पीयन उठ्या तो अखबार आळो अखबार देग्यो, म्हूं अखबार उठायो तो पड्यो, म्हानै भोत अचभो हुयो। अखबार में पैलै पेज पर मोटै आखरा में पैली खबर छपेडी ही—विरमानद रो पार्टी स्यू अस्तीफो, मंत्री पद स्यू अस्तीफो, बारै साथै हजारू कार्यकर्त्तावा रै

अस्तीफै री बात, साथै तीन मन्त्रिया रो भी अस्तीफा जकै मे रेखा रो नाम बास हो। पापा चार दिना स्यू दिल्ली मे हा।

म्हू मम्मी नै हेलो मारचो—अर खबर पढन सुणायी, मम्मी रा होठ सूक्या, आंख्या मे पाणी आग्यो, आंख्या नै पूछती बोली—आ तो दीखै ही, बेटा। थारा पापा बोळी बाता मे जिद्दी है, चढती हाडी रै ठोकर मारै है, अबै पतो नी काई होसी, अै मानै कोनी कीरी। म्हू तो कयो—तनै काई लेणो देणो, रोटी खाय अर मौज कर। काई कष्ट हो, मौज होरी ही, शर्मा कोई लाट सा'व है, दोनू बणाय राखता, मौज करता, पतो री, अबै काई होसी। मा सीधी भगवान् कनै गई, आचल पसारन रोवण लागगी। स्यात् वा दुआ मागै ही पण वगत बदळै तो बो भगवान् रै भी मारै कोनी रवै।

वगत बडै वेग स्यू बदळयो, पापा नई पार्टी बणाई, पापा रै साथै विरोधी लोग भी आ जुडया। पैली रा लोग अबै कोनी रह्या, नया नया लोग आवण लागग्या, भीड ओजू सरू होगी, पण अवार भीड ओर तरिया री ही।

चुनाव सरू, पापा रा तूफानी दौरा सरू। पापा जनता मे भोत लोकप्रिय हा, ईंरो अदाजो म्हू एक भीड मे देख्यो' लाखू आदमी, भीड नावडै कोनी। शर्मा आपरो ताकत अजमावै, पापा आपणी। सघर्ष भोत जबरो। चुनाव काई हो, एक जुध हो, कुरसी खातर जुध, राज सारू जुध।

एक दिन जुध तो बन्द, वोटा री गिणती सरू, पापा अर पापा रै साथिया री पार्टी बहुमत मे, सत्ता रा पार्टी अल्पमत मे। जकै दिन पापा अर पापा रा मोटा-मोटा साथी, म्हारै अठै मिल्या अर लडन बारै निकल्या, अबै मुख्य मन्त्री कुण बणै आ लडाई सरू अर सरू म ही लडाई करन उठग्या, इत्तै मे एक समाचार मिल्यो के आरी पार्टी रा चार आदमी शर्मा तोड लिया, बानै एक एक लाख रिपिया दिया। पापा आळी पार्टी शर्मा री पार्टी रा पाच आदमी तोड लिया। म्हू सुणी के अवार राजनीति भी बडी अजीब खेली गई। विधायक अर नेता भी आपरी पार्टी सारू वफादार कोनी हा। हर उम्मीदवार आप-आप री चाल पकडी। पापा घणकरा सत्ता आळी पार्टी रै उम्मीदवारा नै भी मदद करै हा, आ बनै गहरी चाला ही। पण आरी चाल पार पडी कोनी।

बात अया हुई के राजपाल शर्मा नैं राज बणाणै सारू बुला लियो, तरक हो के बैं सगळाऊ मोटी पार्टी रा नेता हा। फेर तो जनता में घणो रोष ऊफण्यो, चुनावां में बहकायेडा मिनख हिंसा पर उतरग्या, जगा-जगा प्रदर्शन अर तोड फाड, आसूगैस, लाठीचार्ज अर आखर सेना बुलाई गई अर उमडती भीडा पर गोळ्यां चाली जकै स्यू घणा आदमी मर्‌या अर घणकरा घायल होग्या, दूजै दिन ही राज में राष्ट्रपति शासन बणग्यो।

जकै दिन ही स्वामीजी आग्या। आपरी झोळी झडा नाकै मलन बैठग्या, पापा भी आग्या। स्वामीजी बर्तै बैं ही बाता—अरे बिरमानद, थ म्हे एहडो राज सारू तो जेळा कोनी भोगी ही। लोग लडै ज्यू कुत्ता लडै इणैं ही कहवै है आपणो राज।

पापा तो पैली स्यू ही निरास हा, बोल्या—म्हे लागा तो गिणं दिना मे ही पोत दे दियो।

—बात तो पोन आळी है, चुनाव तो होया ही करै है, चुनाव में जकी बाता सुणी, है भी माडी, फेर दळबदळ री बात और माडी, बीरै बाद राजपाल रा बात बीस्यू भी माडी, फेर जनता रो नाटक सगळाऊ माडो अर अबार गोळी बारी धाप'र माडी। दोष कीनैं देवा, राजनीति जनहित म कोनी, आप हित होग्यो। म्हारै माथै म तो आ जचो कोनी।

—जची तो कीरै ही कोनी, स्वामीजी, पण जनतन्त्र रा तो अै ही नाटक होसी, कीरै बस रा कोनी, हर व्यवस्था मे अपणी आपणी खामी है, अै खाम्या दूर कोनी हा सकै। पापा स्वामीजी नैं बतायो।

स्वामीजी फेर बात मोडता थका बाल्या—पण अबै आ बता के आगै कया होसी, राज कीरो रैसी।

—राज शर्मा रो, पापा क्यो।

—पण बहुमत तो थारै कनै, फेर शर्मा रो राज कया। स्वामीजी पूछ्या।

पापा बतायो—अबै राष्ट्रपति शासन स्यू शर्मा नैं पूरो मोको मिल ज्यासी, बो म्हारा आदर्मा मजै स्यू तोड लेसी।

—ओ काम थे लोग भी कर सको हो।

—बा मनै केन्द्र री ताकत है, अबै अठै राज केन्द्र रो है फेर म्हे लोग

एकमत भी कोनी। म्हे लोग म्हा'गे मुख्य-मन्त्री भी कोनी बण सक्या। न बणा सका।

20

बात पापा री साची हुई, एक मीनैं पाछैं राजपाल विधान-सभा रो अधिवेशन बुलायो, शर्मा कनैं इक्कीस आदमी वदग्या। पापा रा घणकरा आदमी शर्मा साथै चल्या गया। कीनैं ही मनीस्टरी रो लालच, कीनैं ही और पद रो लालच अर कीनैं ही पीसा रो। कया नैं पीसा अर पद दोना रो लालच रेखा, खडगसिंह, कोडाराम, हुकमचन्द, धर्मसिंह जका पापा रा ऐन नेडा हा, वैं भी शर्मा साथै जा मिल्या। अबैं तो पापा बेहद उदास रैवता, बारै कनैं कोई काम कोनी ही। तार, सतरी, पैंरा तो पैली ही चल्या गया हा। न कोई आवता, न कोई जावतो। काग बोलै, कुत्ता घुसै।

पापा कनै कोई काम कोनी, कदे बै बारै छप्पर मे बैठ ज्यावता, कदे ऊपर आपरै कमरे मे चल्या ज्यावता, कदे नीचै म्हारै कनै आया दो चार बात कर लेवता। मूडै पर जको चैळको हो बा अब अबै उतरण लागग्यो। बा एक तास री जोडी मगवा ली ही, बा बै आपही खेल लेवता। कदे बै मनैं बिठा लेवता, म्हू बानै साथ देवती। म्हू कदेई राजनीति री बात बास्यू कोनी करती। म्हू जाणती, पापा नैं इण बात स्यू ही बारैं घाव नैं उजेडणो है।

मा म्हास्यू बात जरूर करती। मा कनै अबै काम कोनी हो। मा कैंवती—कित्तो करती, कदेई थकेलो कोनी आयो, अबै पतो की काई बात है, थोडो सो काम करता ही शरीर थकेलो मान ज्या है, जाणै गोडा टूटग्या।

मा ठीक कैंवती। मा पर बो हौसलो कोनी रयो। मा अबै काळी पडण लागगी, सरीर कमजोर पडण लागग्यो।

मा रै कदे कदे आसू आ ज्यावता। कैंवती—'मालक कै तो आछा दिन

दिखावैनी, कै खोसै री। बात सच्ची ही, पतो नी, म्हा लोगा काई पाप करयो के परमात्मा म्हारा आछा दिन खोस लिया। कित्ती भीड रैवती कित्ता लोग मीठा बोलता, गाडया, जीपा री कतारा लागी रैवती। व लोग कठै गया, क्यू कोनी आवै।

दिन मे एक-दो चोखा आदमी जरूर आवता, म्हानै भोत खुसी होवती मा बडै चाव स्यू बारी चाय बणावती, मा रो बडो जीसोरो होवतो। जद् आवता, जद् मा कैवती — आप घणा दिना स्यू आया, आया करो, आरो भ जी लागज्या।

वै कैवता— काई करां, टेम ही कोनी मिलै, टेम मिलै तो जरूर मिल हा म्हारै आस्यू मोटो गुण है।

मा मन म करती – 'पैली म्हानै टेम कोनी हो, अबार थानै टेम कोनी बगत-बगत री बात है।'

एक दिन चौगान मे बैठ्या हा एकला ही, मा मैं अर पापा। म्हू पापा नै सक्ती सी कयो—पापा, आपा पार्टी न छोडता तो ठीक रैवता।

पापा हसन बोल्या—'स्वराज, सवाल पार्टी रो कोनी, सवाल सिद्धात रो है। म्हू तो जकै दिन ही हार चुक्यो हो जकै दिन केन्द्र म आपणा आदमी कमजोर पडग्या। तू इण बात नै कोनी समझै। ऊपर भी पूजी री लडाई है, नीचै भी पूजी री। दुनिया मे भी पूजी री। देस आजाद हुयो, बा विदेशी पूजी अर देसी पूजी री लडाई है। अबै देस म पूजी री लडाई। म्हे लोग तो बा लोगा री कठपुतळी हा, बारा नचाया नाचा हा। वै लोग जिया देस नै नचावै नाचणो पडै।'

म्हारी बात नै पापा हसी उडाई के म्हारै सामै कोई सवाल ही बाकी कोनी रयो, इण पूजी री लडाई नै तो पापा समझै हा, म्हू तो कोनी समझी न समझणै री चेष्टा ही करी।

म्हू पापा नै जिसी म्हारी अक्कल ही बीगी फेर बात करी, पण मा कैय बैठी, 'तरा पापा तो जिद्दी है, ई शर्मा सागै न बिगाडता तो बात इत्ती कोनी बिगडती।'

पापा फेर समझावण लागग्या—'तू भी बात नै कोनी समझै, म्हू शर्मा स्यू म्हारै सिद्धाता रै मुजब काम करावतो, ऊपर रा लोग आपरै सिद्धाता

मुजहब काम करावता, जे शर्मा म्हारी पार्टी साथै रैवतो तो बीनै जगा कोनी ही, म्हारै साथै बो भी रोवतो फिरतो, चलो, आपणो पुराणो साथी तो है ही राज मे, विरोध मे है तो कोई बात कोनी।'

मनै एक बात और सूझी—पापा रेखा भी आपा नै छोडगी जकी आपणै इत्ती नेडै ही, हुकमचद भी छोडग्यो जका थानै देवता री तरा मानता।

पापा फेर हस्या अर कयो—तो तू बेटा, औजू बोनी समझी।

पण मा बीच म ही बोली—बा राड तो हरामजादी निकळी।

पापा बोल्या, तू गाळ काडै, मेरी बात पूरी होवण देती, बेटा, बा आपा नै छोडया कोनी, आपा ही बानै छुडाया है।

—है, मनै पापा री बात पर अचभो हुयो।

—'है' मत कह, बेटा, म्हू ही बानै राज मे बाड्या है, पार्टी छुडायी है, नी तो आपणो कोई कोनी हो, बारै बैठ्या माखी मारता रैवता। आपणो अड्यो काम सरै, आपणै ऐन नेडै आदम्या री अड्यो काम सरै, नी तो राज आपणो पीच'र पाणी काढ नाखतो। हा, अबार, आपा जनता री सेवा नी कर सका। अबै त्याग री राजनीति कोनी रयी, स्वारथ री राजनीति है, आ परम्परा ठेठ बणी रैसी जद् ताई जनतत्र है, फेर आगै बदा तो कह सका हा, जद् ताई ई हाडमास रो बणेंणो मिनख है।

मा फेर बोली—'जे आ बात है तो बै आपणै घरे तो कोनी आवै।' मा अबार रीसाणी ही। मा फेर ऊफणी—म्हानै सगळी बाता याद है, बो है न हरगोविन्द जको दिल्ली मे मनीस्टर बण्यो बैठ्यो है, आपणै घरे रोज मरतो, म्हारै हाथ री रोटी खावतो, माताजी, माताजी करतो लैरै लैरै फिरतो, बो अठै घणी बार शहर मे आवै, एक दिन ही घरे कोनी मरै, माताजी मरगी के जीवती है, दुख-सुख री पूछण कोनी आवै, बीनै अवै उद्घाटन भाषण, चाटण स्यू ही वेल कोनी मिलै, बीनै थे ही राजनीति मे ल्याया हा, बो फिरतो खुरडा घीसतो—वकील सा'व हा थै, टाबरा नै बगत सिर रोटी ही कोनी मिलती, म्हानै ठाव है।'

—आ रेखा नै पापा ही मनीस्टर बणायी, बा मास्टरणी ही। म्हू कयो।

—ओ हुकमचद काई हो, मा कयो, कठै ही नौकरी मिली कोनी, पापा रा जूठा बरतन चक्या करतो।

—बो कुरडाराम, म्हू बोली, पटवारी हो।

—पटवारी कठै हो, मा बोली, पटवारी रो बस्तो चक्ण आळो। किसा नाम गिणाऊ। कोडाराम, धर्मचद, नाथूदास, रामजीलाल जका आपनै राजा स्यू कम कोनी समझै।

पापा सगळी बाता सुणता रया, फेर हस्या बोल्या—क्यू जी दोरो करै, कुण कीनै ल्यावै, कुण हटावै है, समय रा फेर है, आपणो टेम इत्तो ही हो निवळग्यो। राजा लोग जका रै फूक स्यू घास बळ्या करतो, जका जन्म स्यू मखमली गद्दा पर लोटया करता, आपा तो हा काई, याद कोनी, बो बच्चो-कोठो, मा आळी चीक्र, बाडा आळी बाड, एक सीग आळी गावडली, दिन उगता ही रात आळी राबडी, आथणगै मागेडी छाछ री बट्टी।

पापा मा रो भाजनो सो ले लियो। मा तो चुप होगी, पण पापा फेर बोल्या—ओ राज तो जनता रो है, सगळा नै ही मोको मिलणो चाहिजै। आपा कोई ठेको थोडो ही ले राख्यो हो, जका राणी रै पेट स्यू पैदा होया करता, बै ही कोनी रया, आपणी तो औकात काई ही।

मा एक लाबी सास ली, बा आ दिना घणी फीकी रैवती, पापा बीनै को धीरज बधायो। पापा मे आ खूबी ही कै बै जीसो आदमी देखता, बीसी ही बात कर लेवता। बारो कदे-कदे सगळियो आवतो तो बै हसी ठठ्ठा पर उतर ज्यावता तो इसा लागता जाणै बै ऐन साधारण मिनख है, पण जद कोई विद्वान आवतो तो बै दार्शनिक बण ज्यावता। राजनीति आळै स्यू राज री बात करता तो घर आळा स्यू सुख-दुख री।

पापा फेर बात नै मोड दे दियो, बोल्या—बोल, तेरै लाडलै रो काई हाल है।

—बो तो क्रिकेट खेलण गयो है।

—ओ क्रिकेट ही खेलै है, की पढ़ै भी है।

—बिना पढे बी० ए० क्या करतो, मा क्यो।

—म्हूं तो बीनै पढता कम देखू हू।

—पढै तो है, पापा, म्हू क्यो, दिनगै चार बजै उठै, आपी चाय बणावै,

फेर पढे ।

—स्वराज, तेरो मकान कित्ताक दिना मे त्यार हो ज्यासी ।

—थे काल देखन आवान, पापा, अबै तो देर कोनी, घणै ऊ घणा दो हफ्ता ।

इत्तै मे एक कार आई, कार मे दो आदमी हा, दोनू गांव रा आदमी । बै ऊतरचा अर पापा स्यू नमस्ते करी । बै दोनू ही पार्टी रा आदमी हा ।

म्हे लोग उठ्या । मां बेगी ही चाय बणान चली गई ।

मा री बाण तो बा सागी ही रयी । बा लोगा बई देर ताई बात करी, फेर चालण लाग्या जद् मा बाही बात कयी—आया करो, सभाळ्या करचो ।

बै बोल्या—काई बतावा, माताजी, सपनो साचो कोनी होयो, हाथ मे आयेडी लाव नीसरगी, नी तो बताता, राज काई होवै, ऐहडो राज ल्यावता के लोग याद राखता, अबै तो है काई, बै ही नाळिया, बा ही मडाघ । जनता रा भाग माडा है, जनता तो घणो ही साथ दियो, पण पार कोनी पडी । मर्टै रो ढोकै डाग न फाडै, पण बानै भी म्हे चैन री सास कोनी लेवणदया । अबै एक आन्दोलन छेडाला, वारी काई औकात है, धरती हाल जिसी, बस आरो साथ चाहिजै ।

—बस, एहडी बात करो, म्हारो जी सोरो होवै, मरज्याणा जनता रै खून स्यू सीचन सिहासन पर बैठ्या है ।

पापा फेर हस्या—हा, भाई, इसी बात सुणाया करो, ईरो जी टिकै आ तो दिन-दिन सूक्या बगै है, सूखन खेलरो होगी ।

बा दिना ही चैनसिहजी आग्या । चैनसिह काळै ढैरै बरगा होरचा हा । कै तो बारो काधो मच्यो रैवतो, पण अबै नाड निवळरी ही ।

माताजी आवता ही पूछयो—कवर साहब, ओ काई ?

—माताजी, बस भाई,जी रो राज काई गयो, म्हारो डोळ विगडग्यो, फेर चढ़गी ताप, ताप स्यू बणग्यो अजार, अबै की ठीक होया तो मवार उठन आयो हू ।

—अठै तो कोनी हा थे । मा पूछयो ।

—गाव हो एक मीनै स्यू, अठै काई करतो । फालनू

खरचो लागतो, सोच्यो, मिल आऊ, सायसगळिया ऊ, भाई सा'ब ऊ, माता जी ऊ।

—आछो काम करचो, म्हू तो सोचती, अबै कुण आवै, चैनसिंह ही छोडग्या, सेठ रो तो पतो ही कोनी।

—सेठ तो थारै साथै लागरयो है, चैनसिंह बताओ, वाणियो है, स्याणो हुवै है वाणियो, आपणै जिसो वावळो थोडो ही हुवै, चालता ही तैश मे आयन चडी हाडी रै ठोकर मार देवा।

—ठीक क्ही, चैनसिंहजी, देखो थारै भाई सा'ब, आही तो करी, देखल्यो सगळा ही मौज रै भेळै जा मिल्या, म्हे ही बावळा निकळ्या।

—भाई सा व तो एम० एल० ए० ही कोनी रह्या। लोगा नै वणाया।

—आ कोई अक्कल री बात ही, चैनसिंह बोल्या, म्हू कयो भी, थे पार्टी मत छोडो, चलो, शर्मा स्यू लडाई है तो पार्टी नै माय बैठ लडता रैस्या, फेर लडाई क्यारी ही, आखर आपा अगलै नै चीफ मिनिस्टर बणायो है, कीं तो आपरी चलावै ही, की आरी भी चालती रैवती। गरीब वानी कोनी देखैं ओ तो, ओ त्यो ओळमो। अबै साची बताओ, माताजी कित्ताक गरीब थारै कनै आवै अबै। छोडग्या।

मरज्याणा, फोरो ही कोनी खावण देवता, म्हू वा खातर रोटी वाणी मूलेडी ही। एक देक्चो चाय रो चढावती, मेरै खातर ही कोनी बचती, एक हाडो भरन रावडी रादती, म्हू तो बिना रावडी रैवती, अबै पतो नी, वै कठै मरग्या।

आज राज आ ज्यावै, माताजी, भूड सा सै ओजू मेळ हो ज्यासी। इत्ता मतलबिया है लोग, माताजी, सिर भी थारो मोगरी भी थारी। म्हू तो देख राख्या हा, भाई सा'ब कया रा भरचा पडया है म्हू कैवतो, सोचन चातो, था दुनिया बडी दुरगी है। अबै थानै दीखै है कोई गाडी री लीक। की तो, भाई सा'ब नै आधी रात नै उठा लेवता। कैवता, म्हानै प्लेन पकडनी है, बात कराओ। मेरी भी अक्कल काढ लेवता।

—म्हारी तो निकळेडी ही।

—थे तो थे ही हो, माताजी, थारै की क्वो, थारी अर भाई सा'ब री होड कोनी होवै। पण दुनिया कानी देखा तो भोत जीदोरो हुवै। म्हानै याद

है, माताजी, म्हू लोगा रा बडा काम कराया, भाई सा'ब नै कंवणी स्यू । घर स्यू खरचो लगायो। गरीब है बिचारा, पण अबै जद् वोट रो टेम आयो वै लोग दूर खड्या मिल्या। म्हू कयो—रै थे काम साम्ह म्हारी खोपड़ी खायी, वोट आळै वेळै, नारै सरको। कोई कवै—माताजी वै, पारटी रो सवाल है सा क्या है अर मतलब है, माताजी, म्हारी तो हजार बार पीतायेडी बात है, थारा किसा ही गुण करदयो। सगळा कूअै मे पडै है। खैर, टेम जाणिये।

फेर माताजी सगळा नै एकर-एकर याद करया जका माताजी रै आमें-सामें सूटरिया करता, अबै कदेही दुख-सुख री ही पूछण कोनी आवै।

चंनणिह आखर आ ही गयी—अै दिन नीं आवता तो माताजी, थानै मिनख री पोछाण क्या होवती। ओ भी आवणो जरूरी हो, दुनिया रो पतो तो लाग्यो। खैर, की कोनी बीगड्यो, कोई बात कोनी, परचं ऊ लों बचो हो।

म्हू फेर चाय बणान स्यायी, म्हे तीनू भेळै ही चाय पी।

इतै म विजय आयो, एक बडो परचो दिखायो जकै मे एक आन्दोलन री चेतावनी ही, पापा रो बीरै नाय मोटै आखरां मे नाम हो।

21

आन्दोलन तो सरू होणो हो, होयो। झूठी-साची किसानां री मागा त्यार करीजी, परचा छप्या, गाव आळा नै प्रदर्शन सारू त्यार की करीज्या। विधान-सभा सरू होवता ही गांवा रा किसान कई हजार सख्या मे 'जिदा बाद मुर्दाबाद' रा नारा लगाया, तकडो जलूस निकळ्यो, विधान सभा रै सामें ऊनजलूल नाटक करीज्या, जकै रो नतीजो जको निकळ्या करै है बो ही निकळ्यो, लाठीचार्ज, आसूगैस, कइया रा सिर फूट्या, कइया रा हाथ, पापा रो भाषण हुयो, साथै और नेतावा रो भी। पापा रै भी हळकी-सी -

चोट आई, पापा दिन छिपे घरे आया।

पापा आया, पण मा बानै लडी—ओ काई धघो है, चैन स्यू बैठ जाओ। शर्मा राज आज छोडे न काल। अयां बाद मे मूत्या बैर कोनी मीसरै। आज *तो आ थोडी-सी लागी है, सिर फूटज्या, आदमी मरज्या तो म्हारी कुण धणी।* लोग दो दिन रोयन रैय ज्यासी। की खातर मरो खपो हो, चलती रो नाम गाडी है, फेर तो फेर ही है।

मा जकी पैली इती भागती दौडती, जनता सारू भाजी फिरती, कदे थकती कोनी, पतो नी बीनै काई 'अलरजी' हुई कै बीनै अ बाता सुहावै ही कोनी।

पापा कयो—बस धापगी, बावळी है तू, जिंदगी बार-बार कोनी आवै, ओ शरीर तो जनसेवा सारू सौपडो है, जेल गया जनता सारू, राज करयो जनता सारू अबै विरोध करा जनता सारू। राज करण आळा स्यू राज तो कोनी छुडावा पण बानै चेतो तो करावा कै जनता सूती कोनी। जे बै माडो करैली तो आ ही जनता बानै तोड फेंकसी। हार मानलो तो हार है अर हारचा जनता री हार है, न्याय री हार है। जे बिरमानद हार मान लेसी तो और कोई नद खडचा हो जोसी। आ जोत तो जळती रैसी, कदे मद्दी तो कदे तकडी। तो फिर बिरमानद आपरो माजनो क्यू देवै, ईनै भी जीवतो रैवणो है इण शरीर रा कोई लाव जेवडा कोनी बणै, काम है तो कर्म है और काम सारू काया नै धकेलो नी मानलो, देवी, दिमाग बदळ, ऐश करी तो त्याग करणो पडसी।

मा जकी एकर अधकार मे चली गई ही, ओजू जोत मे आगी।

पतो नी कठऊ स्वामीजी आग्या। स्वामीजी आवता ही आपरा झोळा-झीडा मेलन बैठग्या—अरे भाई, आज तेरो मिलणो आराम स्यू होयो, राज मे हो जद कया कोणा-कचूणा मे लुक्यो मिलतो, कठैई सिपाही खडचा रैवता तो कठैई चौकीदार। अबै तो बा सागी खाट अर सागी रगडग।

—हा, स्वामीजी, पापा बोल्या, *बा तो कैद ही, कठै आ सकता नी, कठै जा सकता नी*, भाई वेलो स्यू भी नी मिल सकता। भीड भी ऐडी के पूछो मत। स्वामीजी, एक बात म्हू राज स्यू सीखी, राज स्यू जका लोग जरूरतमद है बारी जरूरत पूरी कोनी हुवै, जका लोग ठाडा है चाहे वै धन

स्यू ठाडा हो चाहे जन स्यू बै आपरी जरूरत पूरी करै, जद् ही तो धन आळा घणा धन आळा वण ज्यावै है, गरीब गरीब। एक आदमी म्हारै कनै आयो एक काम लेयन, सफा गलत काम। म्हू बीनै सफा नटग्यो, वण जबाव दियो—आछी बात, मत करो, म्हू तो करवा लेस्यू, म्हारै कनै ताकत है, पण थे जद् आवो जद् ध्यान राखन आइज्यो, म्हू फूला री जगा जूता री माळा पैरास्यू। म्हू जाणै हो के वो म्हानै पीसा भी देवतो अर वोट भी दिरावतो, जद् बो काम तो करावै ही, चाहे माडो होवै या आछो।

—तनै बार-बार कँवतो, स्वामीजी बोल्या, थारी इण व्यवस्था में कठैई खोट है।

—म्हारी आत्मा मानी कोनी, राज मे रैवणो तो आसान बात ही, पापा बात बताई।

—ईंगे इलाज, स्वामीजी पूछ्यो।

—आदमी आछे राज सारू इकलग चेस्टा मे लागरचो है। कदे-न-कदे इण चेस्टा रो फल तो मिलसी ही। *वया हर व्यवस्था* मे आप आपरा खोट है, आप आप रा गुण। इसी खाद ओजू तक लादी ही कोनी जकै मे कतई खोट नी हुवै।

—स्यात् लादै भी नी, स्वामीजी जवाब दियो जका घणा समझदार हा। वा कयो—म्हू रूस गयो, चीन गयो, जापान गयो, अमेरिका भी गयो पण सच्चो सुख कठैई कोनी, कठैई की राडो रोवणो कठैही वी।

पण स्वामीजी अवार आया ही हा, बाता ही बाता म की टेम निकळग्यो, वै फेर नहाया, धोया, चाय पी अर घणँ जीसोरै स्यू बाता लागग्या। बारी बाता म आज मिचोक घालण आळो कोई कोनी हो।

म्हू जद् बारै कनै गई तो स्वामीजी आपरै कॉलेज री बात बतावै हा—बिरमानद, म्हू तो कॉलिज खोलन पछतायो।

—क्यू, पापा हुण्या।

—कॉलेज कोनी रया, बिरमानद, आ तो एक कास होगी।

—कॉलेज अर कास।

—हा, टीगरा रै पढणै तो है कोनी, रोज हड़ताल, कदे प्रीसीपल रै खिलाफ, कदे की प्रोफेसर रै खिलाफ जद् गुरवा रै खिलाफ चेला हो सकै है,

बठै शिक्षा कठै, गुरु नैं तो गोविन्द स्यू ऊंचो मान्यो है ।

—पुराणी मानता बदळरी है, स्वामीजी ।

—आ तू सफा गलत बात क्यी ।

—बात बताऊ, स्वामीजी, आपरै अठै नहरा आगी, जमीनां मोकळी । धन आळा छोरा कॉलिज मे आवै । गरीब तो मसां स्कूल तक जा सकै है, फेर अमीरा रा छोरा स्कूला मे पूचै, बानैं पढणो-लिखणो है कोनी, कॉलिज मे करै काई ? तुरळ मचावैला ।

—आ बात मानी, स्वामीजी क्यो, बस बात आ है । जाड है बठै चीणो कोनी, चीणो है बठै जाड कोनी । म्हू कई बार होस्टल काली निकळ ज्याऊ, छोरा होस्टल रै कमरा मे जुआ खेलै, दारू पीवै । स्कूल आळा छोरा तो इडै ऊ मान ज्यावै, अै कयां स्यू मानै, ओ तो राडी रोवणो होग्यो । न अै राज ऊ डरै न राम ऊ । करा तो काई करा ।

—म्हू आ ही कई आपनै, अै लोग अठै ऐश करण नैं आवै । आ कनै मोकळी जमीन है, घरे सीरी कमावै, आरा माईत आथणनैं बैठन दारू री बोतल खोनैं, फेर अै भला कठैस्यू बणै ।

ईंरो इलाज, स्वामीजी सोच मे पडरया ।

—एक ही रास्तो स्वामीजी, देस मे धन बराबर बाटणो पडसी, गरीब अमीर री खाई पाटणी पडसी, ओही इलाज है ।

—तो सरकार करै क्यू कोनी ?

—सरकार तो अमीरा रै हाथ मे चली ही गई, स्वामीजी और राडी रोवणो कयोरो है । गरीब मे चेतना कोनी । जद् कोई बात उठै तो झूठा साचा आन्दोलन चहीज ज्या, सरकार नैं दबाले । सरकार नैं वोट अर नोट सेवू चाहिजै । गरीब रो वोट भी अमीर रै हाथ मे है । अमीर प्रेस अर प्रचार स्यू हर मोड दबेणो जाणै है । गरीब अमीर री गुलामी करो अर पेट भरो ।

स्वामीजी घणा उदास होग्या । वै तो तुरत इलाज चावै हा ।

स्वामीजी बोल्या—म्हू तो इण साम्य आयो हो कै कोई बढिया प्रोग्राम बना जको बी मायाजाम नैं कन्ट्रोल मे कर लेवै । कोई कररो आदमी जको इडै स्यू उडगै नैं सुधार लेवै ।

—स्वामीजी, इडै रो टैम भी गयो, पापा क्यो, आपां न स्याणा रया

न बावळा। बावळा डडै स्यू थमज्यावै, स्याणा अक्कल स्यू। अदविचला रै न डडो काम देवै अर न अक्कल। फेर भी आप आया हो तो आपनै आदमी देस्या जको डडै आळै न डडै स्यू अर अक्कल आळै न अक्कल स्यू साम लेवै।

—हा, हा, बस, बस, म्हारो मतलब ओ ही हो।

—निरास होयर बैठणो ही नी चाहिजै आदमी नै, पापा बोल्या। समय सारू तो गाडी चलावणी ही पडसी।

—हा, स्वामीजी बोल्या, तू तो बात एहडी करी कै न तो नौ मण तेल होवै न राधा नाचै। म्हू तो ऐन निरास होग्यो। कद् धन रो बटवारो होवै कद् कॉलेज चालै।

—नी, पापा कयो, आपा मौजूदा हालात नै भी बस मे कर स्या, इसी काई बात है जकी होवै, कोनी।

स्वामी जी आया जद् निरास हा पण जावण लाग्या जद् आसावादी होयर गया।

22

पापा रै अबार काम कोनी रहयो हो, कदे-कदे की मीटींग मे चल्या जाया करता। जद् कदे म्हू पापा नै देखती, वै भोत ही गभीर मुद्रा मे रैवता, काई सोचता, काई पडता, काई मडता, पतो ही कोनी लागतो। मा भी बैठी कैवती—तेरा पापा आजकलै उदास भोत रवै, भोत कम हसै, भोत कम आपणै मे बैठे, हरदम फिक्र ही फिकर। भाडा होवण लागग्या।

म्हू मा नै धीरज बधावती—मा, पापा कनै काम कोनी, करै काई। कोई आवै जद् घणी बात करै। देख, स्वामी जी आया दो दिन तो भोत खुस रया।

—जद् तो म्हू कऊ आयै गयै न रे मे आया करो, आरो जी लाग ज्यावै, मा बोली।

—कोनै वेल है, मां, अबै तो पापा की कोनी, एम० एस० ए० भी कोनी रया, लड़पा ही कोनी। बिना काम जी लागै क्या, थारै म्हारै क बात ही काई करै।

मा नै भोत सोच रैवतो, मा जाणती के घर मे पापा ही एक दियो है जको रो उजास बारै तो है ही, पण घर मे ही है। इण घर रै दियै नै पूगो तेल मिलणो चाहिजै, पूरी बातो रैवणी चाहिजै। घर री इज्जत, आवरू सगळी आ ही है। धीमै-धीमै घर रो रगरूप फीको पड़न लागग्यो। घर रो साथो चौड़ो गुवाड़ हो, बीमै दिनगै पैली झाड़ू निकळ ज्यावती, बाँ गौर बणग्यो। दरखतां रा पत्ता झड़ेड़ा है तो झड़ेड़ा ही पड़्या रैवता, गोबर पड्यो पड्यो सूख ज्यावतो, कुण उठावै। पैली तो पतो नी किता आसै पासै रैवता, कुण काई करतो, पतो ही कोनी लागतो, अबार मा काई कर लेवै, राधा ही चली गई। एक दिन छप्पर री एक टूटी खराब हांगी, खराब होगी सो होगी, कुण ठीक करै, कुण ठीक करावै। ड्रजो दावन कोनै बद करी। छप्पर रै आसै पासै री बेला सगळी बळगी। पापा चिन्तन म रैवता अर मा चिन्ता मे।

एक दिन पापा छप्पर रै आगै माची पर आडा होरया हा एकला ही। वै सामै गुवाड़ कानी इकटक देखण लागरया हा। म्हू आई तो बोल्या—'बेटा स्वराज, कदे तो अठै बुहारी लगा दिया करो, कोजो लागै है, आयो गयो काई समझैलो।

म्हू फटाक स्यू बुहारी ल्यायी अर काडण लागगी, पापा री निजर मेरे कानी ही। म्हू काम कर दियो तो पापा एक लाबी सास ली, बी साबी साम मे सगळी बाता मागै ही आगी ही।

आदमी कितो ही ऊचो विचारक हो, डूगो सत हो, पूचेड़ो महात्मा हो, ईं दुनिया री ताती ठंडी लाग्या बिना कोनी रवै।

पापा रो सूरज अबार ढाळ मे हो तो म्हारलो को ऊपरनै आयो। आनन्द जी रजिस्ट्रार होग्या अर म्हानै एक सरकारी जीप मिलगी। म्हारो मकान त्यार होग्यो। फेर म्हारो पापा नै की सारो होग्यो। पण पापा री उदासी मे कीं फरक कोनी आयो।

एक दिन म्हू म्हारै घरे बैठी ही, मा आई—स्वराज, तेरै पापा रो पेट

दूखै है, कवरसाहब कठै है ?

आनन्द जी भाजन पापा कनै गया, लारै म्हू गई, विजय पापा रै पेट पर हाथ फेरै हो, पापा बुरी तरा करण लागरया हा।

आनन्द जी गाडी लेयन डाक्टर नै बुला ल्याया। डाक्टर एक इन्जेक्सन लगा दियो, की गोल्या दी, फेर एक गाडी आयन पापा नै अस्पताल लेगी। मिनटा मे घोषणा होगी के पापा रो आप्रेसन होसी। पापा रो केस भोत गभीर बतायो।

म्हे लोग ओपरेसन रूम रै आगै बैठया हा। चीफ मिनिस्टर शर्मा बठै आग्यो हो, और मनीस्टर भी बठै हा, रेखा भी बठै ही, कई एम० एल० ए० इत्तै मे रामप्रसाद जी भी आग्या जका पापा रा ऐन विरोधी हा।

मा रो काळजो कापण लागग्यो। बीरै आंसू तो आवै ही हा, धूजणी छूटगी। रामप्रसाद जी मा नै ई रूप मे देखी तो बै हाथ पकड़न आपरै साथै घरे लेग्या। रामप्रसाद जी की अळगा होग्या तो मा बोली— बेटा, सगळा दुसमण भेळा होग्या, अबै तेरै पापा री खैर कोनी।

रामप्रसाद जी रै साथै ही म्हारै खातर चाय आगी। मा चाय पीवण लागगी। रामप्रसाद जी मा नै बोल्या—बिरमानन्द जी री जिन्दगी भोत कीमती है। अै है तो म्हे हा, अै नी तो म्हे भी नी। शर्मा आज आयन क्यू खडयो होग्यो। बिरमानन्द जी रै विरोध नै शर्मा ही डाट सकै है, बिरमानन्द जी रो विरोध खतम तो शर्मा खतम। बिरमानन्द है तो रामप्रसाद है। म्हानै बिरमानन्द जी सारू ढाळ रै रूप मे म्हानै खडया राख्या है, बिरमानन्द जी है तो म्हे मनीस्टर हा। बिरमानन्द जी नै नेता रै रूप मे अर मिनख रै रूप मे जीवतो राखणो भोत जरूरी है।

इत्तै मे फोन आयो—आपरेसन सफल, बिरमानन्द जी री जिन्दगी खतरै स्यू बारै। माता जी नै भेज द्यो।

रामप्रसाद जी म्हानै कार स्यू अस्पताल पूचा दी। बारी कोठी ऐन नैड ही, फेर भी कार भेजी।

म्हू मन मे करी—बडी अजीब राजनीति है, अठै कुण आपरो कुण परायो, पतो ही कोनी लागै। पण आपरेसन करण आळा डाक्टर जी हरिसिंह पापा रा ऐन प्यारा हा, बै माता जी स्यू मिलन बोल्या—केस

मौत खतरनाक ही, अलबत्त, आपरेसन म्हारै हाथ में हो, अबार इलाज म्हारै हाथ में, चिन्ता मत करीज्यो। राजनीति में दुसमण, दोस्त रो पतो कोनी लागै। ईंमें जको ऐन नेड़ै दीखै बो दुसमण होवै, अर जको दुसमण दीखै बो दोस्त होवै। सगसाद्रपु, जद दूजै नम्बर रो ऐन नेड़ै होवै बो सोचै—ओ मरज्यावै तो म्हूं एक नम्बर रो नेता बण ज्याऊं, किसी गदी है आ राजनीति, फेर बै हा···हा···हा···करता खुला हंस्या, म्हानै आपरेसन सफल होवण री घणी खुसी ही।

पापा ठीक होग्या घर आग्या, पापा री पट्टी भी खुलगी, डाक्टर हरिसिंह जी रोज संभालता, पण पापा ऐन सूकीजग्या, जाणै काळो खून काढ लियो, मास नोच लियो, हाडका छाग सी। कठै गयो पापा रो बो सरीर जको चालता जद धरती हालती।

एक दिन मुख्य मन्त्री शर्मा पापा नैं संभाळन आया। शर्मा सामै कुरसी पर बैठग्या, पापा पलंग पर लेटा हा, म्हूं भी पूगगी। म्हानै 'नमस्ते' करी अर बारै पगां लागी।

—कहो होगो स्वराज तो, बै बोल्या।

—कहा तो थे होग्या, म्हूं कयो, कदे आओ ही कोनी, संभाळो ही कोनी। आ थारी राजनीति जकी आपं नैं भूल ज्यावै। लड़ाई तो थारी अर पापा री है, म्हे तो सगळा रै एकसा हा, थे ही तो म्हारो कन्यादान करयो हो।

म्हारी आख्यां में पाणी आग्यो। जद शर्मा रो बी काळजो पीगळ्यो, बै गळगळा होयन बोल्या—बेटा, राजनीति में ओ ही तो खोट है, ईंमें राज है, ऐश है, पावर है, पण मिनखपणै अठै नेड़ै-तेड़ै कोनी। म्हूं तो तेरै पापा नैं कऊं हूं—आओ, सागै होयन काम करां।

—आ बात थे जाणो अर पापा जाणै, म्हानै काई बेरो, म्हूं कयो।

फेर पापा अर शर्मा घणी देर बात करता रह्या, पतो नीं काई काई, पण म्हानै ओ बेरो हो कै पापा अबै शर्मा रै सागै कोनी मिल सकै। बै आ ही कैवता रया हा—पूछन कांई घाटा? पण अबार पापा रो कळेजो इत्तो बदग्यो है कै बै राजनीति री बात करै तो बावळा पड़ै।

और भी मोटा लोग आवता, बारै दुख सुख री पूछता, पापा भी कीं-कीं

धीरण लागग्या ।

एक दिन चाणचकं स्वामी जी री लाश म्हारै घरे आगी। 'है औ काई ?' सगळा अचमो करयो। पतो लाग्यो रे स्वामी जी पापा स्यू मिलणै सारू आरया हा, रस्तै मे बानै एहडो की होयो होसी के वै सडक पर मरया मिल्या, साथै जको आदमी हो, बो भी बी वक्त बारै सारू की लेवण गयो ही। वो आयो जद लोग बार मर फिरया हा। वण धरे फोन करयो पण फोन भी कुण उठायो कोनी। फेर वो ही एक गाडी किराये करन धरे लाश ल्यायो। पापा स्वामी जी री लाश देखन एक ही बात कयी— कित्तो वडा सन्त हा स्वामी जी, अण जिन्दगी भर जनता री सेवा करी, मरती बखत तक की स्यू पानी कोनी माग्यो। सन्त री जिन्दगी बस इसी ही हुवै है।'

स्वामी जी लाश सस्था रा आदमी लेग्या, बा रो बठै ही गाजै बाजै स्यू दाह सस्कार होयो। पापा रो घणो जी करयो, पण डाक्टर बानै जावण कोनी दिया। पापा कयो— कित्तो निरभागी हू के म्हू बा री आखरी बिदाई मे भी मीर कोनी कर सक्यो।'

23

एक दिन मा अर मैं बैठी बैठी विचार करण लाग्या के कनै कित्ता रिपिया होवणा चाहिजै। म्हू बारै कागजा मे सम्हाळन लागी तो कठैइ कोई बैंक री कॉपी कोनी मिली। फेर म्हे म्हारै अदाजै स्यू दोनू बैंका मे घूम्या, स्यात् कॉपी नी आवै अर खातो हुवै, पण कठैइ खातो कोनी मिल्यो। म्हू कयो— मा, पापा कई जगा लाखा रो घोटाळो करयो, वै लाख कठै गया ?

—मनै तो बेरो ही कोनी, कठै आयो, कीनै गयो, कदा गयो, हा, रिपिया आवता जरूर अर जावता, बै सगळा म्हारै हाथ स्यू निकळया, पण बच्यो कोनी कदेइ, ज्यू आयो ज्यू गयो, मा बतायो। —

फेर एक दिन एक आदमी आयो। वो चोखो आदमी लागै हो। बण

माता जी नै कयो—माता जी, थाई बताऊ, आपरै नाम पच्चीस हजार रिपिया है, ब्याज तो म्है लगाऊ कोनी, पण एक चुनाव में म्है दिया हा, म्हारै अबार टोटो आरयो है, पार पड़ै तो द्यो, बिरमानन्द जी नै कैवता तो शरम आवै।

फेर एक दिन माता जी रो ही सैंदो आदमी आयो—माता जी घणा दिन होग्या, ई कोठी म ईंटया, पत्थर, चूनो आपरै अठै स्यू ही आयेड़ो है, आपनैं तो ठाह ही है, अबै ढील पार कोनी पड़ै, म्हारै भी टाबरा नै रोटी चाहिजै।

माता जी कद ताईं अै बाता सुणती एक दिन कोठी रै लारै री जमीन बेच दी। मा पापा रै सामै कदे ही टोटै रो रोवणो कोनी रोवती। बा जाणै ही कै बानै कदेइ टोटै री बात नीं कैवणी, बै आगै ही माडा होरया है।

पापा चालण हालण सूं लाग्या, विजय भी अबै स्याणो होग्यो, बै अबार आपरी जमीन सभाळली जकी बीगै नाम स्यू ही। गाडी घर री गुडण लागगी।

एक दिन चाणचकै शर्मा मुख्य मन्त्री रै पद स्यू हटग्या, रामप्रसाद जी भी साथै गया। रेखा भी कोनी रयी। सगळा सड़क पर आग्या।

अबै तो सगळा ही भेळा होयन आपरी सुख दुख री कर लेवता।

पापा कैवण लागग्या हा—बेटा, अबै म्हारो जमानो गयो, म्है जो कुछ देवणो चावा हा, दे दियो, म्है चुक ग्या। अबै तो नौजवाना नै देश नै सभाळनो चाहिजै। अबै म्है नेतागिरी री जिद्द करा तो म्हारी हटधरमी है, अस्सी-अस्सी साल रा नेता, काई है म्हारै मे, म्है जे देस री नेतागिरी करा तो देस रै नौजुवाना रै आडै आवा हा, देस रो नुकसान करा हा।’

24

म्हे लोगा आपरै खेत मे एक चोखो-सो मकान बणा लियो है। विजय बठै ही रैया करतो, खेती करतो, करावतो। पापा अर म्हू भी बठै चल्या गया।

दिन छिपग्यो हो, खाणो खा लियो हो। बारै माच्या ढाळ'र बैठग्या। फागण रो मीनो हो। च्यारू कूटा हरियाळी बापरी ही। सोवणी सरस्यू पर पीळा फूल भोत ओपता हा, बणका रो बाला हळकै वापरै मे झूमै ही, चीणा आपरै लाळ फूला मे घणो जी सोरो करै हा। सारै नहर रो खाळियो मदरो-मदरो चालतो मना मे मिठास भरै हो। पापा च्यारू कूटा देखन बोल्या—लोग ओळमो देवै, राज री आलोचना करै, पण राज काई कोनी करयो। देख, च्यारुकानी टैक्टर चालै है, खेती रो रग देखन, धरती सोनो निपजण लागरी है। आ बाही जगा है, म्हू अठै राज री नौकरी मे हो जद् रयो हो, पीवण नै पाणी कोनी मिलतो। इत्तै अरसै मे काई रग खिल्यो है। म्हारी पीढी की करयो तो है ही, इण हू पैली हो काई, गाव रो आदमी पुलिस ऊ डरया करतो। सिपाही सरडा चालता नै खल्ला मारता। कठैइ विस्वास रो काम ही कोनी हो।

पापा नै ओ रग देखन घणी खुसी होरी ही। म्हू इण खुसी नै तोडणै री चेस्टा तो कोनी करणो चावै ही, पण एक बात मन मे आई, म्हू कै बैठी—'पापा, आया लारला मीनै मे आपणै शहर मे फिरै हा।

—हा, पापा कयो।

—एक विदेश रो राष्ट्रपति आपणै अठै आयो हो, अर आपानै आपणी गाडी रो मारग बदळनो पडयो।

—हा ?

—फेर आपा एक गळी स्यू नीकळया।

—हा ?

—कित्तो बोजो हाल हो बी गळी रो।

—हा, ठीक है।

—च्यारुकानी बदबू ही, बदबू घर काई हा, नरक रा टुकडा हा।

—हा'' हा' हा।

—आ सारू आजादी आई ता आई बराबर है। सगळै शहरा री गळिया रो ओ हाल है। आपा बम्बई गया हा, कलकत्ते गया हा, गरीबा सारू रैवणै नैं झूपडी ही कोनी, बै फुटपाथ पर सोवै। थे हो गावा री ही बाता करो, गावा मे रोटी तो लूकी-सूकी मिलै है, सोवण, बैठण, ऊठण नैं, झूपडया तो है ही। और नी तो पवन ता शुद्ध भखै है, पण वा लोगा सारू की तो कोनी।

—हा, हा तू केवती जा।

—पापा, ठीक है, रजवाडा, कोनी रया, जागीरा गई, जका सपनै म ही सोच नी सकै बानै राज मिलग्यो, महल मिलग्या, पण करोड़ू मिनखा नै तो की कोनी मिल्यो।

—ठीक है, ठीक है।

—और कांई कू, म्हू तो इत्ती बात जाणै ही, कैय दी।

—बेटा, जनतन्त्र व्यवस्था माडी कोनी, पण ईनैं जमावणो जरूरी है, लोग पूरा भण जीसी, समझ पकड जीसी, स्याणा हो जीसी, अै लोग जका फुटपाथा पर पडया है आ मे चेतना आ ज्यासी तो साची मान ले ओ जको फरक लखावै है गरीब अमीर ओ भी मिटज्यासी। पण टेम लागै है, टेम ही सगळी बात करावै है।

आसै पासै लोग बैठया बाता सुणै हा। वा लोगां ही रोही मे क्षा रुणक कर राखी ही। कोई खेत मे पाणी लगान आयो हो। एक ट्रैक्टर रो ड्राइवर हो। एक पडौसी हो जकै नैं अबार ही एक मुरब्बो जमीन मिली है। एक बी पडौसी रो सीरी हो।

बै कई देर ताई बाता रो रस लियो, फेर चिलम पीवण सारू थोडा आगीनैं सरकग्या, बै पापा रै सामै चिलम पीवणै स्यू सकै हा।

अधारो वापरग्यो। म्हारै खेत मे बिजळी आगी ही। म्हारै ट्यूबवैल लगा राख्यो हो। नहर रै पाणी री कमी इण ट्यूबवैल स्यू पूरो करया करता।

च्यारूकानी बिजली रा लोटिया चसग्या। पापा मकान री छत पर चल्या गया, बानैं थोडो घूमणै रो शोक हा।

अबार सर्दी जावती ही, म्हे लोग कोठै मे बडग्या। पापा भी आग्या।

पडौस रै एक मोचार नै बाता घणी आवै ही। विजय नै ओरो बडो कोड
विजय अर बो छोरो दूजै कोठै मे जायन बाता सरू कर दी। छोरै रै आवण आवती ही—हुकारो दयो सा।

पापा बोल्या—ओ ऊठै आज्यावो, म्हू भी सुण स्यू।

भोड़ै ताई बाता चाली। पापा सोवण लागग्या। बानै नीद आवण लागगी। वै लोग चल्या गया, म्हू भी सोगी।

25

दिनगै पापा कुरळो करण लागरया हा। पूरब स्यू सूरज निकळै हो गोळ गोळ, लाल-लाल। बीरी किरणा आखी धरती री हरियाळी पर पसररी ही। ओस री बूदा मोती ज्यू चिमकै ही।

भोत ही सुहावणो मौसम हो। पापा बोल्या—कित्तो सोवणो सूरज उठयो है, बटा, सोनै रो सूरज।

—हा, पापा, आपणी धरती रो सूरज, देस रो सूरज।

—आजादी रो सूरज, प्रगति रो सूरज, विकास रो सूरज। आपणै देस रा आवण आळा दिन भोत उजळा है।

□□

—हा'' हा'' हा।

—आ सारू आजादी आई ना आई बराबर है। सगळै शहरा री गळिया रो ओ हाल है। आपा बम्बई गया हा, कलकत्तै गया हा, गरीबा सारू रैवणै नै झूपड़ी ही कोनी, वै फुटपाथ पर सोवै। थे हो गावा री ही बाता करो, गावा मे रोटी तो लूखी-सूकी मिलै है, सोवण, बैठण, ऊठण नै, झूपड्या तो है ही। और नी तो पवन तो शुद्ध भखै है, पण वा लोगा सारू की तो कोनी।

—हा, हा, तू कैंवती जा।

—पापा, ठीक है, रजवाड़ा, कोनी रया, जागीरा गई, जका सपनै मे ही सोच नी सकै बानै राज मिलग्यो, महल मिलग्या, पण करोड़ू मिनखा नै तो की कोनी मिल्यो।

—ठीक है, ठीक है।

—और काई मू, म्हू तो इत्ती बात जाणै ही, थंम दो।

—बेटा, जनतन्त्र व्यवस्था माड़ी कोनी, पण ईनै जमावणो जरूरी है, लोग पूरा भण जौसी, समझ पकड़ जोसी, स्याणा हो जोसी, अै लोग जका फुटपाथा पर पड़्या है आ मे चेतना आ ज्यासी तो साची मान ले ओ जको फरक लखावै है गरीब अमीर ओ भी मिटज्यासी। पण टेम लागै है, टेम ही मगटी बात करावै है।

आगै पाछै लोग बैठ्या बाता सुणै हा। वा लोगा ही रोही मे आ रणक कर राखी ही। कोई खेत मे पाणी सगान भायो हो। एक ट्रैक्टर रो ड्राइवर हो। एक पड़ौसी हो जकै नै अबार ही एक मुरब्बो जमीन मिली है। एक बी पड़ौसी रो सीरी हो।

बै कई देर लाई बाता रो रस लियो, फेर चिलम पीवण सारू बाड़ा आगीनै सरकग्या, वै पापा रै सामै चिलम पीवणै स्यू सकै हा।

अधारो वापरग्यो। म्हारै खेत मे बिजली आगी ही। म्हारै ट्यूबवेल लगा राख्या हा। नहर रै पाणी री कमी इण ट्यूबवेल स्यू पूरो करघा करता।

च्यारूकानी बिजली रा लोटिया चमग्या। पापा मकान री छत पर चल्या ग्या, बानै चाड़ा घूमणै रो कोड हो।

अबार सर्दी जावती ही, म्हे सोग काठै मे बड़ग्या। पापा भी आग्या।

पड़ौस रै एक मोचार नै बाता घणी आवै ही। विजय नै ओरो बडो कोड

विजय अर बो छोरो दूजै कोठै मे जायन बाता सरू कर दी। छोरै रै आवण आवती ही—हुकारो द्यो-सा।

पापा बोल्या—औ ऊठै आज्यावो, म्हू भी सुण स्यू।

भोडै ताई बाता चाली। पापा सोवण लागग्या। बानै नींद आवण लागगी। वै लोग चल्या गया, म्हू भी सोगी।

25

दिनगै पापा कुरळो करण लागरया हा। पूरब स्यू सूरज निकळै हो गोळ गोळ, लाल-लाल। बीरी किरणा आखी धरती री हरियाळी पर पसररी ही। ओस री बूदा मोती ज्यू चिमकै ही।

भोत ही सुहावणो मौसम हो। पापा बोल्या—कित्तो सोवणो सूरज उठ्यो है, बेटा, सोनै रो सूरज।

—हा, पापा, आपणी धरती रो सूरज, देस रो सूरज।

—आजादी रो सूरज, प्रगति रो सूरज, विकास रो सूरज। आपणै देस रा आवण आळा दिन भोत उजळा है।

□□